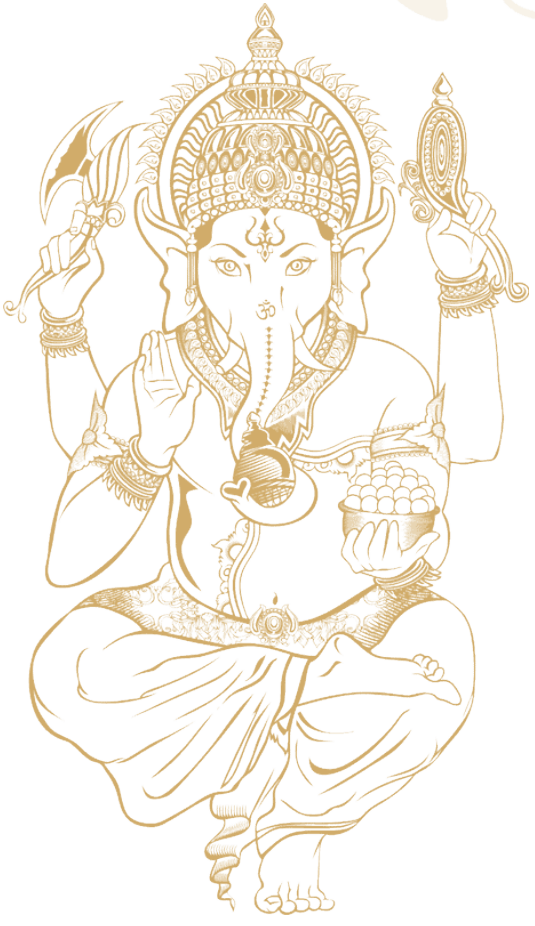

Dushyant khanna

09 Jul 1985

08:45 AM

Bhatinda

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 121095701

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**09/07/1985**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**08:45:00 घंटे**
इष्ट	07:53:16 घटी
स्थान	**Bhatinda**
राज्य	Punjab
देश	India

अक्षांश	30:10:00 उत्तर
रेखांश	74:58:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:30:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	08:14:52 घंटे
वेलान्तर	-00:05:08 घंटे
साम्पातिक काल	03:22:55 घंटे
सूर्योदय	05:35:41 घंटे
सूर्यास्त	19:34:40 घंटे
दिनमान	13:58:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्य के अंश	23:12:46 मिथुन
लग्न के अंश	02:25:55 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**मीन - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**उ०भाद्रपद - 4**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	शोभन
करण	बव
गण	मनुष्य
योनि	गौ
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	सिंह
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	ञ--
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कर्क

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	आषाढ़	18
पंजाबी	संवत : 2042	आषाढ़	26
बंगाली	सन् : 1392	आषाढ़	24
तमिल	संवत : 2042	आनी	25
केरल	कोल्लम : 1160	मिथुनम	25
नेपाली	संवत : 2042	आषाढ़	25
चैत्रादि	संवत : 2042	श्रावण	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2042	आषाढ़	कृष्ण 7

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 7
तिथि समाप्ति काल _____: 17:10:37
जन्म तिथि _____: 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: उ०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 15:24:30 घंटे
जन्म योग _____: उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग ____: शोभन
योग समाप्ति काल _____: 08:57:24 घंटे
जन्म योग _____: शोभन
सूर्योदय कालीन करण ____: बव
करण समाप्ति काल _____: 17:10:37 घंटे
जन्म करण _____: बव
भयात _____: 49:38:41
भभोग _____: 66:17:25
भोग्य दशा काल _____: शनि 4 वर्ष 8 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

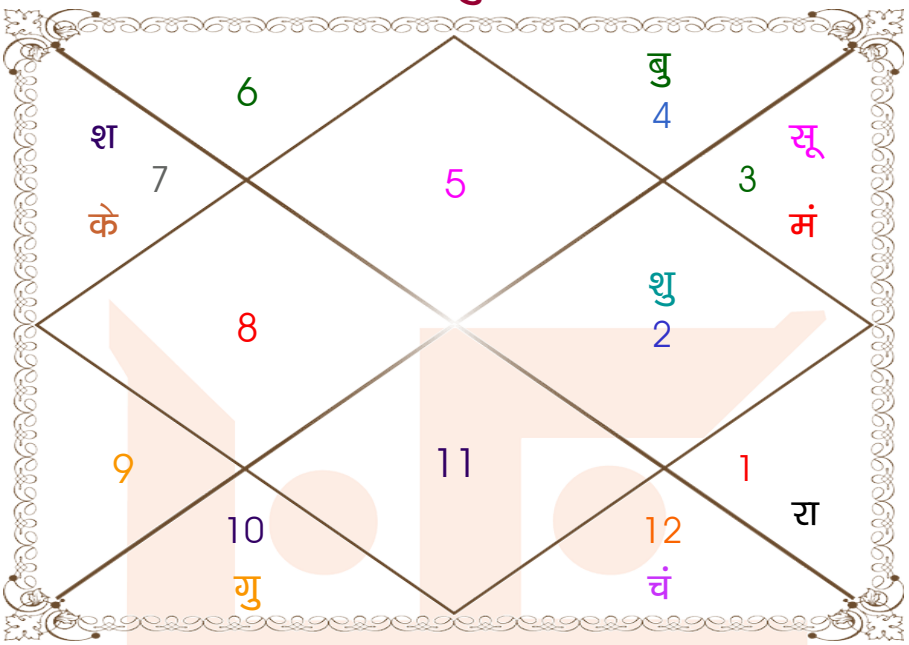

चन्द्र कुंडली

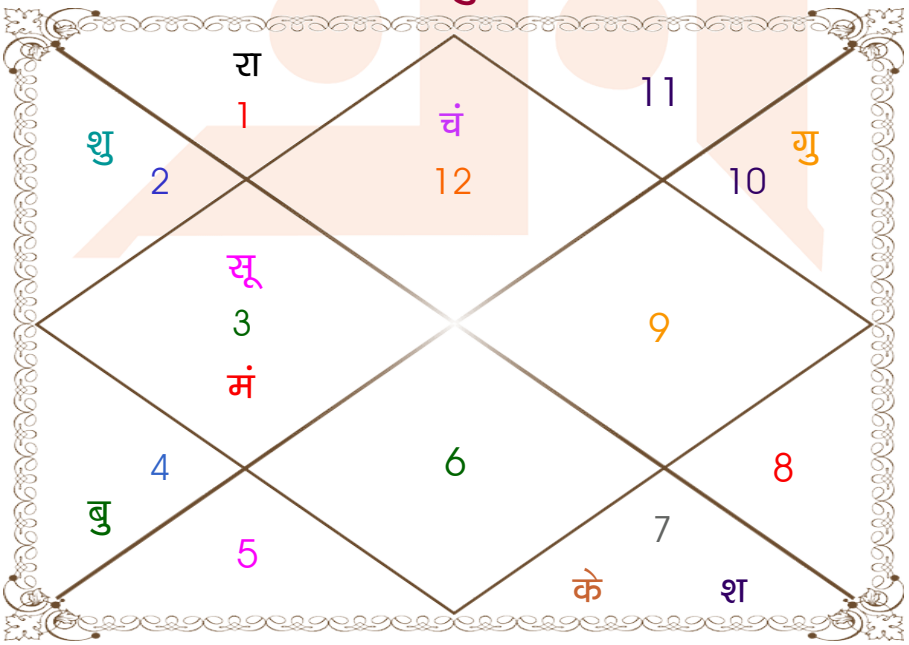

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

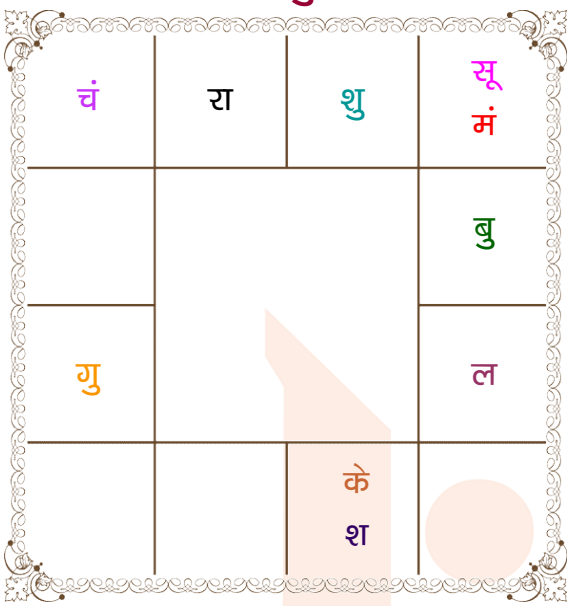

लग्न कुंडली

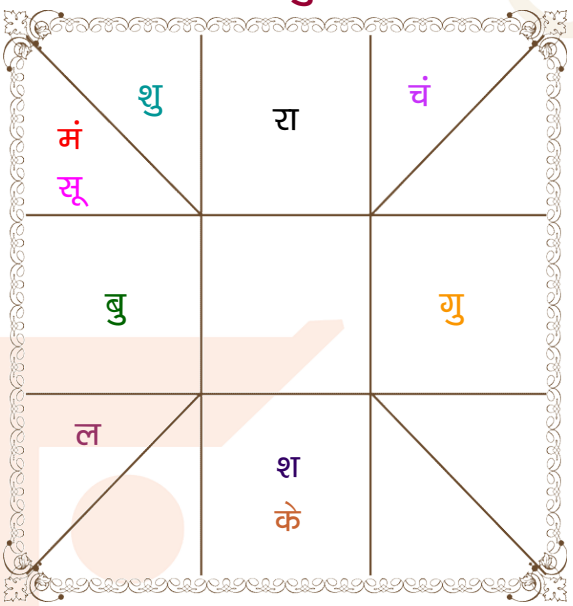

विंशोत्तरी
शनि 4वर्ष 8मा 25दि

शनि

09/07/1985

04/04/2091

शनि	04/04/1990
बुध	04/04/2007
केतु	04/04/2014
शुक्र	04/04/2034
सूर्य	04/04/2040
चन्द्र	04/04/2050
मंगल	04/04/2057
राहु	04/04/2075
गुरु	04/04/2091

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 2मा 29दि

उल्का

07/10/2022

07/10/2028

उल्का	07/10/2023
सिद्धा	07/12/2024
संकटा	08/04/2026
मंगला	07/06/2026
पिंगला	07/10/2026
धान्या	08/04/2027
भ्रामरी	07/12/2027
भद्रिका	07/10/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	02:25:55	307:34:02	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	---
सूर्य			मिथु	23:12:46	00:57:12	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	सम राशि
चंद्र			मीन	13:20:32	12:00:30	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	सम राशि
मंगल		अ	मिथु	25:56:00	00:39:09	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	केतु	शत्रु राशि
बुध			कर्क	19:10:53	01:11:02	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	शत्रु राशि
गुरु	व		मक	21:31:35	00:05:56	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	नीच राशि
शुक्र			वृष	09:21:42	01:04:49	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	स्वराशि
शनि	व		तुला	28:02:23	00:01:36	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	उच्च राशि
राहु	व		मेष	22:32:47	00:01:02	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	22:32:47	00:01:02	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	सम राशि
हर्ष	व		वृश्चि	21:06:03	00:01:57	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
नेप	व		धनु	08:10:50	00:01:33	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
प्लूटो	व		तुला	08:16:32	00:00:07	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	---
दशम भाव			मेष	29:28:12	--	कृतिका	--	3	मंगल	सूर्य	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:06

लग्न-चलित

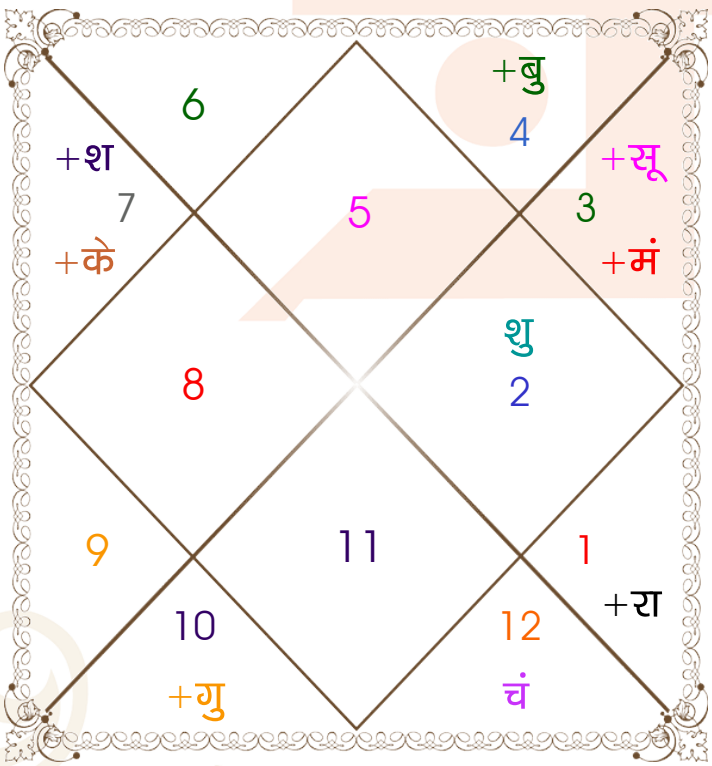

चन्द्र कुंडली

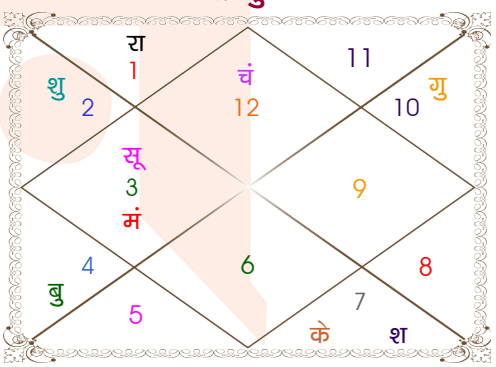

नवमांश कुंडली

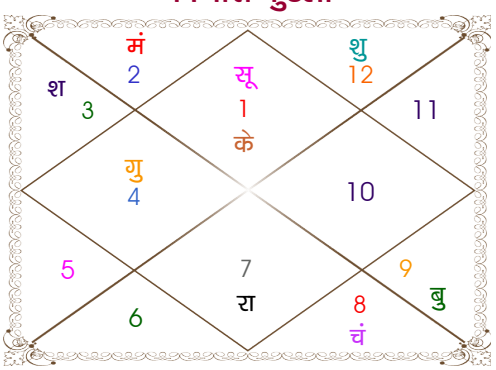

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	16:56:18	सिंह	02:25:55
2	सिंह	16:56:18	कन्या	01:26:41
3	कन्या	15:57:04	तुला	00:27:27
4	तुला	14:57:49	तुला	29:28:12
5	वृश्चिक	14:57:49	धनु	00:27:27
6	धनु	15:57:04	मकर	01:26:41
7	मकर	16:56:18	कुम्भ	02:25:55
8	कुम्भ	16:56:18	मीन	01:26:41
9	मीन	15:57:04	मेष	00:27:27
10	मेष	14:57:49	मेष	29:28:12
11	वृष	14:57:49	मिथुन	00:27:27
12	मिथुन	15:57:04	कर्क	01:26:41

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	02:25:55
2	सिंह	27:42:04
3	कन्या	27:04:31
4	तुला	29:28:12
5	धनु	02:17:20
6	मकर	03:29:39
7	कुम्भ	02:25:55
8	कुम्भ	27:42:04
9	मीन	27:04:31
10	मेष	29:28:12
11	मिथुन	02:17:20
12	कर्क	03:29:39

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

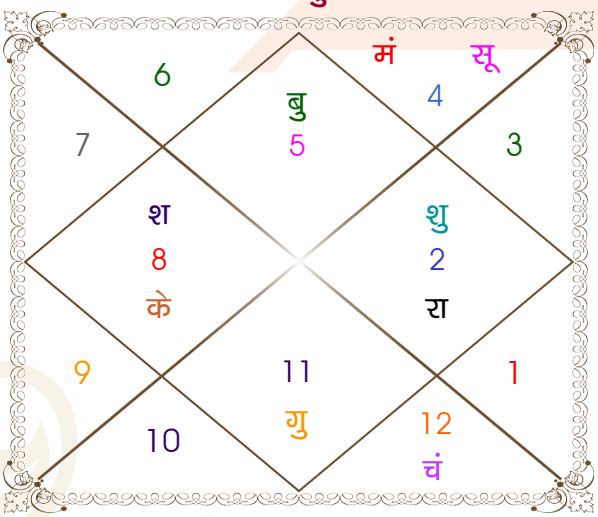

भाव कुंडली

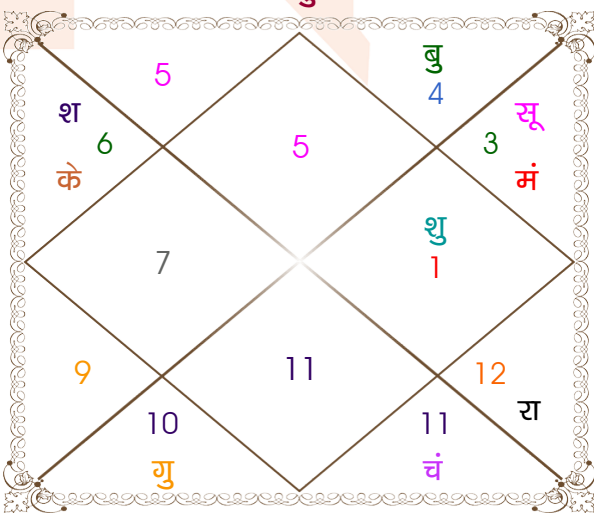

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			-------- अवस्था --------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	वृद्ध	निपीदित	नेत्रपाणि	7.12	59 %
चंद्र	ज्ञाति	मातृ	युवा	निपीदित	नृत्यलिप्सा	7.82	33 %
मंगल	अमात्य	भ्रातृ	मृत	विकल	उपवेशन	0.00	35 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार	खल	उपवेशन	1.38	92 %
गुरु	मातृ	धन	कुमार	भीत	प्रकाश	0.77	46 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	वृद्ध	स्वस्थ	आगम	9.18	47 %
शनि	आत्मा	आयु	मृत	दीप्त	उपवेशन	14.33	24 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	खल	आगमन	0.00	47 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	शक्त	उपवेशन	0.00	47 %
कुल						40.60	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली

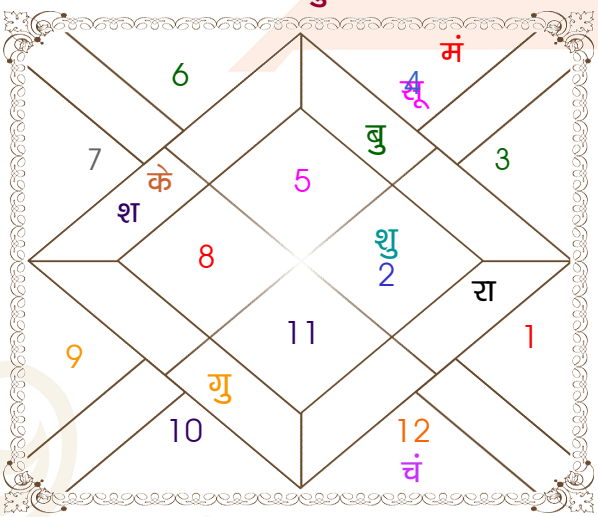

लग्न-चलित

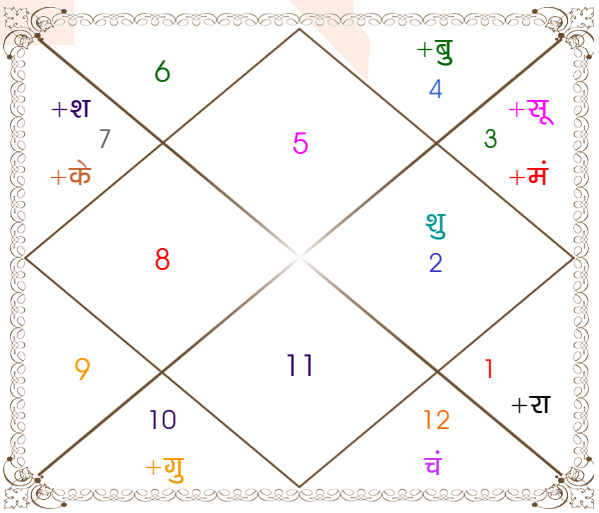

सुदर्शन चक्र

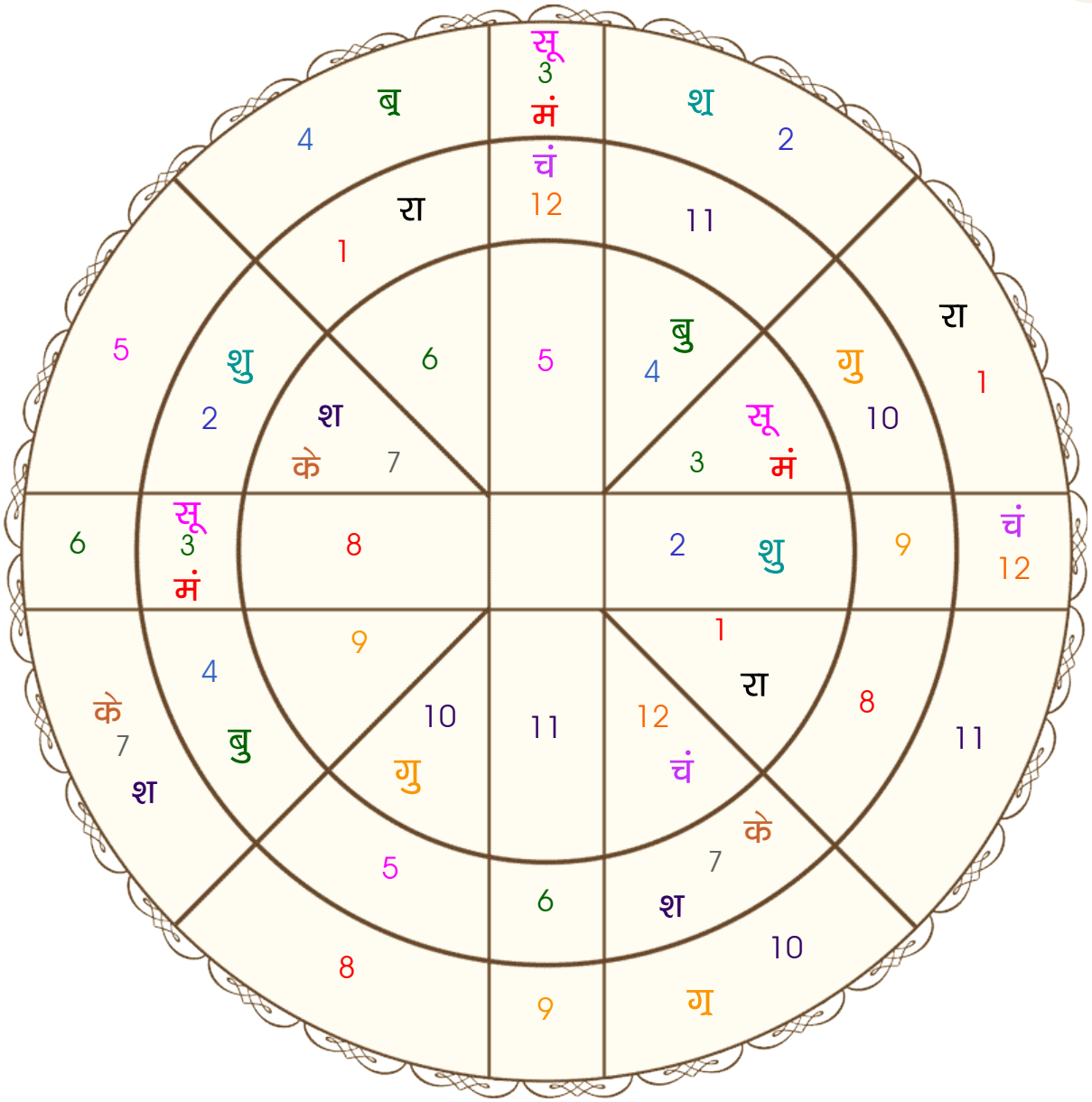

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : शनि 4 वर्ष 7 मास 4 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		मिथु	23:18:46	बुध	गुरु	शनि	राहु
चंद्र		मीन	13:26:32	गुरु	शनि	राहु	गुरु
मंगल		मिथु	26:01:59	बुध	गुरु	केतु	चंद्र
बुध		कर्क	19:16:52	चंद्र	बुध	केतु	बुध
गुरु	व	मक	21:37:34	शनि	चंद्र	शुक्र	गुरु
शुक्र		वृष	09:27:41	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शनि
शनि	व	तुला	28:08:23	शुक्र	गुरु	शुक्र	शनि
राहु	व	मेष	22:38:47	मंगल	शुक्र	शनि	शुक्र
केतु	व	तुला	22:38:47	शुक्र	गुरु	शनि	शुक्र
हर्ष	व	वृश्चि	21:12:03	मंगल	बुध	शुक्र	बुध
नेप	व	धनु	08:16:50	गुरु	केतु	गुरु	बुध
प्लूटो	व	तुला	08:22:32	शुक्र	राहु	राहु	सूर्य

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	सिंह	02:31:55	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
2	सिंह	27:48:04	सूर्य	सूर्य	चंद्र	गुरु
3	कन्या	27:10:31	बुध	मंगल	गुरु	शुक्र
4	तुला	29:34:12	शुक्र	गुरु	चंद्र	मंगल
5	धनु	02:23:20	गुरु	केतु	शुक्र	शनि
6	मक	03:35:39	शनि	सूर्य	शनि	बुध
7	कुंभ	02:31:55	शनि	मंगल	केतु	शनि
8	कुंभ	27:48:04	शनि	गुरु	शुक्र	गुरु
9	मीन	27:10:31	गुरु	बुध	गुरु	शुक्र
10	मेष	29:34:12	मंगल	सूर्य	राहु	गुरु
11	मिथु	02:23:20	बुध	मंगल	केतु	गुरु
12	कर्क	03:35:39	चंद्र	शनि	शनि	शनि

के.पी. अयनांश : 23:33:06

फॉरच्युना : मेष 22:39:41

लग्न कुंडली

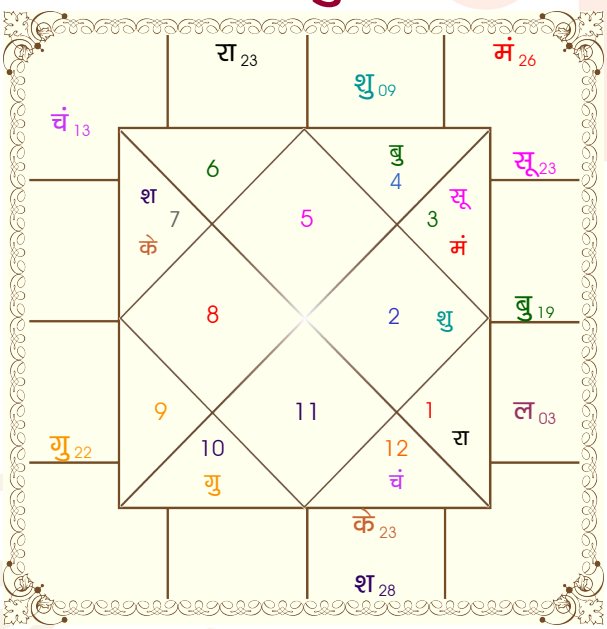

भाव कुंडली

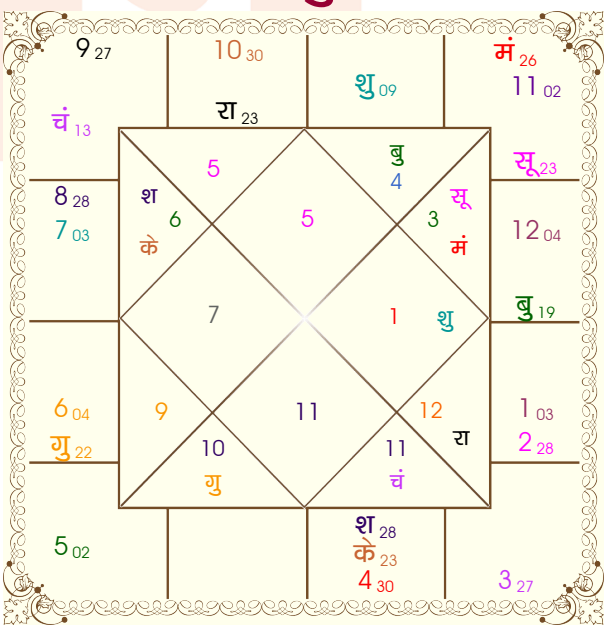

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- शुक्र-
2	सूर्य- शुक्र-
3	चंद्र, बुध, शनि, केतु,
4	शुक्र- राहु-
5	सूर्य- मंगल- गुरु- शनि- केतु-
6	सूर्य, चंद्र- मंगल, गुरु, शनि+ केतु,
7	चंद्र- शनि-
8	चंद्र+ गुरु, शनि-
9	सूर्य- मंगल- गुरु- शनि- राहु, केतु-
10	मंगल- शुक्र, राहु,
11	सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र,
12	चंद्र- बुध+ गुरु-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 2- 5- 6, 9- 11,
चंद्र	3, 6- 7- 8+ 12-
मंगल	5- 6, 9- 10- 11,
बुध	3, 11, 12+
गुरु	5- 6, 8, 9- 12-
शुक्र	1- 2- 4- 10, 11,
शनि	3, 5- 6+ 7- 8- 9-
राहु	4- 9, 10,
केतु	3, 5- 6, 9-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	केतु
लग्न राशि स्वामी	सूर्य
राशि नक्षत्र स्वामी	शनि
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगल
लग्न अन्तर स्वामी	शुक्र
राशि अन्तर स्वामी	राहु

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	--	--	शु	सू
2	--	--	शु	सू
3	चं	श के	बु	बु
4	--	--	रा	शु
5	--	--	सू मं श के	गु
6	सू मं श के	गु	चं	श
7	--	--	चं	श
8	गु	चं	चं	श
9	--	रा	सू मं श के	गु
10	रा	शु	--	मं
11	शु	सू मं	बु	बु
12	बु	बु	गु	चं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	1,2	2,6,10	मिथुन	11
चंद्र	12	---	मीन	8
मंगल	10	3,7,11	मिथुन	11
बुध	3,11	9	कर्क	12
गुरु	5,9	4,8	मकर	6
शुक्र	4	---	वृष	10
शनि	6,7,8	12	तुला	3
राहु	---	---	मेष	9
केतु	---	1,5	तुला	3

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	5,9	4,8	6	6,7,8	12	3
चंद्र	6,7,8	12	3	---	---	9
मंगल	5,9	4,8	6	---	1,5	3
बुध	3,11	9	12	---	1,5	3
गुरु	12	---	8	4	---	10
शुक्र	1,2	2,6,10	11	4	---	10
शनि	5,9	4,8	6	4	---	10
राहु	4	---	10	6,7,8	12	3
केतु	5,9	4,8	6	6,7,8	12	3

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	83.21	343.34	85.93	109.18	291.53	39.36	208.04	22.55	202.55	231.10	248.18	188.28
सूर्य	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	पंच	--	--	--
83.21	0.00	0.00	9.60	0.00	0.00	0.00	0.91	0.00	2.95	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	पंच	--	तृती	--	नवां	--	--	--	--
343.34	0.00	0.00	0.00	0.13	0.00	1.51	0.00	0.32	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	युति	--	--	--	8वां	--	पंच	--	पंच	--	--	4था
85.93	9.60	0.00	0.00	0.00	8.95	0.00	2.56	0.00	1.90	0.00	0.00	2.75
बुध	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	चतु	पंच	--	--
109.18	0.00	0.00	0.00	0.00	9.70	0.00	0.00	0.00	1.91	2.63	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	सप्त	--	5वां	--	चतु	--	--	--	--
291.53	0.00	0.00	0.00	9.70	0.00	2.93	0.00	2.89	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	सप्त	--	--
39.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.76	0.00	0.00	3.35	0.00	0.00
शनि	--	अष्टां	--	10वा	--	सप्त	--	सप्त	युति	--	नवां	--
208.04	0.00	0.89	0.00	6.00	0.00	3.76	0.00	8.39	8.39	0.00	0.98	0.00
राहु	तृती	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	सप्त	--	--	सप्त
22.55	2.95	0.00	1.90	1.91	0.00	0.00	8.39	0.00	10.00	0.00	0.00	0.76
केतु	--	--	--	--	चतु	--	युति	सप्त	--	--	अष्ट	युति
202.55	0.00	0.00	0.00	0.00	2.89	0.00	8.39	10.00	0.00	0.00	0.54	0.76
हर्ष	--	--	--	--	तृती	सप्त	--	--	--	--	--	--
231.10	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98	3.35	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	चतु	--	--	--	--	--	अष्टां	--	--	--	--
248.18	0.00	0.65	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.54	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	--	--	सप्त	युति	--	तृती	--
188.28	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.76	0.76	0.00	3.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	122.43	151.44	180.46	209.47	240.46	271.44	302.43	331.44	0.46	29.47	60.46	91.44
सूर्य	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
83.21	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.51
चंद्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
343.34	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.19	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति
85.93	0.00	0.38	0.00	1.80	0.00	8.38	7.77	0.00	0.00	0.00	0.00	8.38
बुध	युति	--	पंचा	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
109.18	1.82	0.00	0.42	0.00	0.00	0.00	1.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	नवां	--	--	5वां	--
291.53	4.16	0.00	5.94	0.00	0.00	0.00	4.16	0.99	0.00	0.00	5.94	0.00
शुक्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
39.36	0.00	0.00	0.00	5.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.10	0.00	0.00
शनि	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच	--	सप्त	--	--
208.04	8.96	0.00	0.00	9.89	0.00	9.37	0.00	1.88	0.00	9.89	0.00	0.00
राहु	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
22.55	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00
केतु	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
202.55	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.48	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	युति	नवां	पंचा	--	--	--	सप्त	--
231.10	0.00	0.00	0.00	0.00	5.57	0.86	0.50	0.00	0.00	0.00	5.57	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	--	--
248.18	0.00	0.00	0.00	0.00	6.90	0.00	0.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--
188.28	0.00	0.00	6.83	0.00	0.00	0.00	0.12	0.00	6.83	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	122.43	147.70	177.08	209.47	242.29	273.49	302.43	327.70	357.08	29.47	62.29	93.49
सूर्य	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
83.21	0.00	1.16	1.59	0.00	0.00	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74
चंद्र	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--
343.34	0.00	0.00	1.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.32	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	8वां	--	--	--	--	युति
85.93	0.00	2.68	0.00	1.80	0.00	7.03	7.77	0.00	0.00	0.00	0.00	7.03
बुध	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
109.18	1.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	--	5वां	--
291.53	4.16	0.00	8.36	0.00	0.00	0.00	4.16	0.00	0.35	0.00	4.29	0.00
शुक्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती
39.36	0.00	0.00	0.00	5.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.10	0.00	0.10
शनि	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--
208.04	8.96	0.00	0.00	9.89	0.00	8.41	0.00	2.99	0.06	9.89	0.00	0.00
राहु	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--
22.55	0.00	0.66	0.00	7.48	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.48	0.92	0.00
केतु	--	--	--	युति	नवां	--	--	पंच	--	सप्त	--	--
202.55	0.00	0.00	0.00	7.48	0.92	0.00	0.00	0.66	0.00	7.48	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	युति	--	पंचा	--	पंच	--	सप्त	--
231.10	0.00	0.00	0.00	0.00	3.89	0.00	0.50	0.00	0.02	0.00	3.89	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--	--	--
248.18	0.00	0.00	0.00	0.00	8.16	0.00	0.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
188.28	0.00	0.00	3.87	0.00	0.01	0.94	0.12	0.00	3.87	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

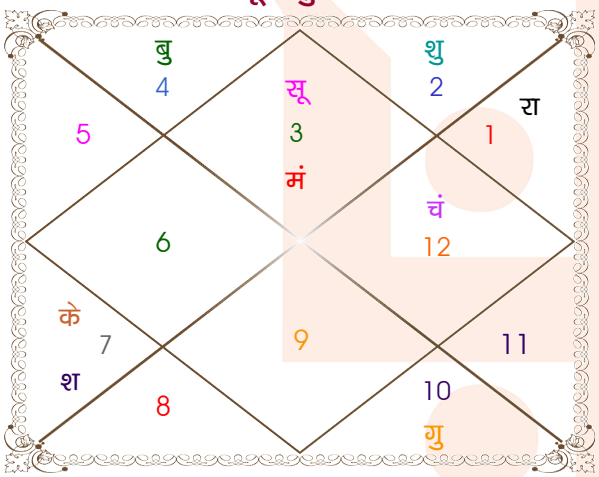

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

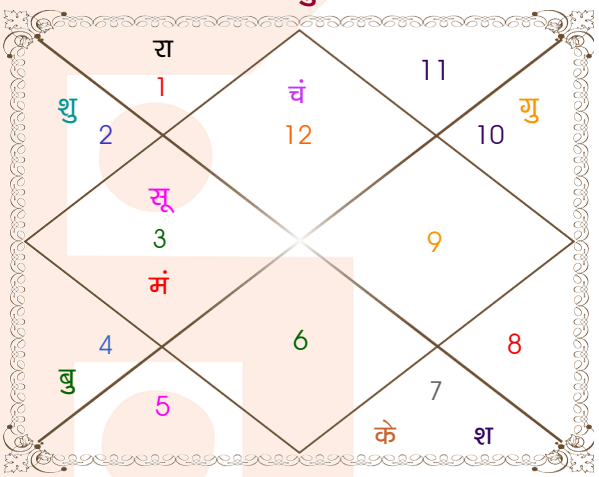

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

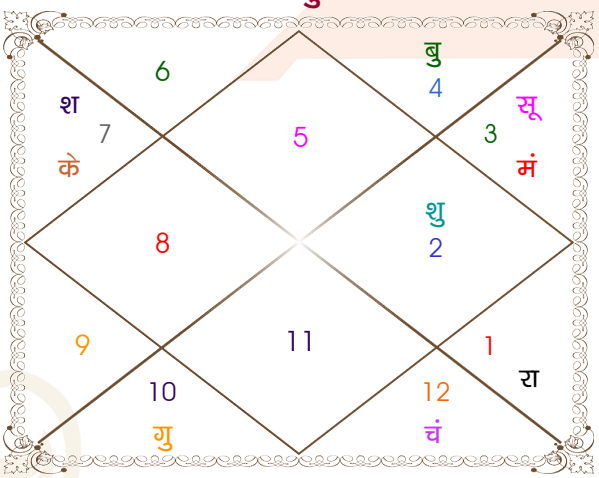

देह विचारः

होरा कुंडली

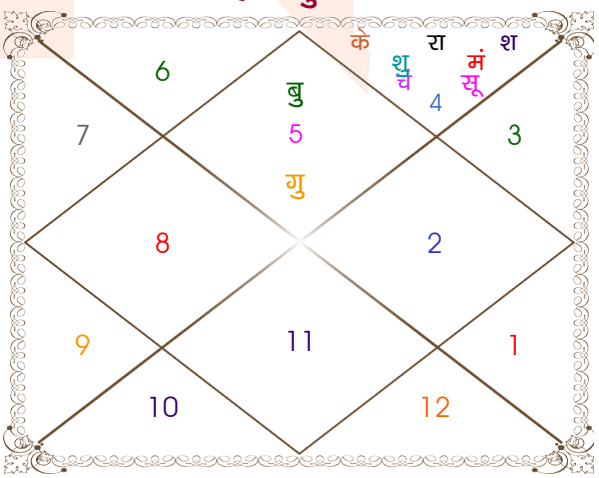

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

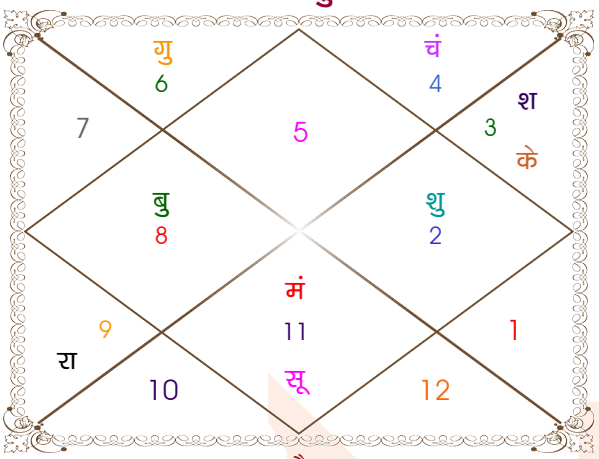

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

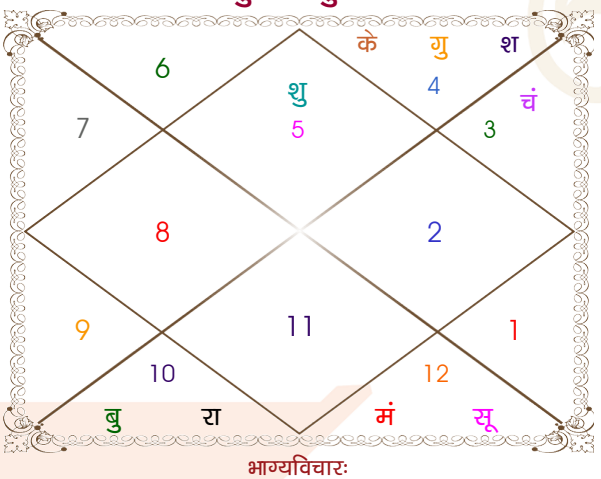

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

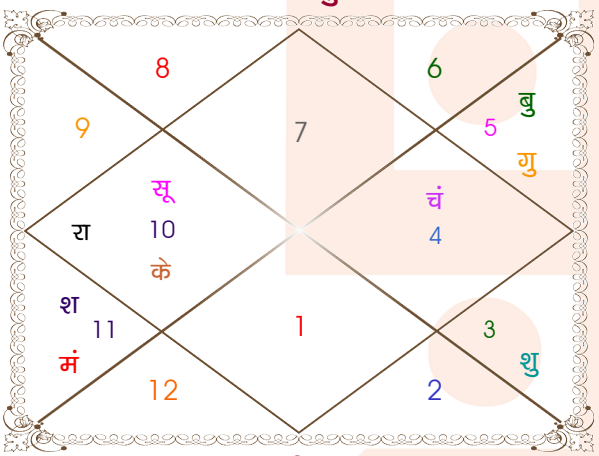

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

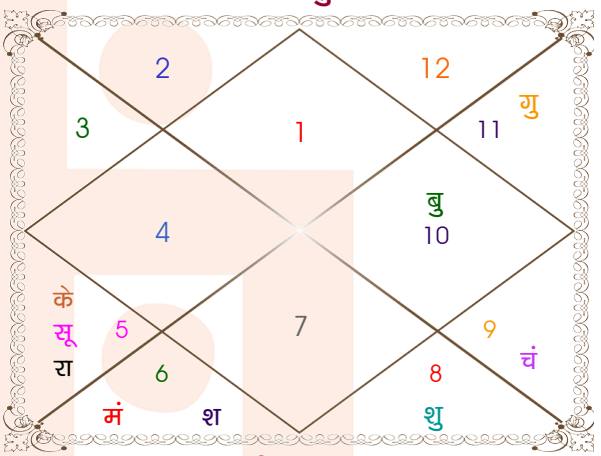

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

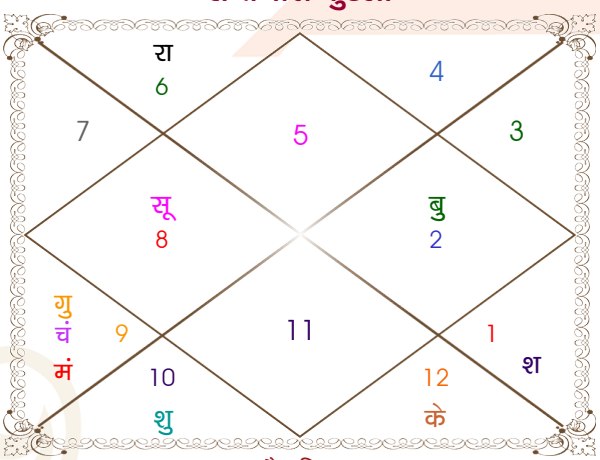

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

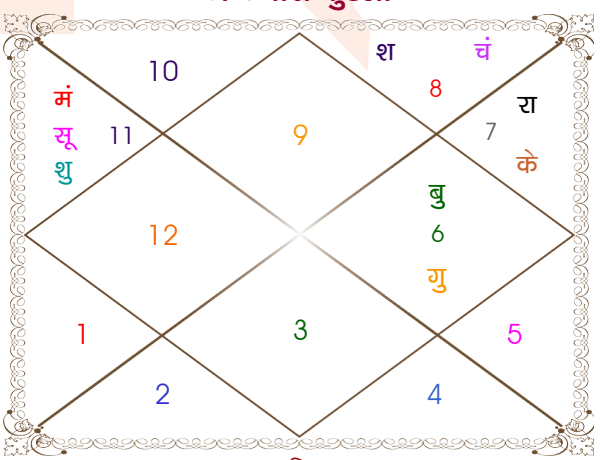

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

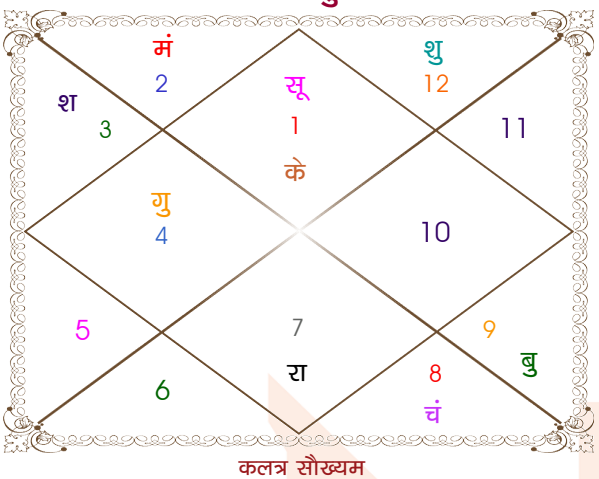

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

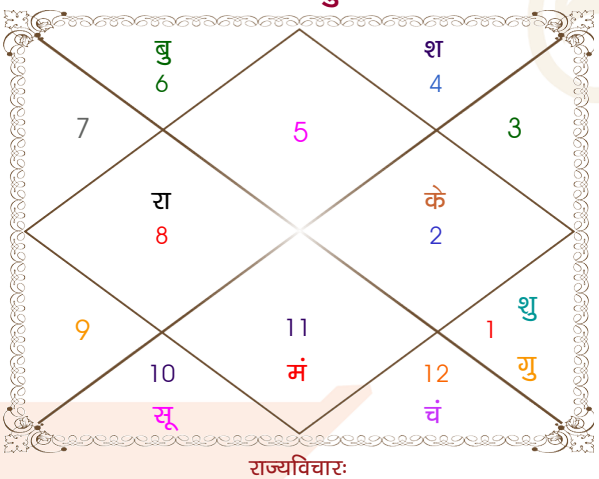

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

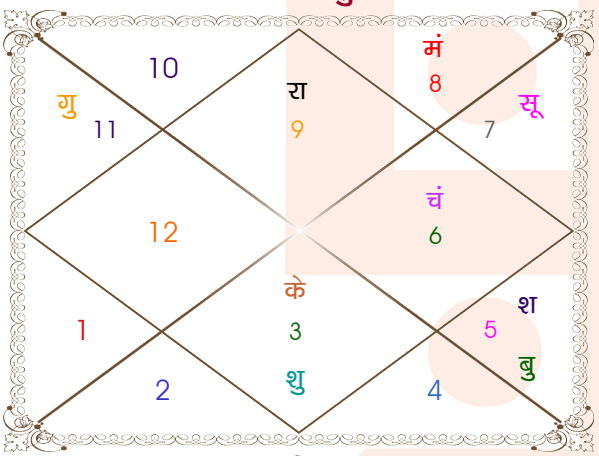

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

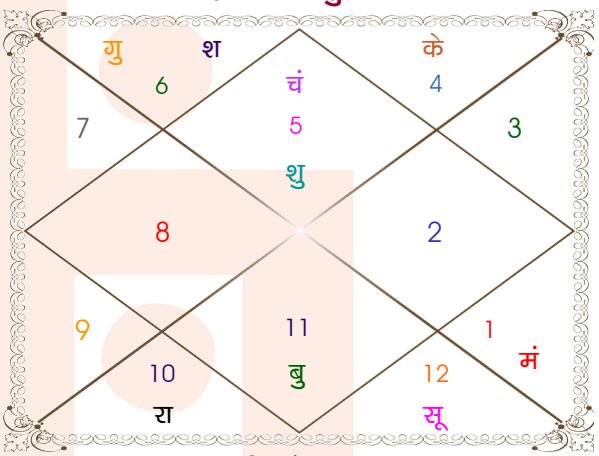

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

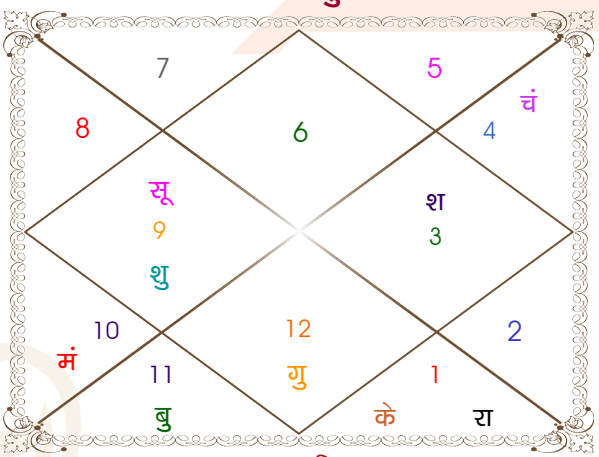

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

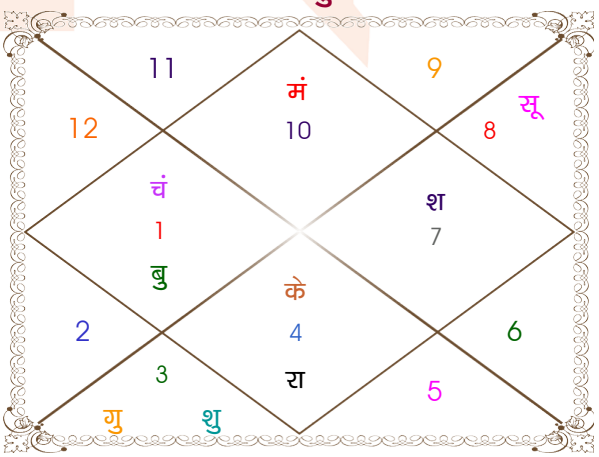

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

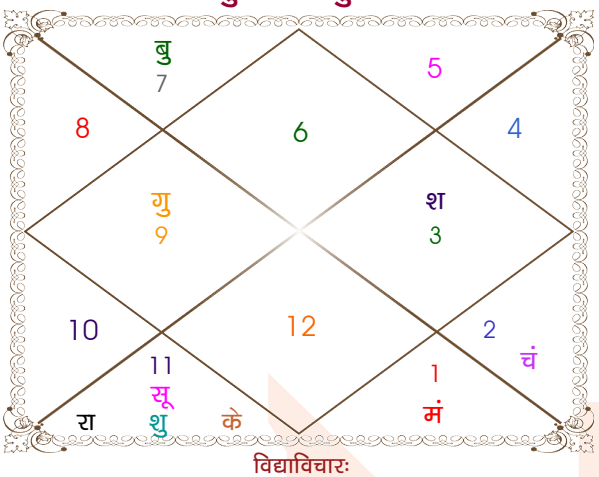

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

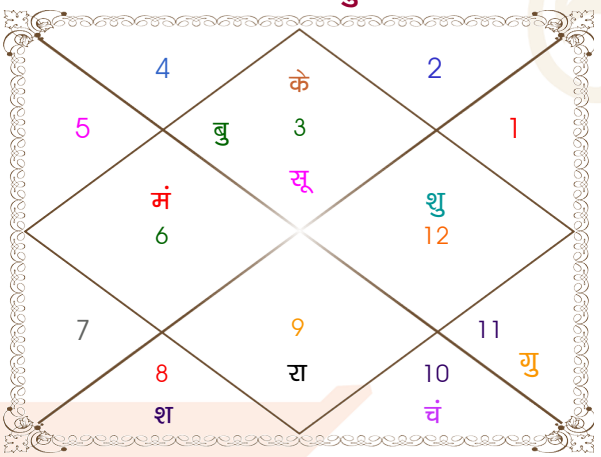

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

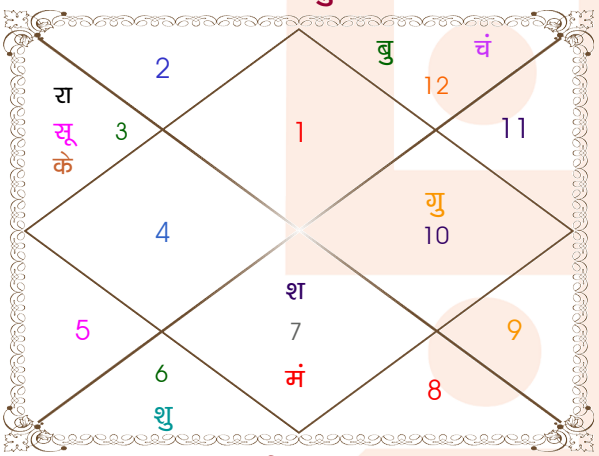

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

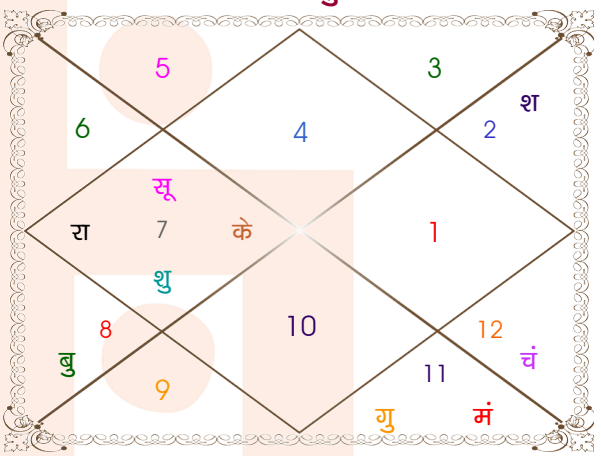

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

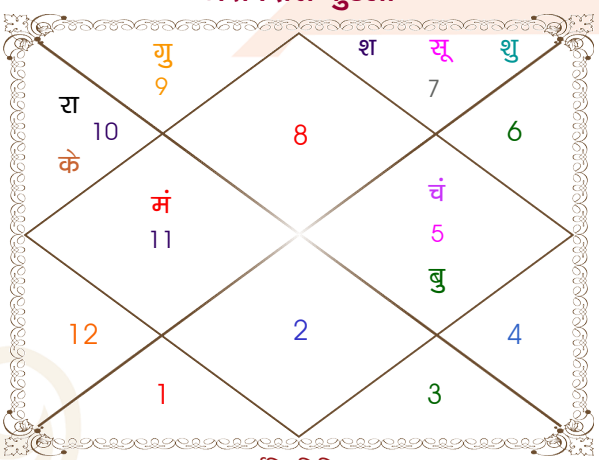

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

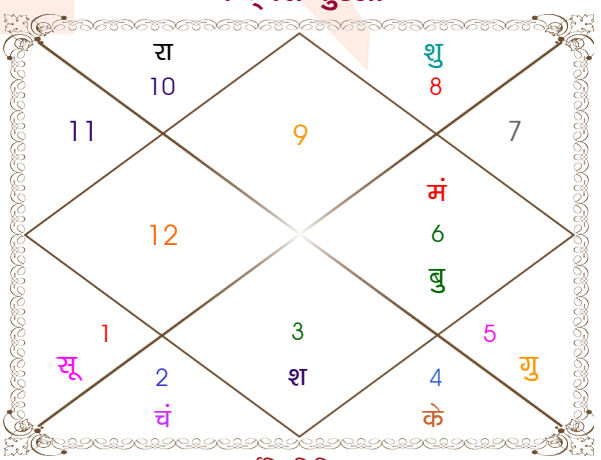

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	सिंह	मिथु	मीन	मिथु	कर्क	मक	वृष	तुला	मेष	तुला
होरा	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	सिंह	कुंभ	कर्क	कुंभ	वृश्चि	कन्या	वृष	मिथु	धनु	मिथु
चतुर्थांश	सिंह	मीन	मिथु	मीन	मक	कर्क	सिंह	कर्क	मक	कर्क
सप्तमांश	सिंह	वृश्चि	धनु	धनु	वृष	धनु	मक	मेष	कन्या	मीन
नवमांश	मेष	मेष	वृश्चि	वृष	धनु	कर्क	मीन	मिथु	तुला	मेष
दशमांश	सिंह	मक	मीन	कुंभ	कन्या	मेष	मेष	कर्क	वृश्चि	वृष
द्वादशांश	सिंह	मीन	सिंह	मेष	कुंभ	कन्या	सिंह	कन्या	मक	कर्क
षोडशांश	कन्या	धनु	कर्क	मक	कुंभ	मीन	धनु	मिथु	मेष	मेष
विंशांश	मक	वृश्चि	मेष	मक	मेष	मिथु	मिथु	तुला	कर्क	कर्क
चतुर्विंशांश	कन्या	कुंभ	वृष	मेष	तुला	धनु	कुंभ	मिथु	कुंभ	कुंभ
सप्तविंशांश	मिथु	मिथु	मक	कन्या	मिथु	कुंभ	मीन	वृश्चि	धनु	मिथु
त्रिंशांश	मेष	मिथु	मीन	तुला	मीन	मक	कन्या	तुला	मिथु	मिथु
खवेदांश	कर्क	तुला	मीन	कुंभ	वृश्चि	कुंभ	तुला	वृष	तुला	तुला
अक्षवेदांश	वृश्चि	तुला	सिंह	कुंभ	सिंह	धनु	तुला	तुला	मक	मक
षष्ट्यंश	धनु	मेष	वृष	कन्या	कन्या	सिंह	वृश्चि	मिथु	मक	कर्क

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
चन्द्र	2 किंसुक	2 किंसुक	4 गोपुर	5 कन्दुक
मंगल	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	0 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
गुरु	1 ---	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
शुक्र	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	6 केरल
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
राहु	1 ---	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
केतु	0 ---	1 ---	1 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	11.55	16.80	12.70	9.90	12.25	14.65	13.90	13.25	10.25
सप्तवर्ग	11.55	16.55	12.73	10.98	13.30	13.73	12.68	13.43	10.63
दशवर्ग	10.98	16.35	11.43	14.38	12.48	14.03	13.28	11.73	9.13
षोडशवर्ग	11.15	15.83	11.15	13.28	14.03	13.65	13.65	12.15	8.88

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	मित्र	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	सम	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	सम	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र
गुरु	सम	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	सम	---	सम	अधिशत्रु
राहु	सम	सम	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	36	43	11	41	6	46	57
सप्तवर्गज बल	77	143	101	84	94	109	86
ओजयुग्मक बल	30	30	15	15	0	30	30
केन्द्र बल	30	30	30	15	15	60	15
द्रेष्काण बल	0	0	0	15	0	0	0
कुल स्थान बल	172	246	157	171	114	245	189
कुल दिग्बल	42	15	41	56	4	3	29
नतोन्नत बल	41	19	19	60	41	41	19
पक्ष बल	27	67	27	33	33	33	27
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	30	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	117	26	58	52	9	57	54
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	200	112	149	295	143	131	99
कुल चेष्टाबल	0	0	1	33	51	32	41
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	4	-3	6	21	-23	0	19
कुल षट्बल	479	422	371	602	322	453	385
रूप षट्बल	8.0	7.0	6.2	10.0	5.4	7.6	6.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.6	1.2	1.2	1.4	0.8	1.4	1.3
संबंधित पद	1	6	5	2	7	3	4

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	44.00	38.03	2.42	37.23	16.69	38.15	48.61
कष्ट फल	11.71	21.03	54.14	22.21	22.68	19.98	7.09

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	479	602	453	453	322	385	385	322	371	371	602	422
भावदिग्बल	30	50	40	30	20	20	0	20	50	60	40	20
भावदृष्टि बल	50	53	72	58	30	-10	23	25	41	38	48	25
कुल भाव बल	559	705	565	541	373	395	408	367	462	469	690	466
रूप भाव बल	9.3	11.7	9.4	9.0	6.2	6.6	6.8	6.1	7.7	7.8	11.5	7.8
संबंधित पद	4	1	3	5	11	10	9	12	8	6	2	7

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

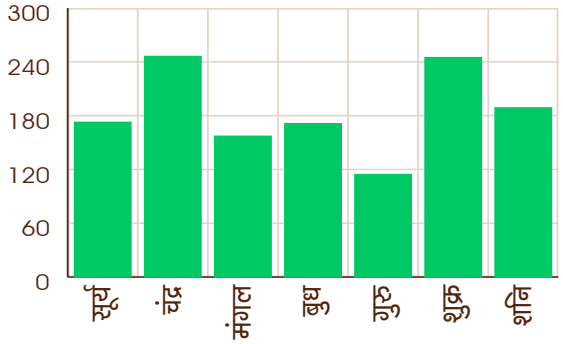

दिग्बल

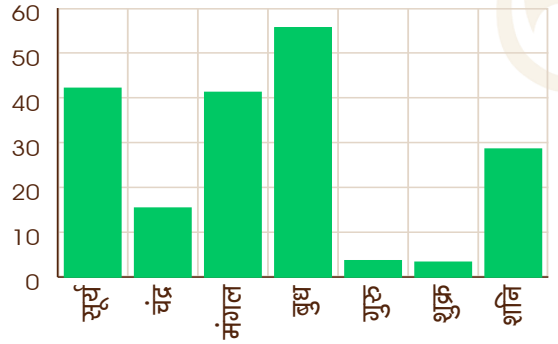

कालबल

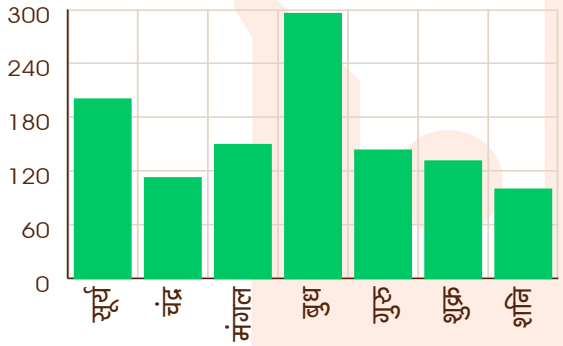

चेष्टाबल

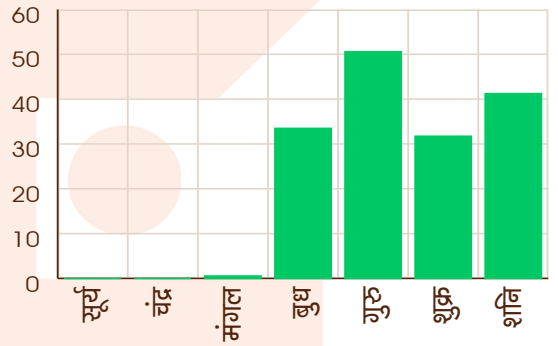

नैसर्गिक बल

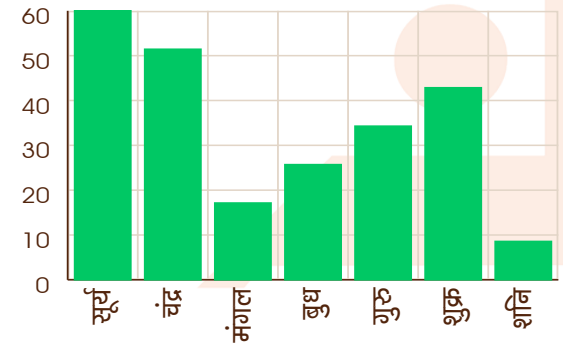

दृग्बल

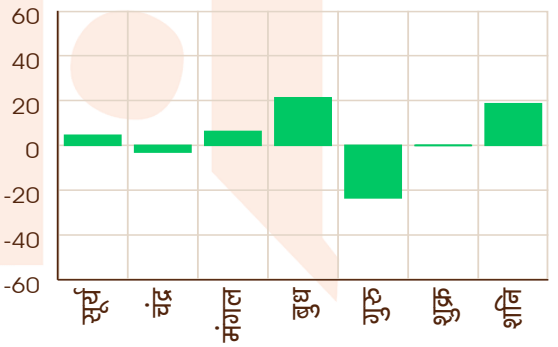

रूप षट्बल

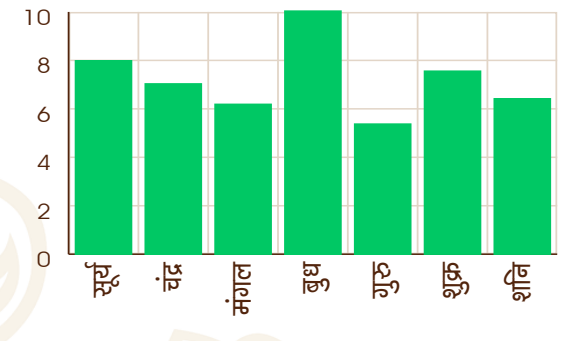

न्यूनतम षट्बल

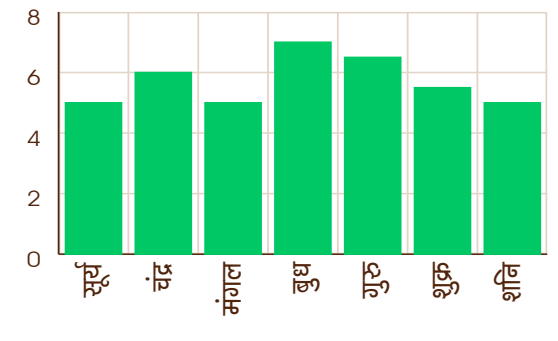

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

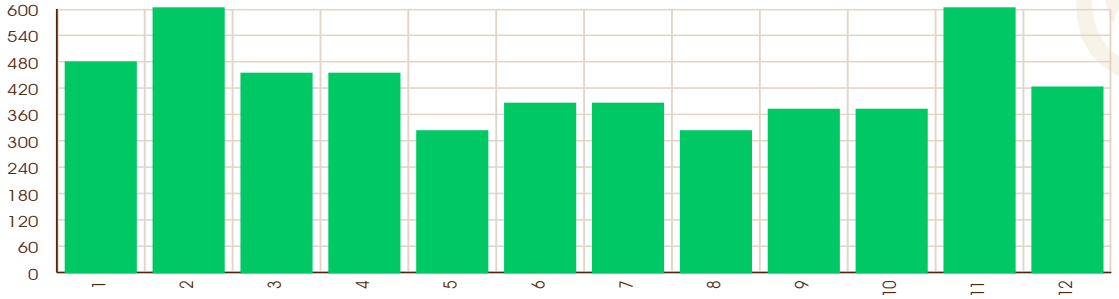

भावदिग्बल

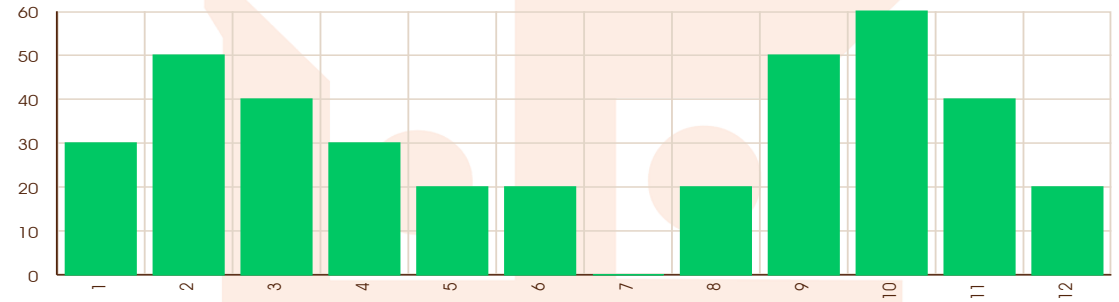

भावदृष्टि बल

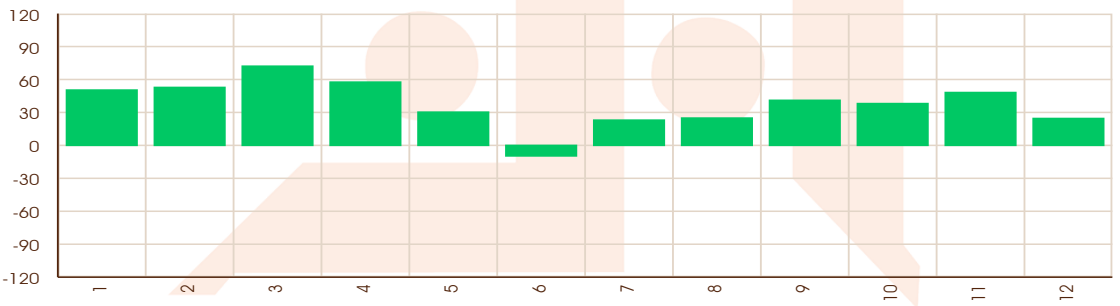

भाव बल

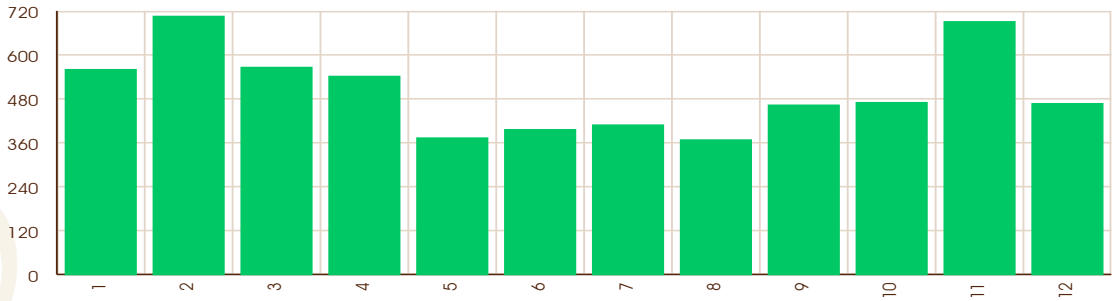

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

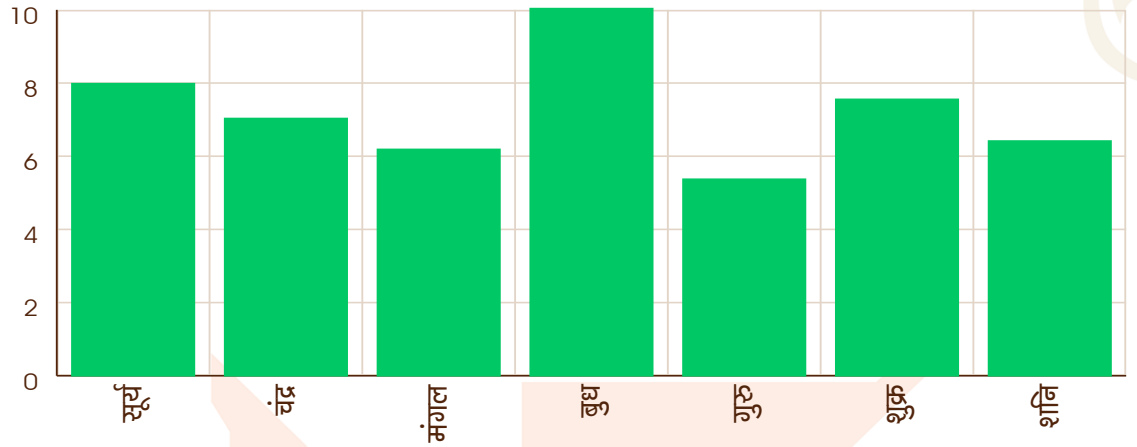

इष्ट - कष्ट फल

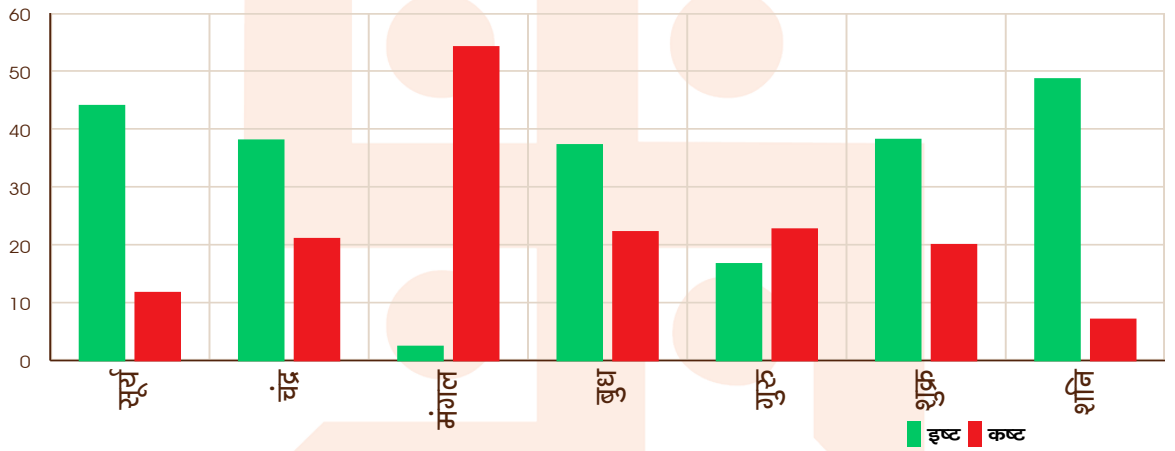

रूप भाव बल

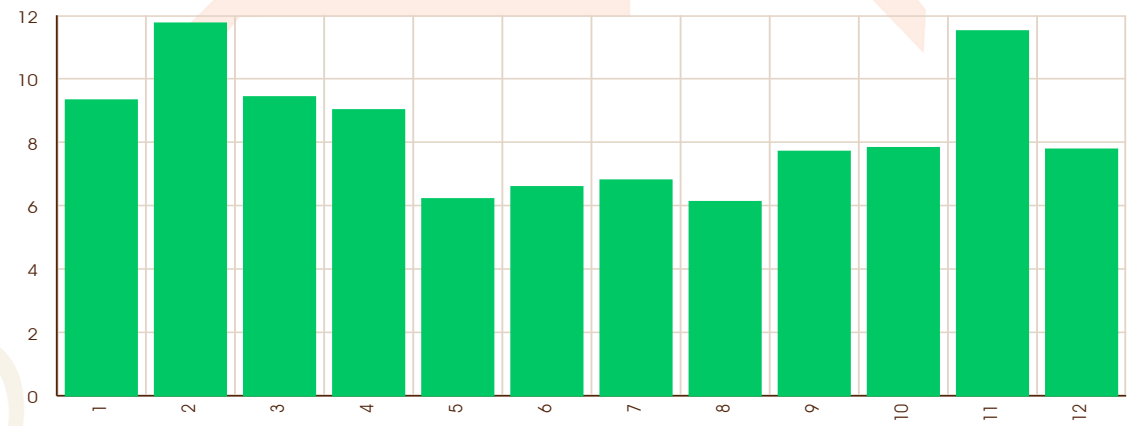

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	सिंह	02:25:55	--	--	मघा	1	10
गुलिक	गु	तुला	14:53:34	--	--	स्वाति	3	15
काल	का	वृश्चि	07:17:48	--	--	अनुराधा	2	17
मृत्यु	मृ	कर्क	14:44:00	--	--	पुष्य	4	8
यमघंटक	यम	सिंह	29:30:20	--	--	उ०फाल्गुनी	1	12
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	सिंह	06:48:17	--	--	मघा	3	10
धूम	धू	वृश्चि	06:32:46	--	--	अनुराधा	1	17
व्यतिपात	व्य	सिंह	23:27:14	--	--	पू०फाल्गुनी	4	11
परिवेश	परि	कुंभ	23:27:14	--	--	पू०भाद्रपद	2	25
इन्द्रचाप	इ	वृष	06:32:46	--	--	कृतिका	3	3
उपकेतु	उप	वृष	23:12:46	--	--	रोहिणी	4	4

प्राणपद	:	मिथु	09:43:52	कारकाँश लग्न	:	मिथु	12:21:31
भाव लग्न	:	सिंह	10:32:19	होरा लग्न	:	कन्या	27:51:53
घटी लग्न	:	कुंभ	19:50:32	वर्णद लग्न	:	कुंभ	00:17:48

उपग्रह कुंडली

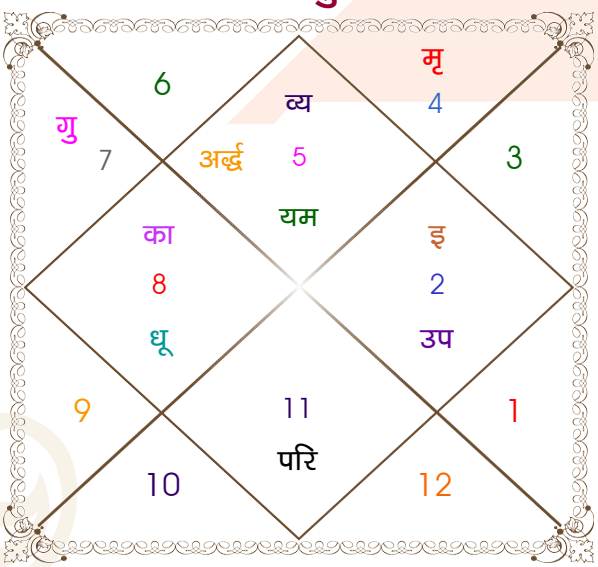

आरूढ़ कुंडली

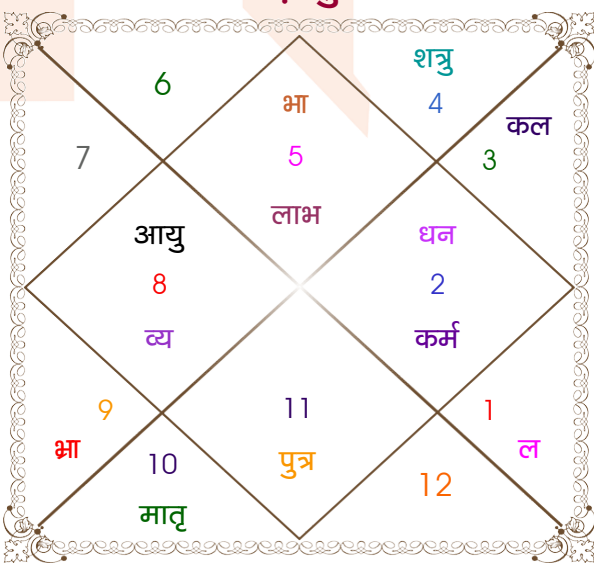

षन्नाडी चक्र

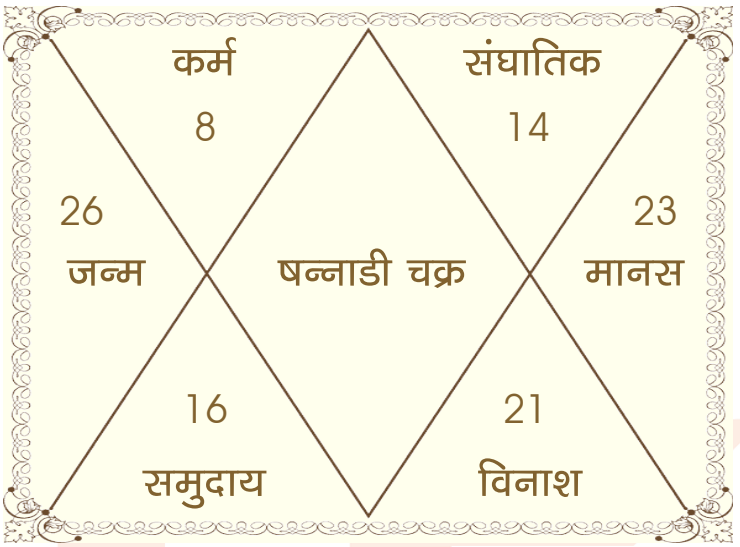

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	6	4	2	4	3	5	4	5	2	3	5	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	1	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	7
बुध	0	1	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
कुल	5	4	3	1	4	6	3	4	6	3	6	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	कुल
शनि	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
कुल	4	2	4	2	5	3	4	4	0	3	4	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	4	5	4	3	5	5	5	2	4	5	5	7	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शुक्र	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	6
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
कुल	6	5	6	6	2	4	5	4	6	3	4	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
गुरु	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	5
मंगल	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
लग्न	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	8
कुल	7	4	3	5	5	3	5	4	4	4	4	4	52

शनि का अष्टकवर्ग

	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	3	3	4	3	2	5	4	5	4	1	4	1	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
सूर्य	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	6	3	4	3	4	5	3	3	4	6	4	4	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	5	4	1	4	1	3	3	4	3	2	5	39
गुरु	6	2	4	5	4	6	3	4	5	6	5	6	56
मंगल	4	4	4	2	4	2	5	3	4	4	0	3	39
सूर्य	5	5	6	4	2	4	3	5	4	5	2	3	48
शुक्र	4	7	4	3	5	5	3	5	4	4	4	4	52
बुध	5	5	7	4	5	4	3	5	5	5	2	4	54
चंद्र	4	3	1	4	6	3	4	6	3	6	4	5	49
बिन्दु	32	31	30	23	30	25	24	31	29	33	19	30	337
रेखा	24	25	26	33	26	31	32	25	27	23	37	26	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	4	2	0	0	0	1	2	0	2	0	4	15
गुरु	2	0	1	1	0	4	0	0	1	4	2	2	17
मंगल	0	2	4	0	0	0	5	1	0	2	0	1	15
सूर्य	3	1	4	1	0	0	1	2	2	1	0	0	15
शुक्र	0	3	1	0	1	1	0	2	0	0	1	1	10
बुध	0	1	5	0	0	0	1	1	0	1	0	0	9
चंद्र	1	0	0	0	3	0	3	2	0	3	3	1	16
रेखा	6	11	17	2	4	5	11	10	3	13	6	9	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	4	2	0	0	0	1	2	0	2	0	4	15
गुरु	2	0	1	1	0	3	0	0	0	4	0	2	13
मंगल	0	2	4	0	0	0	5	1	0	2	0	1	15
सूर्य	1	1	4	1	0	0	1	2	2	1	0	0	13
शुक्र	0	3	1	0	1	0	0	2	0	0	1	1	9
बुध	0	1	5	0	0	0	1	1	0	1	0	0	9
चंद्र	1	0	0	0	3	0	3	1	0	3	0	1	12
रेखा	4	11	17	2	4	3	11	9	2	13	1	9	86

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	99	93	117	70	85	87	137
ग्रह पिंड	79	50	116	87	68	39	99
शोध्य पिंड	178	143	233	157	153	126	236

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

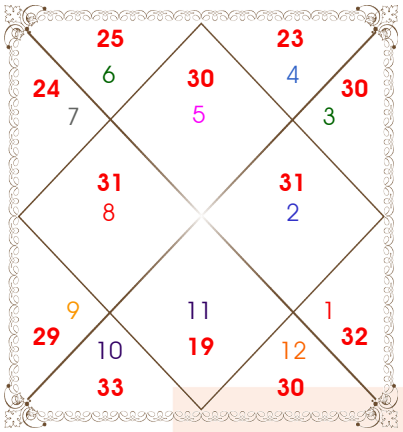

सूर्य का अष्टकवर्ग

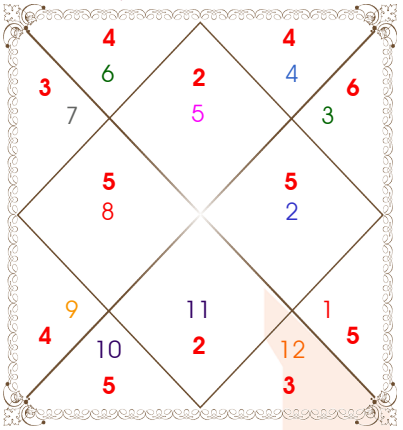

चंद्र का अष्टकवर्ग

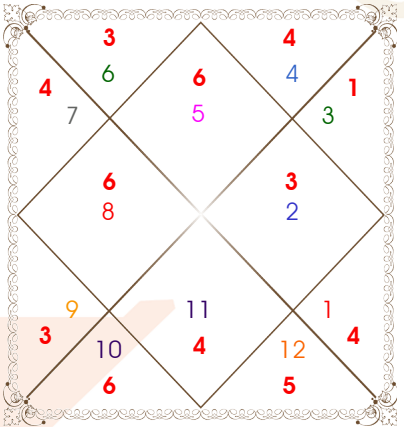

मंगल का अष्टकवर्ग

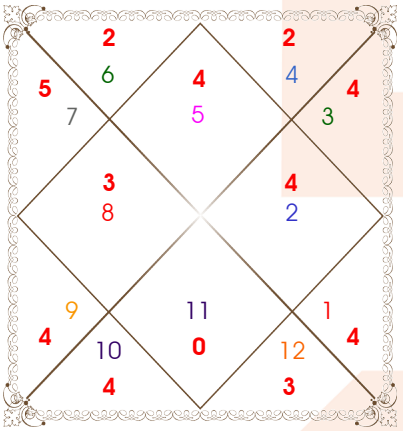

बुध का अष्टकवर्ग

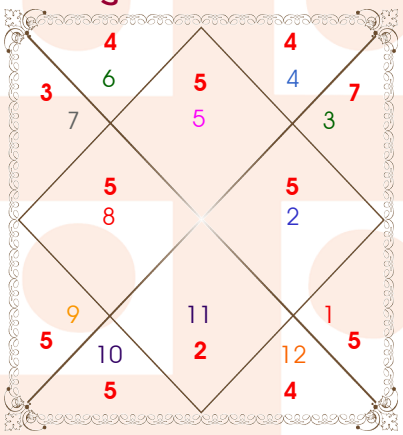

गुरू का अष्टकवर्ग

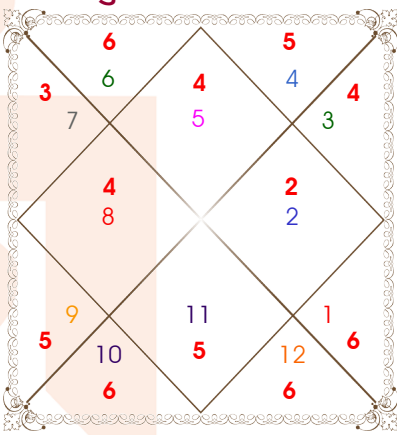

शुक्र का अष्टकवर्ग

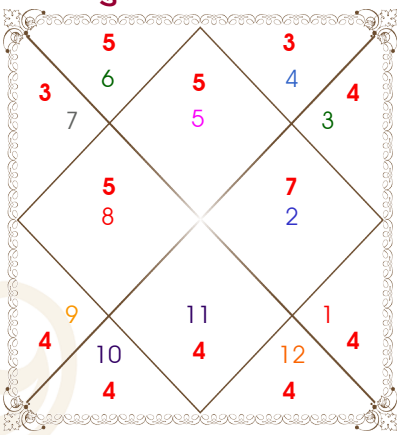

शनि का अष्टकवर्ग

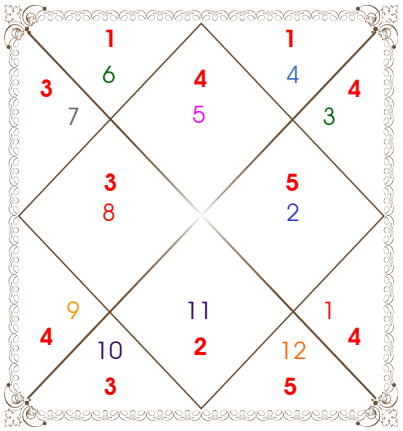

लग्न का अष्टकवर्ग

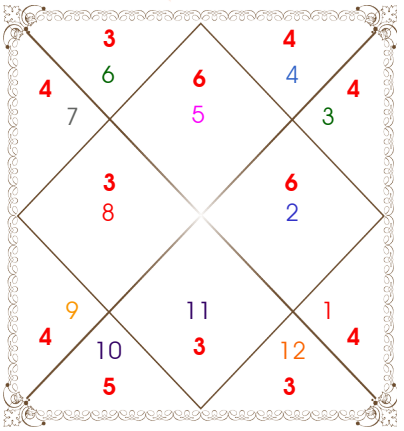

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

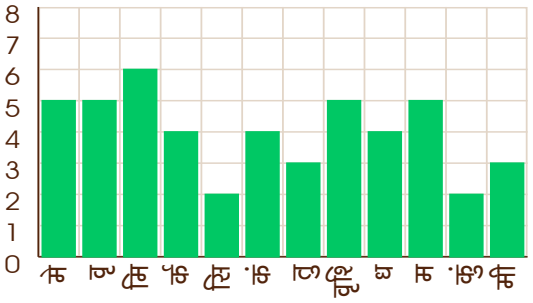

चन्द्र

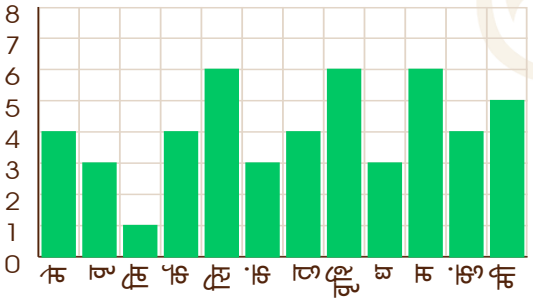

मंगल

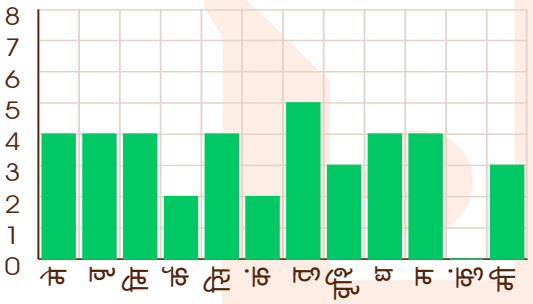

बुध

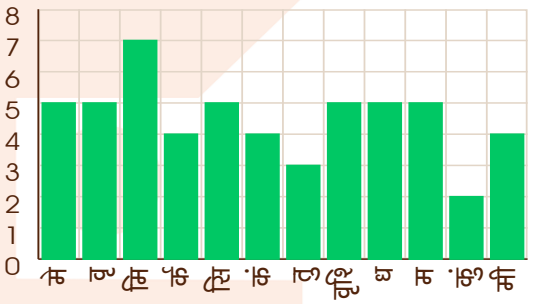

गुरु

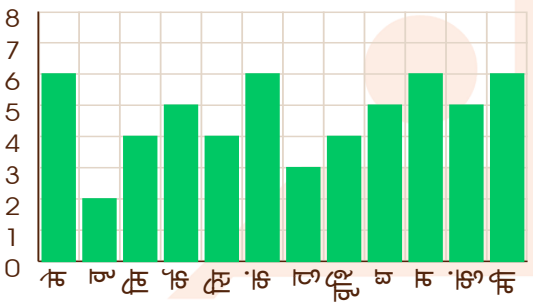

शुक्र

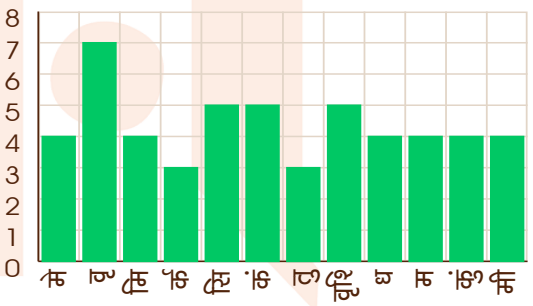

शनि

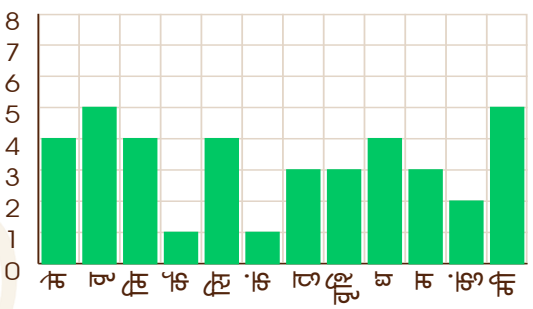

लग्न

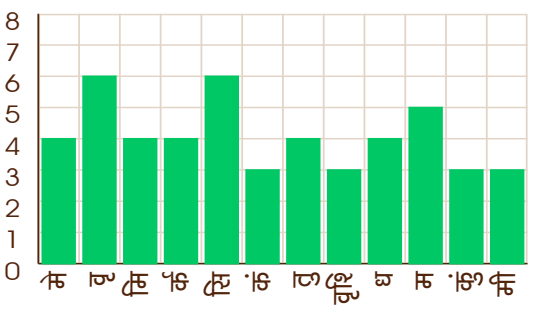

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

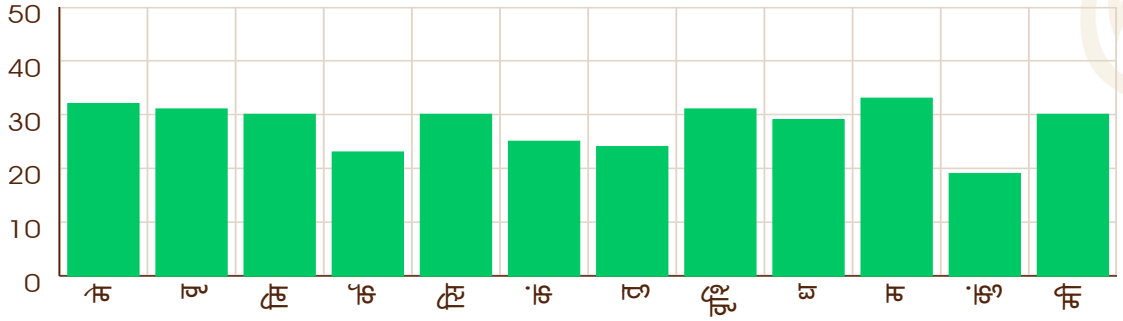

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

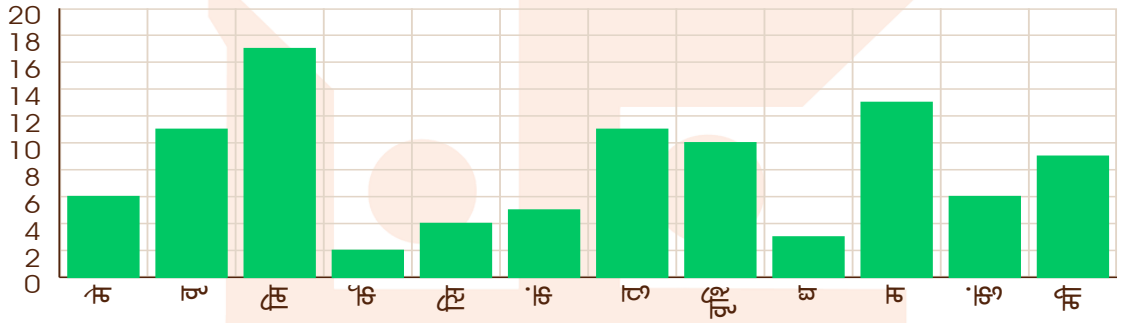

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

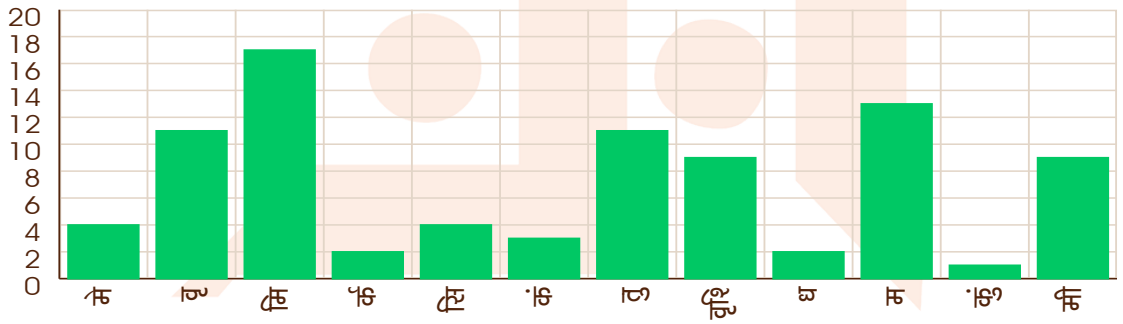

शोध्य पिंड

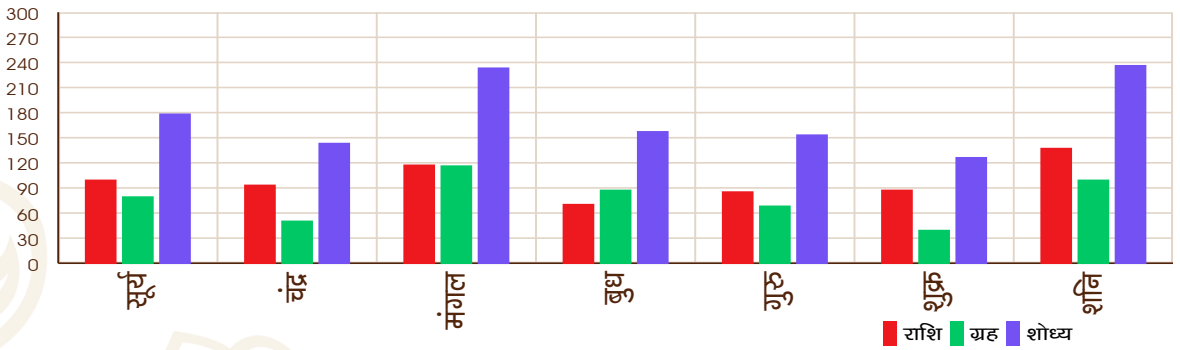

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 4 वर्ष 8 मास 25 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
09/07/1985		04/04/1990		04/04/2007		04/04/2014		04/04/2034	
04/04/1990		04/04/2007		04/04/2014		04/04/2034		04/04/2040	
	00/00/0000	बुध	31/08/1992	केतु	01/09/2007	शुक्र	04/08/2017	सूर्य	23/07/2034
	00/00/0000	केतु	28/08/1993	शुक्र	31/10/2008	सूर्य	04/08/2018	चंद्र	21/01/2035
	00/00/0000	शुक्र	28/06/1996	सूर्य	08/03/2009	चंद्र	04/04/2020	मंगल	29/05/2035
	00/00/0000	सूर्य	04/05/1997	चंद्र	07/10/2009	मंगल	04/06/2021	राहु	22/04/2036
	00/00/0000	चंद्र	04/10/1998	मंगल	05/03/2010	राहु	04/06/2024	गुरु	08/02/2037
	00/00/0000	मंगल	01/10/1999	राहु	23/03/2011	गुरु	03/02/2027	शनि	21/01/2038
	09/07/1985	राहु	19/04/2002	गुरु	27/02/2012	शनि	04/04/2030	बुध	28/11/2038
राहु	22/09/1987	गुरु	25/07/2004	शनि	07/04/2013	बुध	02/02/2033	केतु	04/04/2039
गुरु	04/04/1990	शनि	04/04/2007	बुध	04/04/2014	केतु	04/04/2034	शुक्र	04/04/2040

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
04/04/2040		04/04/2050		04/04/2057		04/04/2075		04/04/2091	
04/04/2050		04/04/2057		04/04/2075		04/04/2091		00/00/0000	
चंद्र	02/02/2041	मंगल	31/08/2050	राहु	16/12/2059	गुरु	23/05/2077	शनि	07/04/2094
मंगल	03/09/2041	राहु	19/09/2051	गुरु	11/05/2062	शनि	04/12/2079	बुध	15/12/2096
राहु	05/03/2043	गुरु	25/08/2052	शनि	17/03/2065	बुध	11/03/2082	केतु	24/01/2098
गुरु	04/07/2044	शनि	04/10/2053	बुध	04/10/2067	केतु	15/02/2083	शुक्र	27/03/2101
शनि	02/02/2046	बुध	01/10/2054	केतु	22/10/2068	शुक्र	16/10/2085	सूर्य	09/03/2102
बुध	05/07/2047	केतु	27/02/2055	शुक्र	22/10/2071	सूर्य	04/08/2086	चंद्र	08/10/2103
केतु	03/02/2048	शुक्र	28/04/2056	सूर्य	15/09/2072	चंद्र	04/12/2087	मंगल	16/11/2104
शुक्र	04/10/2049	सूर्य	03/09/2056	चंद्र	17/03/2074	मंगल	09/11/2088	राहु	10/07/2105
सूर्य	04/04/2050	चंद्र	04/04/2057	मंगल	04/04/2075	राहु	04/04/2091		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 4 वर्ष 9 मा 8 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
09/07/1985		22/09/1987		04/04/1990		31/08/1992		28/08/1993	
22/09/1987		04/04/1990		31/08/1992		28/08/1993		28/06/1996	
	09/07/1985	गुरु	23/01/1988	बुध	07/08/1990	केतु	21/09/1992	शुक्र	17/02/1994
गुरु	06/09/1985	शनि	18/06/1988	केतु	27/09/1990	शुक्र	20/11/1992	सूर्य	09/04/1994
शनि	18/02/1986	बुध	27/10/1988	शुक्र	21/02/1991	सूर्य	08/12/1992	चंद्र	05/07/1994
बुध	15/07/1986	केतु	20/12/1988	सूर्य	06/04/1991	चंद्र	08/01/1993	मंगल	03/09/1994
केतु	14/09/1986	शुक्र	23/05/1989	चंद्र	18/06/1991	मंगल	29/01/1993	राहु	05/02/1995
शुक्र	06/03/1987	सूर्य	08/07/1989	मंगल	08/08/1991	राहु	24/03/1993	गुरु	23/06/1995
सूर्य	27/04/1987	चंद्र	23/09/1989	राहु	18/12/1991	गुरु	11/05/1993	शनि	04/12/1995
चंद्र	23/07/1987	मंगल	16/11/1989	गुरु	14/04/1992	शनि	08/07/1993	बुध	29/04/1996
मंगल	22/09/1987	राहु	04/04/1990	शनि	31/08/1992	बुध	28/08/1993	केतु	28/06/1996

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
28/06/1996		04/05/1997		04/10/1998		01/10/1999		19/04/2002	
04/05/1997		04/10/1998		01/10/1999		19/04/2002		25/07/2004	
सूर्य	13/07/1996	चंद्र	17/06/1997	मंगल	25/10/1998	राहु	18/02/2000	गुरु	08/08/2002
चंद्र	08/08/1996	मंगल	17/07/1997	राहु	18/12/1998	गुरु	21/06/2000	शनि	17/12/2002
मंगल	26/08/1996	राहु	02/10/1997	गुरु	05/02/1999	शनि	15/11/2000	बुध	13/04/2003
राहु	12/10/1996	गुरु	10/12/1997	शनि	03/04/1999	बुध	27/03/2001	केतु	31/05/2003
गुरु	22/11/1996	शनि	02/03/1998	बुध	24/05/1999	केतु	21/05/2001	शुक्र	16/10/2003
शनि	11/01/1997	बुध	15/05/1998	केतु	14/06/1999	शुक्र	23/10/2001	सूर्य	27/11/2003
बुध	24/02/1997	केतु	14/06/1998	शुक्र	14/08/1999	सूर्य	08/12/2001	चंद्र	04/02/2004
केतु	14/03/1997	शुक्र	08/09/1998	सूर्य	01/09/1999	चंद्र	24/02/2002	मंगल	23/03/2004
शुक्र	04/05/1997	सूर्य	04/10/1998	चंद्र	01/10/1999	मंगल	19/04/2002	राहु	25/07/2004

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
25/07/2004		04/04/2007		01/09/2007		31/10/2008		08/03/2009	
04/04/2007		01/09/2007		31/10/2008		08/03/2009		07/10/2009	
शनि	28/12/2004	केतु	13/04/2007	शुक्र	11/11/2007	सूर्य	06/11/2008	चंद्र	25/03/2009
बुध	16/05/2005	शुक्र	08/05/2007	सूर्य	02/12/2007	चंद्र	17/11/2008	मंगल	07/04/2009
केतु	13/07/2005	सूर्य	15/05/2007	चंद्र	06/01/2008	मंगल	24/11/2008	राहु	09/05/2009
शुक्र	23/12/2005	चंद्र	28/05/2007	मंगल	31/01/2008	राहु	13/12/2008	गुरु	06/06/2009
सूर्य	11/02/2006	मंगल	06/06/2007	राहु	04/04/2008	गुरु	30/12/2008	शनि	10/07/2009
चंद्र	04/05/2006	राहु	28/06/2007	गुरु	31/05/2008	शनि	20/01/2009	बुध	09/08/2009
मंगल	30/06/2006	गुरु	18/07/2007	शनि	06/08/2008	बुध	07/02/2009	केतु	21/08/2009
राहु	24/11/2006	शनि	10/08/2007	बुध	06/10/2008	केतु	14/02/2009	शुक्र	26/09/2009
गुरु	04/04/2007	बुध	01/09/2007	केतु	31/10/2008	शुक्र	08/03/2009	सूर्य	07/10/2009

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
07/10/2009		05/03/2010		23/03/2011		27/02/2012		07/04/2013	
05/03/2010		23/03/2011		27/02/2012		07/04/2013		04/04/2014	
मंगल	15/10/2009	राहु	01/05/2010	गुरु	08/05/2011	शनि	01/05/2012	बुध	28/05/2013
राहु	07/11/2009	गुरु	21/06/2010	शनि	01/07/2011	बुध	28/06/2012	केतु	18/06/2013
गुरु	27/11/2009	शनि	21/08/2010	बुध	18/08/2011	केतु	21/07/2012	शुक्र	18/08/2013
शनि	20/12/2009	बुध	14/10/2010	केतु	07/09/2011	शुक्र	27/09/2012	सूर्य	05/09/2013
बुध	10/01/2010	केतु	06/11/2010	शुक्र	03/11/2011	सूर्य	17/10/2012	चंद्र	05/10/2013
केतु	19/01/2010	शुक्र	09/01/2011	सूर्य	20/11/2011	चंद्र	20/11/2012	मंगल	26/10/2013
शुक्र	13/02/2010	सूर्य	28/01/2011	चंद्र	18/12/2011	मंगल	13/12/2012	राहु	20/12/2013
सूर्य	20/02/2010	चंद्र	01/03/2011	मंगल	07/01/2012	राहु	12/02/2013	गुरु	06/02/2014
चंद्र	05/03/2010	मंगल	23/03/2011	राहु	27/02/2012	गुरु	07/04/2013	शनि	04/04/2014

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
04/04/2014		04/08/2017		04/08/2018		04/04/2020		04/06/2021	
04/08/2017		04/08/2018		04/04/2020		04/06/2021		04/06/2024	
शुक्र	24/10/2014	सूर्य	22/08/2017	चंद्र	24/09/2018	मंगल	29/04/2020	राहु	15/11/2021
सूर्य	24/12/2014	चंद्र	21/09/2017	मंगल	29/10/2018	राहु	01/07/2020	गुरु	10/04/2022
चंद्र	04/04/2015	मंगल	13/10/2017	राहु	29/01/2019	गुरु	27/08/2020	शनि	01/10/2022
मंगल	14/06/2015	राहु	06/12/2017	गुरु	20/04/2019	शनि	03/11/2020	बुध	05/03/2023
राहु	14/12/2015	गुरु	24/01/2018	शनि	25/07/2019	बुध	02/01/2021	केतु	08/05/2023
गुरु	24/05/2016	शनि	23/03/2018	बुध	19/10/2019	केतु	27/01/2021	शुक्र	07/11/2023
शनि	03/12/2016	बुध	14/05/2018	केतु	24/11/2019	शुक्र	08/04/2021	सूर्य	31/12/2023
बुध	25/05/2017	केतु	04/06/2018	शुक्र	04/03/2020	सूर्य	29/04/2021	चंद्र	01/04/2024
केतु	04/08/2017	शुक्र	04/08/2018	सूर्य	04/04/2020	चंद्र	04/06/2021	मंगल	04/06/2024

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
04/06/2024		03/02/2027		04/04/2030		02/02/2033		04/04/2034	
03/02/2027		04/04/2030		02/02/2033		04/04/2034		23/07/2034	
गुरु	11/10/2024	शनि	05/08/2027	बुध	29/08/2030	केतु	27/02/2033	सूर्य	10/04/2034
शनि	15/03/2025	बुध	16/01/2028	केतु	28/10/2030	शुक्र	09/05/2033	चंद्र	19/04/2034
बुध	31/07/2025	केतु	23/03/2028	शुक्र	19/04/2031	सूर्य	30/05/2033	मंगल	25/04/2034
केतु	25/09/2025	शुक्र	02/10/2028	सूर्य	09/06/2031	चंद्र	05/07/2033	राहु	12/05/2034
शुक्र	07/03/2026	सूर्य	29/11/2028	चंद्र	04/09/2031	मंगल	30/07/2033	गुरु	26/05/2034
सूर्य	24/04/2026	चंद्र	05/03/2029	मंगल	03/11/2031	राहु	02/10/2033	शनि	13/06/2034
चंद्र	15/07/2026	मंगल	11/05/2029	राहु	06/04/2032	गुरु	27/11/2033	बुध	28/06/2034
मंगल	09/09/2026	राहु	01/11/2029	गुरु	22/08/2032	शनि	03/02/2034	केतु	05/07/2034
राहु	03/02/2027	गुरु	04/04/2030	शनि	02/02/2033	बुध	04/04/2034	शुक्र	23/07/2034

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
23/07/2034		21/01/2035		29/05/2035		22/04/2036		08/02/2037	
21/01/2035		29/05/2035		22/04/2036		08/02/2037		21/01/2038	
चंद्र	07/08/2034	मंगल	29/01/2035	राहु	18/07/2035	गुरु	31/05/2036	शनि	04/04/2037
मंगल	18/08/2034	राहु	17/02/2035	गुरु	30/08/2035	शनि	16/07/2036	बुध	23/05/2037
राहु	14/09/2034	गुरु	06/03/2035	शनि	21/10/2035	बुध	27/08/2036	केतु	12/06/2037
गुरु	08/10/2034	शनि	26/03/2035	बुध	07/12/2035	केतु	13/09/2036	शुक्र	09/08/2037
शनि	06/11/2034	बुध	13/04/2035	केतु	26/12/2035	शुक्र	31/10/2036	सूर्य	27/08/2037
बुध	02/12/2034	केतु	21/04/2035	शुक्र	19/02/2036	सूर्य	15/11/2036	चंद्र	25/09/2037
केतु	13/12/2034	शुक्र	12/05/2035	सूर्य	06/03/2036	चंद्र	09/12/2036	मंगल	15/10/2037
शुक्र	12/01/2035	सूर्य	19/05/2035	चंद्र	03/04/2036	मंगल	26/12/2036	राहु	06/12/2037
सूर्य	21/01/2035	चंद्र	29/05/2035	मंगल	22/04/2036	राहु	08/02/2037	गुरु	21/01/2038

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
21/01/2038		28/11/2038		04/04/2039		04/04/2040		02/02/2041	
28/11/2038		04/04/2039		04/04/2040		02/02/2041		03/09/2041	
बुध	06/03/2038	केतु	05/12/2038	शुक्र	04/06/2039	चंद्र	29/04/2040	मंगल	15/02/2041
केतु	24/03/2038	शुक्र	26/12/2038	सूर्य	23/06/2039	मंगल	17/05/2040	राहु	18/03/2041
शुक्र	15/05/2038	सूर्य	02/01/2039	चंद्र	23/07/2039	राहु	01/07/2040	गुरु	16/04/2041
सूर्य	31/05/2038	चंद्र	12/01/2039	मंगल	13/08/2039	गुरु	11/08/2040	शनि	20/05/2041
चंद्र	25/06/2038	मंगल	20/01/2039	राहु	07/10/2039	शनि	28/09/2040	बुध	19/06/2041
मंगल	13/07/2038	राहु	08/02/2039	गुरु	25/11/2039	बुध	10/11/2040	केतु	01/07/2041
राहु	29/08/2038	गुरु	25/02/2039	शनि	22/01/2040	केतु	28/11/2040	शुक्र	06/08/2041
गुरु	09/10/2038	शनि	17/03/2039	बुध	13/03/2040	शुक्र	18/01/2041	सूर्य	16/08/2041
शनि	28/11/2038	बुध	04/04/2039	केतु	04/04/2040	सूर्य	02/02/2041	चंद्र	03/09/2041

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
03/09/2041		05/03/2043		04/07/2044		02/02/2046		05/07/2047	
05/03/2043		04/07/2044		02/02/2046		05/07/2047		03/02/2048	
राहु	24/11/2041	गुरु	09/05/2043	शनि	04/10/2044	बुध	17/04/2046	केतु	17/07/2047
गुरु	05/02/2042	शनि	25/07/2043	बुध	25/12/2044	केतु	17/05/2046	शुक्र	22/08/2047
शनि	03/05/2042	बुध	02/10/2043	केतु	27/01/2045	शुक्र	11/08/2046	सूर्य	01/09/2047
बुध	20/07/2042	केतु	30/10/2043	शुक्र	04/05/2045	सूर्य	06/09/2046	चंद्र	19/09/2047
केतु	21/08/2042	शुक्र	20/01/2044	सूर्य	02/06/2045	चंद्र	19/10/2046	मंगल	02/10/2047
शुक्र	20/11/2042	सूर्य	13/02/2044	चंद्र	20/07/2045	मंगल	18/11/2046	राहु	02/11/2047
सूर्य	17/12/2042	चंद्र	25/03/2044	मंगल	22/08/2045	राहु	04/02/2047	गुरु	01/12/2047
चंद्र	01/02/2043	मंगल	22/04/2044	राहु	17/11/2045	गुरु	14/04/2047	शनि	04/01/2048
मंगल	05/03/2043	राहु	04/07/2044	गुरु	02/02/2046	शनि	05/07/2047	बुध	03/02/2048

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
03/02/2048		04/10/2049		04/04/2050		31/08/2050		19/09/2051	
04/10/2049		04/04/2050		31/08/2050		19/09/2051		25/08/2052	
शुक्र	14/05/2048	सूर्य	13/10/2049	मंगल	13/04/2050	राहु	28/10/2050	गुरु	03/11/2051
सूर्य	14/06/2048	चंद्र	28/10/2049	राहु	05/05/2050	गुरु	18/12/2050	शनि	27/12/2051
चंद्र	03/08/2048	मंगल	08/11/2049	गुरु	25/05/2050	शनि	17/02/2051	बुध	14/02/2052
मंगल	08/09/2048	राहु	05/12/2049	शनि	18/06/2050	बुध	12/04/2051	केतु	04/03/2052
राहु	08/12/2048	गुरु	29/12/2049	बुध	09/07/2050	केतु	04/05/2051	शुक्र	30/04/2052
गुरु	27/02/2049	शनि	27/01/2050	केतु	18/07/2050	शुक्र	07/07/2051	सूर्य	17/05/2052
शनि	04/06/2049	बुध	22/02/2050	शुक्र	11/08/2050	सूर्य	27/07/2051	चंद्र	15/06/2052
बुध	29/08/2049	केतु	05/03/2050	सूर्य	19/08/2050	चंद्र	27/08/2051	मंगल	05/07/2052
केतु	04/10/2049	शुक्र	04/04/2050	चंद्र	31/08/2050	मंगल	19/09/2051	राहु	25/08/2052

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
25/08/2052		04/10/2053		01/10/2054		27/02/2055		28/04/2056	
04/10/2053		01/10/2054		27/02/2055		28/04/2056		03/09/2056	
शनि	28/10/2052	बुध	24/11/2053	केतु	09/10/2054	शुक्र	09/05/2055	सूर्य	04/05/2056
बुध	24/12/2052	केतु	15/12/2053	शुक्र	03/11/2054	सूर्य	30/05/2055	चंद्र	15/05/2056
केतु	17/01/2053	शुक्र	13/02/2054	सूर्य	11/11/2054	चंद्र	05/07/2055	मंगल	23/05/2056
शुक्र	25/03/2053	सूर्य	03/03/2054	चंद्र	23/11/2054	मंगल	30/07/2055	राहु	11/06/2056
सूर्य	15/04/2053	चंद्र	03/04/2054	मंगल	02/12/2054	राहु	02/10/2055	गुरु	28/06/2056
चंद्र	18/05/2053	मंगल	24/04/2054	राहु	24/12/2054	गुरु	27/11/2055	शनि	18/07/2056
मंगल	11/06/2053	राहु	17/06/2054	गुरु	13/01/2055	शनि	03/02/2056	बुध	05/08/2056
राहु	11/08/2053	गुरु	04/08/2054	शनि	06/02/2055	बुध	03/04/2056	केतु	13/08/2056
गुरु	04/10/2053	शनि	01/10/2054	बुध	27/02/2055	केतु	28/04/2056	शुक्र	03/09/2056

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
03/09/2056		04/04/2057		16/12/2059		11/05/2062		17/03/2065	
04/04/2057		16/12/2059		11/05/2062		17/03/2065		04/10/2067	
चंद्र	21/09/2056	राहु	30/08/2057	गुरु	11/04/2060	शनि	23/10/2062	बुध	27/07/2065
मंगल	03/10/2056	गुरु	08/01/2058	शनि	28/08/2060	बुध	19/03/2063	केतु	19/09/2065
राहु	04/11/2056	शनि	14/06/2058	बुध	30/12/2060	केतु	19/05/2063	शुक्र	21/02/2066
गुरु	02/12/2056	बुध	31/10/2058	केतु	19/02/2061	शुक्र	08/11/2063	सूर्य	09/04/2066
शनि	05/01/2057	केतु	28/12/2058	शुक्र	15/07/2061	सूर्य	30/12/2063	चंद्र	25/06/2066
बुध	04/02/2057	शुक्र	10/06/2059	सूर्य	28/08/2061	चंद्र	26/03/2064	मंगल	19/08/2066
केतु	17/02/2057	सूर्य	29/07/2059	चंद्र	09/11/2061	मंगल	26/05/2064	राहु	05/01/2067
शुक्र	24/03/2057	चंद्र	20/10/2059	मंगल	30/12/2061	राहु	29/10/2064	गुरु	10/05/2067
सूर्य	04/04/2057	मंगल	16/12/2059	राहु	11/05/2062	गुरु	17/03/2065	शनि	04/10/2067

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
04/10/2067		22/10/2068		22/10/2071		15/09/2072		17/03/2074	
22/10/2068		22/10/2071		15/09/2072		17/03/2074		04/04/2075	
केतु	26/10/2067	शुक्र	22/04/2069	सूर्य	08/11/2071	चंद्र	31/10/2072	मंगल	08/04/2074
शुक्र	29/12/2067	सूर्य	16/06/2069	चंद्र	05/12/2071	मंगल	02/12/2072	राहु	05/06/2074
सूर्य	18/01/2068	चंद्र	15/09/2069	मंगल	24/12/2071	राहु	22/02/2073	गुरु	26/07/2074
चंद्र	18/02/2068	मंगल	18/11/2069	राहु	12/02/2072	गुरु	06/05/2073	शनि	25/09/2074
मंगल	12/03/2068	राहु	02/05/2070	गुरु	26/03/2072	शनि	01/08/2073	बुध	18/11/2074
राहु	08/05/2068	गुरु	25/09/2070	शनि	18/05/2072	बुध	17/10/2073	केतु	10/12/2074
गुरु	29/06/2068	शनि	17/03/2071	बुध	03/07/2072	केतु	18/11/2073	शुक्र	12/02/2075
शनि	28/08/2068	बुध	19/08/2071	केतु	22/07/2072	शुक्र	18/02/2074	सूर्य	03/03/2075
बुध	22/10/2068	केतु	22/10/2071	शुक्र	15/09/2072	सूर्य	17/03/2074	चंद्र	04/04/2075

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
04/04/2075		23/05/2077		04/12/2079		11/03/2082		15/02/2083	
23/05/2077		04/12/2079		11/03/2082		15/02/2083		16/10/2085	
गुरु	17/07/2075	शनि	16/10/2077	बुध	30/03/2080	केतु	31/03/2082	शुक्र	27/07/2083
शनि	18/11/2075	बुध	24/02/2078	केतु	18/05/2080	शुक्र	27/05/2082	सूर्य	14/09/2083
बुध	07/03/2076	केतु	19/04/2078	शुक्र	03/10/2080	सूर्य	13/06/2082	चंद्र	04/12/2083
केतु	22/04/2076	शुक्र	20/09/2078	सूर्य	13/11/2080	चंद्र	11/07/2082	मंगल	30/01/2084
शुक्र	29/08/2076	सूर्य	06/11/2078	चंद्र	21/01/2081	मंगल	31/07/2082	राहु	24/06/2084
सूर्य	07/10/2076	चंद्र	22/01/2079	मंगल	10/03/2081	राहु	20/09/2082	गुरु	01/11/2084
चंद्र	11/12/2076	मंगल	17/03/2079	राहु	12/07/2081	गुरु	04/11/2082	शनि	04/04/2085
मंगल	26/01/2077	राहु	03/08/2079	गुरु	31/10/2081	शनि	28/12/2082	बुध	20/08/2085
राहु	23/05/2077	गुरु	04/12/2079	शनि	11/03/2082	बुध	15/02/2083	केतु	16/10/2085

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
16/10/2085		04/08/2086		04/12/2087		09/11/2088		04/04/2091	
04/08/2086		04/12/2087		09/11/2088		04/04/2091		07/04/2094	
सूर्य	30/10/2085	चंद्र	14/09/2086	मंगल	24/12/2087	राहु	20/03/2089	शनि	25/09/2091
चंद्र	24/11/2085	मंगल	12/10/2086	राहु	13/02/2088	गुरु	15/07/2089	बुध	28/02/2092
मंगल	11/12/2085	राहु	24/12/2086	गुरु	29/03/2088	शनि	01/12/2089	केतु	02/05/2092
राहु	24/01/2086	गुरु	27/02/2087	शनि	22/05/2088	बुध	04/04/2090	शुक्र	01/11/2092
गुरु	04/03/2086	शनि	15/05/2087	बुध	10/07/2088	केतु	25/05/2090	सूर्य	26/12/2092
शनि	19/04/2086	बुध	23/07/2087	केतु	30/07/2088	शुक्र	18/10/2090	चंद्र	28/03/2093
बुध	30/05/2086	केतु	20/08/2087	शुक्र	24/09/2088	सूर्य	01/12/2090	मंगल	31/05/2093
केतु	16/06/2086	शुक्र	10/11/2087	सूर्य	11/10/2088	चंद्र	12/02/2091	राहु	12/11/2093
शुक्र	04/08/2086	सूर्य	04/12/2087	चंद्र	09/11/2088	मंगल	04/04/2091	गुरु	07/04/2094

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - गुरु - शुक्र	
25/09/2025 22:57	
07/03/2026 06:57	
शुक्र	23/10/2025 00:17
सूर्य	31/10/2025 03:05
चंद्र	13/11/2025 15:45
मंगल	23/11/2025 03:01
राहु	17/12/2025 11:25
गुरु	08/01/2026 02:53
शनि	02/02/2026 19:45
बुध	25/02/2026 19:41
केतु	07/03/2026 06:57

शुक्र - गुरु - सूर्य	
07/03/2026 06:57	
24/04/2026 23:45	
सूर्य	09/03/2026 17:24
चंद्र	13/03/2026 18:48
मंगल	16/03/2026 14:59
राहु	23/03/2026 22:18
गुरु	30/03/2026 10:08
शनि	07/04/2026 03:12
बुध	14/04/2026 00:47
केतु	16/04/2026 20:57
शुक्र	24/04/2026 23:45

शुक्र - गुरु - चंद्र	
24/04/2026 23:45	
15/07/2026 03:45	
चंद्र	01/05/2026 18:05
मंगल	06/05/2026 11:43
राहु	18/05/2026 15:55
गुरु	29/05/2026 11:39
शनि	11/06/2026 08:05
बुध	22/06/2026 20:03
केतु	27/06/2026 13:41
शुक्र	11/07/2026 02:21
सूर्य	15/07/2026 03:45

शुक्र - गुरु - मंगल	
15/07/2026 03:45	
09/09/2026 23:21	
मंगल	18/07/2026 11:18
राहु	26/07/2026 23:50
गुरु	03/08/2026 13:39
शनि	12/08/2026 13:33
बुध	20/08/2026 14:44
केतु	23/08/2026 22:17
शुक्र	02/09/2026 09:33
सूर्य	05/09/2026 05:43
चंद्र	09/09/2026 23:21

शुक्र - गुरु - राहु	
09/09/2026 23:21	
03/02/2027 01:45	
राहु	01/10/2026 21:19
गुरु	21/10/2026 08:50
शनि	13/11/2026 12:01
बुध	04/12/2026 04:45
केतु	12/12/2026 17:18
शुक्र	06/01/2027 01:42
सूर्य	13/01/2027 09:01
चंद्र	25/01/2027 13:13
मंगल	03/02/2027 01:45

शुक्र - शनि - शनि	
03/02/2027 01:45	
05/08/2027 04:56	
शनि	04/03/2027 01:40
बुध	30/03/2027 00:19
केतु	09/04/2027 16:42
शुक्र	10/05/2027 05:13
सूर्य	19/05/2027 08:59
चंद्र	03/06/2027 15:15
मंगल	14/06/2027 07:38
राहु	11/07/2027 18:55
गुरु	05/08/2027 04:56

शुक्र - शनि - बुध	
05/08/2027 04:56	
16/01/2028 01:27	
बुध	28/08/2027 10:02
केतु	06/09/2027 23:26
शुक्र	04/10/2027 06:51
सूर्य	12/10/2027 11:29
चंद्र	26/10/2027 03:12
मंगल	04/11/2027 16:35
राहु	29/11/2027 06:28
गुरु	21/12/2027 02:48
शनि	16/01/2028 01:27

शुक्र - शनि - केतु	
16/01/2028 01:27	
23/03/2028 12:44	
केतु	19/01/2028 23:55
शुक्र	31/01/2028 05:48
सूर्य	03/02/2028 14:45
चंद्र	09/02/2028 05:42
मंगल	13/02/2028 04:09
राहु	23/02/2028 07:03
गुरु	03/03/2028 06:57
शनि	13/03/2028 23:20
बुध	23/03/2028 12:44

शुक्र - शनि - शुक्र	
23/03/2028 12:44	
02/10/2028 07:14	
शुक्र	24/04/2028 15:49
सूर्य	04/05/2028 07:08
चंद्र	20/05/2028 08:41
मंगल	31/05/2028 14:34
राहु	29/06/2028 12:32
गुरु	25/07/2028 05:24
शनि	24/08/2028 17:56
बुध	21/09/2028 01:21
केतु	02/10/2028 07:14

शुक्र - शनि - सूर्य	
02/10/2028 07:14	
29/11/2028 03:11	
सूर्य	05/10/2028 04:38
चंद्र	10/10/2028 00:18
मंगल	13/10/2028 09:15
राहु	22/10/2028 01:27
गुरु	29/10/2028 18:30
शनि	07/11/2028 22:16
बुध	16/11/2028 02:54
केतु	19/11/2028 11:51
शुक्र	29/11/2028 03:11

शुक्र - शनि - चंद्र	
29/11/2028 03:11	
05/03/2029 12:26	
चंद्र	07/12/2028 03:57
मंगल	12/12/2028 18:54
राहु	27/12/2028 05:53
गुरु	09/01/2029 02:19
शनि	24/01/2029 08:35
बुध	07/02/2029 00:17
केतु	12/02/2029 15:14
शुक्र	28/02/2029 16:46
सूर्य	05/03/2029 12:26

शुक्र - शनि - मंगल	
05/03/2029 12:26	
11/05/2029 23:42	
मंगल	09/03/2029 10:53
राहु	19/03/2029 13:47
गुरु	28/03/2029 13:41
शनि	08/04/2029 06:04
बुध	17/04/2029 19:28
केतु	21/04/2029 17:55
शुक्र	02/05/2029 23:48
सूर्य	06/05/2029 08:46
चंद्र	11/05/2029 23:42

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - शनि - राहु	
11/05/2029 23:42	
01/11/2029 11:33	
राहु	07/06/2029 00:17
गुरु	30/06/2029 03:28
शनि	27/07/2029 14:44
बुध	21/08/2029 04:37
केतु	31/08/2029 07:31
शुक्र	29/09/2029 05:29
सूर्य	07/10/2029 21:41
चंद्र	22/10/2029 08:40
मंगल	01/11/2029 11:33

शुक्र - शनि - गुरु	
01/11/2029 11:33	
04/04/2030 16:45	
गुरु	22/11/2029 01:03
शनि	16/12/2029 11:04
बुध	07/01/2030 07:25
केतु	16/01/2030 07:19
शुक्र	11/02/2030 00:11
सूर्य	18/02/2030 17:14
चंद्र	03/03/2030 13:40
मंगल	12/03/2030 13:35
राहु	04/04/2030 16:45

शुक्र - बुध - बुध	
04/04/2030 16:45	
29/08/2030 07:20	
बुध	25/04/2030 11:13
केतु	04/05/2030 00:28
शुक्र	28/05/2030 10:54
सूर्य	04/06/2030 18:50
चंद्र	17/06/2030 00:03
मंगल	25/06/2030 13:18
राहु	17/07/2030 13:05
गुरु	06/08/2030 02:13
शनि	29/08/2030 07:20

शुक्र - बुध - केतु	
29/08/2030 07:20	
28/10/2030 16:09	
केतु	01/09/2030 19:51
शुक्र	11/09/2030 21:19
सूर्य	14/09/2030 21:46
चंद्र	19/09/2030 22:30
मंगल	23/09/2030 11:01
राहु	02/10/2030 12:20
गुरु	10/10/2030 13:31
शनि	20/10/2030 02:54
बुध	28/10/2030 16:09

शुक्र - बुध - शुक्र	
28/10/2030 16:09	
19/04/2031 03:39	
शुक्र	26/11/2030 10:04
सूर्य	05/12/2030 01:03
चंद्र	19/12/2030 10:00
मंगल	29/12/2030 11:29
राहु	24/01/2031 08:24
गुरु	16/02/2031 08:20
शनि	15/03/2031 15:45
बुध	09/04/2031 02:11
केतु	19/04/2031 03:39

शुक्र - बुध - सूर्य	
19/04/2031 03:39	
09/06/2031 21:30	
सूर्य	21/04/2031 17:45
चंद्र	26/04/2031 01:14
मंगल	29/04/2031 01:41
राहु	06/05/2031 19:57
गुरु	13/05/2031 17:32
शनि	21/05/2031 22:10
बुध	29/05/2031 06:05
केतु	01/06/2031 06:32
शुक्र	09/06/2031 21:30

शुक्र - बुध - चंद्र	
09/06/2031 21:30	
04/09/2031 03:15	
चंद्र	17/06/2031 01:59
मंगल	22/06/2031 02:43
राहु	05/07/2031 01:11
गुरु	16/07/2031 13:09
शनि	30/07/2031 04:52
बुध	11/08/2031 10:05
केतु	16/08/2031 10:49
शुक्र	30/08/2031 19:46
सूर्य	04/09/2031 03:15

शुक्र - बुध - मंगल	
04/09/2031 03:15	
03/11/2031 12:05	
मंगल	07/09/2031 15:46
राहु	16/09/2031 17:06
गुरु	24/09/2031 18:16
शनि	04/10/2031 07:40
बुध	12/10/2031 20:55
केतु	16/10/2031 09:26
शुक्र	26/10/2031 10:54
सूर्य	29/10/2031 11:21
चंद्र	03/11/2031 12:05

शुक्र - बुध - राहु	
03/11/2031 12:05	
06/04/2032 17:38	
राहु	26/11/2031 18:55
गुरु	17/12/2031 11:39
शनि	11/01/2032 01:32
बुध	02/02/2032 01:19
केतु	11/02/2032 02:39
शुक्र	07/03/2032 23:34
सूर्य	15/03/2032 17:51
चंद्र	28/03/2032 16:18
मंगल	06/04/2032 17:38

शुक्र - बुध - गुरु	
06/04/2032 17:38	
22/08/2032 17:14	
गुरु	25/04/2032 03:11
शनि	16/05/2032 23:31
बुध	05/06/2032 12:40
केतु	13/06/2032 13:50
शुक्र	06/07/2032 13:46
सूर्य	13/07/2032 11:21
चंद्र	24/07/2032 23:19
मंगल	02/08/2032 00:30
राहु	22/08/2032 17:14

शुक्र - बुध - शनि	
22/08/2032 17:14	
02/02/2033 13:45	
शनि	17/09/2032 15:53
बुध	10/10/2032 20:59
केतु	20/10/2032 10:23
शुक्र	16/11/2032 17:48
सूर्य	24/11/2032 22:26
चंद्र	08/12/2032 14:09
मंगल	18/12/2032 03:32
राहु	11/01/2033 17:25
गुरु	02/02/2033 13:45

शुक्र - केतु - केतु	
02/02/2033 13:45	
27/02/2033 10:20	
केतु	04/02/2033 00:33
शुक्र	08/02/2033 03:59
सूर्य	09/02/2033 09:49
चंद्र	11/02/2033 11:32
मंगल	12/02/2033 22:20
राहु	16/02/2033 15:49
गुरु	19/02/2033 23:22
शनि	23/02/2033 21:49
बुध	27/02/2033 10:20

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शुक्र - केतु - शुक्र		शुक्र - केतु - सूर्य		शुक्र - केतु - चंद्र		शुक्र - केतु - मंगल	
27/02/2033 10:20		09/05/2033 10:50		30/05/2033 18:11		05/07/2033 06:26	
09/05/2033 10:50		30/05/2033 18:11		05/07/2033 06:26		30/07/2033 03:00	
शुक्र	11/03/2033 06:25	सूर्य	10/05/2033 12:24	चंद्र	02/06/2033 17:12	मंगल	06/07/2033 17:14
सूर्य	14/03/2033 19:38	चंद्र	12/05/2033 07:01	मंगल	04/06/2033 18:55	राहु	10/07/2033 10:43
चंद्र	20/03/2033 17:41	मंगल	13/05/2033 12:50	राहु	10/06/2033 02:45	गुरु	13/07/2033 18:16
मंगल	24/03/2033 21:07	राहु	16/05/2033 17:33	गुरु	14/06/2033 20:23	शनि	17/07/2033 16:43
राहु	04/04/2033 12:47	गुरु	19/05/2033 13:43	शनि	20/06/2033 11:20	बुध	21/07/2033 05:14
गुरु	14/04/2033 00:03	शनि	22/05/2033 22:41	बुध	25/06/2033 12:04	केतु	22/07/2033 16:02
शनि	25/04/2033 05:56	बुध	25/05/2033 23:08	केतु	27/06/2033 13:47	शुक्र	26/07/2033 19:28
बुध	05/05/2033 07:24	केतु	27/05/2033 04:57	शुक्र	03/07/2033 11:49	सूर्य	28/07/2033 01:18
केतु	09/05/2033 10:50	शुक्र	30/05/2033 18:11	सूर्य	05/07/2033 06:26	चंद्र	30/07/2033 03:00

शुक्र - केतु - राहु		शुक्र - केतु - गुरु		शुक्र - केतु - शनि		शुक्र - केतु - बुध	
30/07/2033 03:00		02/10/2033 01:03		27/11/2033 20:39		03/02/2034 07:56	
02/10/2033 01:03		27/11/2033 20:39		03/02/2034 07:56		04/04/2034 16:45	
राहु	08/08/2033 17:07	गुरु	09/10/2033 14:52	शनि	08/12/2033 13:03	बुध	11/02/2034 21:11
गुरु	17/08/2033 05:39	शनि	18/10/2033 14:46	बुध	18/12/2033 02:26	केतु	15/02/2034 09:42
शनि	27/08/2033 08:33	बुध	26/10/2033 15:57	केतु	22/12/2033 00:54	शुक्र	25/02/2034 11:10
बुध	05/09/2033 09:52	केतु	29/10/2033 23:30	शुक्र	02/01/2034 06:47	सूर्य	28/02/2034 11:37
केतु	09/09/2033 03:21	शुक्र	08/11/2033 10:46	सूर्य	05/01/2034 15:44	चंद्र	05/03/2034 12:21
शुक्र	19/09/2033 19:02	सूर्य	11/11/2033 06:56	चंद्र	11/01/2034 06:41	मंगल	09/03/2034 00:52
सूर्य	22/09/2033 23:44	चंद्र	16/11/2033 00:34	मंगल	15/01/2034 05:08	राहु	18/03/2034 02:11
चंद्र	28/09/2033 07:34	मंगल	19/11/2033 08:07	राहु	25/01/2034 08:02	गुरु	26/03/2034 03:22
मंगल	02/10/2033 01:03	राहु	27/11/2033 20:39	गुरु	03/02/2034 07:56	शनि	04/04/2034 16:45

सूर्य - सूर्य - सूर्य		सूर्य - सूर्य - चंद्र		सूर्य - सूर्य - मंगल		सूर्य - सूर्य - राहु	
04/04/2034 16:45		10/04/2034 04:15		19/04/2034 07:24		25/04/2034 16:48	
10/04/2034 04:15		19/04/2034 07:24		25/04/2034 16:48		12/05/2034 03:16	
सूर्य	04/04/2034 23:20	चंद्र	10/04/2034 22:31	मंगल	19/04/2034 16:21	राहु	28/04/2034 03:58
चंद्र	05/04/2034 10:17	मंगल	11/04/2034 11:18	राहु	20/04/2034 15:21	गुरु	30/04/2034 08:34
मंगल	05/04/2034 17:58	राहु	12/04/2034 20:10	गुरु	21/04/2034 11:49	शनि	02/05/2034 23:02
राहु	06/04/2034 13:41	गुरु	14/04/2034 01:23	शनि	22/04/2034 12:06	बुध	05/05/2034 06:55
गुरु	07/04/2034 07:13	शनि	15/04/2034 12:05	बुध	23/04/2034 09:50	केतु	06/05/2034 05:55
शनि	08/04/2034 04:02	बुध	16/04/2034 19:08	केतु	23/04/2034 18:47	शुक्र	08/05/2034 23:40
बुध	08/04/2034 22:40	केतु	17/04/2034 07:55	शुक्र	24/04/2034 20:21	सूर्य	09/05/2034 19:23
केतु	09/04/2034 06:20	शुक्र	18/04/2034 20:26	सूर्य	25/04/2034 04:01	चंद्र	11/05/2034 04:16
शुक्र	10/04/2034 04:15	सूर्य	19/04/2034 07:24	चंद्र	25/04/2034 16:48	मंगल	12/05/2034 03:16

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

सूर्य - सूर्य - गुरु	
12/05/2034 03:16	
26/05/2034 17:55	
गुरु	14/05/2034 02:01
शनि	16/05/2034 09:33
बुध	18/05/2034 11:13
केतु	19/05/2034 07:40
शुक्र	21/05/2034 18:07
सूर्य	22/05/2034 11:39
चंद्र	23/05/2034 16:52
मंगल	24/05/2034 13:19
राहु	26/05/2034 17:55

सूर्य - सूर्य - शनि	
26/05/2034 17:55	
13/06/2034 02:18	
शनि	29/05/2034 11:50
बुध	31/05/2034 22:50
केतु	01/06/2034 23:07
शुक्र	04/06/2034 20:31
सूर्य	05/06/2034 17:20
चंद्र	07/06/2034 04:02
मंगल	08/06/2034 04:19
राहु	10/06/2034 18:47
गुरु	13/06/2034 02:18

सूर्य - सूर्य - बुध	
13/06/2034 02:18	
28/06/2034 14:51	
बुध	15/06/2034 07:05
केतु	16/06/2034 04:48
शुक्र	18/06/2034 18:54
सूर्य	19/06/2034 13:32
चंद्र	20/06/2034 20:34
मंगल	21/06/2034 18:18
राहु	24/06/2034 02:11
गुरु	26/06/2034 03:52
शनि	28/06/2034 14:51

सूर्य - सूर्य - केतु	
28/06/2034 14:51	
05/07/2034 00:15	
केतु	28/06/2034 23:48
शुक्र	30/06/2034 01:22
सूर्य	30/06/2034 09:02
चंद्र	30/06/2034 21:49
मंगल	01/07/2034 06:46
राहु	02/07/2034 05:47
गुरु	03/07/2034 02:14
शनि	04/07/2034 02:31
बुध	05/07/2034 00:15

सूर्य - सूर्य - शुक्र	
05/07/2034 00:15	
23/07/2034 06:33	
शुक्र	08/07/2034 01:18
सूर्य	08/07/2034 23:13
चंद्र	10/07/2034 11:45
मंगल	11/07/2034 13:19
राहु	14/07/2034 07:04
गुरु	16/07/2034 17:30
शनि	19/07/2034 14:54
बुध	22/07/2034 04:59
केतु	23/07/2034 06:33

सूर्य - चंद्र - चंद्र	
23/07/2034 06:33	
07/08/2034 11:48	
चंद्र	24/07/2034 13:00
मंगल	25/07/2034 10:18
राहु	27/07/2034 17:05
गुरु	29/07/2034 17:47
शनि	01/08/2034 03:37
बुध	03/08/2034 07:22
केतु	04/08/2034 04:40
शुक्र	06/08/2034 17:33
सूर्य	07/08/2034 11:48

सूर्य - चंद्र - मंगल	
07/08/2034 11:48	
18/08/2034 03:29	
मंगल	08/08/2034 02:43
राहु	09/08/2034 17:04
गुरु	11/08/2034 03:10
शनि	12/08/2034 19:39
बुध	14/08/2034 07:52
केतु	14/08/2034 22:47
शुक्र	16/08/2034 17:24
सूर्य	17/08/2034 06:11
चंद्र	18/08/2034 03:29

सूर्य - चंद्र - राहु	
18/08/2034 03:29	
14/09/2034 12:56	
राहु	22/08/2034 06:06
गुरु	25/08/2034 21:46
शनि	30/08/2034 05:51
बुध	03/09/2034 03:00
केतु	04/09/2034 17:21
शुक्र	09/09/2034 06:55
सूर्य	10/09/2034 15:48
चंद्र	12/09/2034 22:35
मंगल	14/09/2034 12:56

सूर्य - चंद्र - गुरु	
14/09/2034 12:56	
08/10/2034 21:20	
गुरु	17/09/2034 18:51
शनि	21/09/2034 15:23
बुध	25/09/2034 02:10
केतु	26/09/2034 12:16
शुक्र	30/09/2034 13:40
सूर्य	01/10/2034 18:53
चंद्र	03/10/2034 19:35
मंगल	05/10/2034 05:40
राहु	08/10/2034 21:20

सूर्य - चंद्र - शनि	
08/10/2034 21:20	
06/11/2034 19:18	
शनि	13/10/2034 11:13
बुध	17/10/2034 13:31
केतु	19/10/2034 06:00
शुक्र	24/10/2034 01:40
सूर्य	25/10/2034 12:22
चंद्र	27/10/2034 22:12
मंगल	29/10/2034 14:41
राहु	02/11/2034 22:47
गुरु	06/11/2034 19:18

सूर्य - चंद्र - बुध	
06/11/2034 19:18	
02/12/2034 16:14	
बुध	10/11/2034 11:16
केतु	11/11/2034 23:30
शुक्र	16/11/2034 06:59
सूर्य	17/11/2034 14:02
चंद्र	19/11/2034 17:46
मंगल	21/11/2034 05:59
राहु	25/11/2034 03:08
गुरु	28/11/2034 13:55
शनि	02/12/2034 16:14

सूर्य - चंद्र - केतु	
02/12/2034 16:14	
13/12/2034 07:54	
केतु	03/12/2034 07:09
शुक्र	05/12/2034 01:46
सूर्य	05/12/2034 14:33
चंद्र	06/12/2034 11:51
मंगल	07/12/2034 02:46
राहु	08/12/2034 17:07
गुरु	10/12/2034 03:12
शनि	11/12/2034 19:41
बुध	13/12/2034 07:54

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - गुरु - शुक्र - शनि	
08/01/2026 02:53	
02/02/2026 19:45	
शनि	12/01/2026 04:34
बुध	15/01/2026 19:57
केतु	17/01/2026 07:56
शुक्र	21/01/2026 14:45
सूर्य	22/01/2026 21:35
चंद्र	25/01/2026 01:00
मंगल	26/01/2026 12:59
राहु	30/01/2026 09:30
गुरु	02/02/2026 19:45

शुक्र - गुरु - शुक्र - बुध	
02/02/2026 19:45	
25/02/2026 19:41	
बुध	06/02/2026 01:57
केतु	07/02/2026 10:09
शुक्र	11/02/2026 06:08
सूर्य	12/02/2026 09:44
चंद्र	14/02/2026 07:43
मंगल	15/02/2026 15:55
राहु	19/02/2026 02:43
गुरु	22/02/2026 04:18
शनि	25/02/2026 19:41

शुक्र - गुरु - शुक्र - केतु	
25/02/2026 19:41	
07/03/2026 06:57	
केतु	26/02/2026 08:57
शुक्र	27/02/2026 22:50
सूर्य	28/02/2026 10:11
चंद्र	01/03/2026 05:08
मंगल	01/03/2026 18:23
राहु	03/03/2026 04:28
गुरु	04/03/2026 10:47
शनि	05/03/2026 22:46
बुध	07/03/2026 06:57

शुक्र - गुरु - सूर्य - सूर्य	
07/03/2026 06:57	
09/03/2026 17:24	
सूर्य	07/03/2026 09:53
चंद्र	07/03/2026 14:45
मंगल	07/03/2026 18:09
राहु	08/03/2026 02:55
गुरु	08/03/2026 10:43
शनि	08/03/2026 19:58
बुध	09/03/2026 04:15
केतु	09/03/2026 07:39
शुक्र	09/03/2026 17:24

शुक्र - गुरु - सूर्य - चंद्र	
09/03/2026 17:24	
13/03/2026 18:48	
चंद्र	10/03/2026 01:31
मंगल	10/03/2026 07:12
राहु	10/03/2026 21:48
गुरु	11/03/2026 10:48
शनि	12/03/2026 02:13
बुध	12/03/2026 16:01
केतु	12/03/2026 21:42
शुक्र	13/03/2026 13:56
सूर्य	13/03/2026 18:48

शुक्र - गुरु - सूर्य - मंगल	
13/03/2026 18:48	
16/03/2026 14:59	
मंगल	13/03/2026 22:46
राहु	14/03/2026 09:00
गुरु	14/03/2026 18:05
शनि	15/03/2026 04:53
बुध	15/03/2026 14:33
केतु	15/03/2026 18:31
शुक्र	16/03/2026 05:53
सूर्य	16/03/2026 09:18
चंद्र	16/03/2026 14:59

शुक्र - गुरु - सूर्य - राहु	
16/03/2026 14:59	
23/03/2026 22:18	
राहु	17/03/2026 17:16
गुरु	18/03/2026 16:39
शनि	19/03/2026 20:25
बुध	20/03/2026 21:15
केतु	21/03/2026 07:28
शुक्र	22/03/2026 12:42
सूर्य	22/03/2026 21:28
चंद्र	23/03/2026 12:04
मंगल	23/03/2026 22:18

शुक्र - गुरु - सूर्य - गुरु	
23/03/2026 22:18	
30/03/2026 10:08	
गुरु	24/03/2026 19:05
शनि	25/03/2026 19:45
बुध	26/03/2026 17:50
केतु	27/03/2026 02:55
शुक्र	28/03/2026 04:53
सूर्य	28/03/2026 12:41
चंद्र	29/03/2026 01:40
मंगल	29/03/2026 10:46
राहु	30/03/2026 10:08

शुक्र - गुरु - सूर्य - शनि	
30/03/2026 10:08	
07/04/2026 03:12	
शनि	31/03/2026 15:26
बुध	01/04/2026 17:39
केतु	02/04/2026 04:27
शुक्र	03/04/2026 11:18
सूर्य	03/04/2026 20:33
चंद्र	04/04/2026 11:58
मंगल	04/04/2026 22:46
राहु	06/04/2026 02:31
गुरु	07/04/2026 03:12

शुक्र - गुरु - सूर्य - बुध	
07/04/2026 03:12	
14/04/2026 00:47	
बुध	08/04/2026 02:39
केतु	08/04/2026 12:19
शुक्र	09/04/2026 15:55
सूर्य	10/04/2026 00:11
चंद्र	10/04/2026 13:59
मंगल	10/04/2026 23:39
राहु	12/04/2026 00:29
गुरु	12/04/2026 22:34
शनि	14/04/2026 00:47

शुक्र - गुरु - सूर्य - केतु	
14/04/2026 00:47	
16/04/2026 20:57	
केतु	14/04/2026 04:45
शुक्र	14/04/2026 16:07
सूर्य	14/04/2026 19:32
चंद्र	15/04/2026 01:12
मंगल	15/04/2026 05:11
राहु	15/04/2026 15:25
गुरु	16/04/2026 00:30
शनि	16/04/2026 11:18
बुध	16/04/2026 20:57

शुक्र - गुरु - सूर्य - शुक्र	
16/04/2026 20:57	
24/04/2026 23:45	
शुक्र	18/04/2026 05:25
सूर्य	18/04/2026 15:10
चंद्र	19/04/2026 07:24
मंगल	19/04/2026 18:46
राहु	20/04/2026 23:59
गुरु	22/04/2026 01:57
शनि	23/04/2026 08:48
बुध	24/04/2026 12:24
केतु	24/04/2026 23:45

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शुक्र - गुरु - चंद्र - चंद्र	
24/04/2026 23:45	
01/05/2026 18:05	
चंद्र	25/04/2026 13:17
मंगल	25/04/2026 22:45
राहु	26/04/2026 23:06
गुरु	27/04/2026 20:45
शनि	28/04/2026 22:27
बुध	29/04/2026 21:27
केतु	30/04/2026 06:55
शुक्र	01/05/2026 09:58
सूर्य	01/05/2026 18:05

शुक्र - गुरु - चंद्र - मंगल	
01/05/2026 18:05	
06/05/2026 11:43	
मंगल	02/05/2026 00:43
राहु	02/05/2026 17:46
गुरु	03/05/2026 08:55
शनि	04/05/2026 02:54
बुध	04/05/2026 19:00
केतु	05/05/2026 01:38
शुक्र	05/05/2026 20:34
सूर्य	06/05/2026 02:15
चंद्र	06/05/2026 11:43

शुक्र - गुरु - चंद्र - राहु	
06/05/2026 11:43	
18/05/2026 15:55	
राहु	08/05/2026 07:33
गुरु	09/05/2026 22:31
शनि	11/05/2026 20:47
बुध	13/05/2026 14:10
केतु	14/05/2026 07:13
शुक्र	16/05/2026 07:55
सूर्य	16/05/2026 22:32
चंद्र	17/05/2026 22:53
मंगल	18/05/2026 15:55

शुक्र - गुरु - चंद्र - गुरु	
18/05/2026 15:55	
29/05/2026 11:39	
गुरु	20/05/2026 02:33
शनि	21/05/2026 19:41
बुध	23/05/2026 08:28
केतु	23/05/2026 23:38
शुक्र	25/05/2026 18:55
सूर्य	26/05/2026 07:54
चंद्र	27/05/2026 05:33
मंगल	27/05/2026 20:42
राहु	29/05/2026 11:39

शुक्र - गुरु - चंद्र - शनि	
29/05/2026 11:39	
11/06/2026 08:05	
शनि	31/05/2026 12:30
बुध	02/06/2026 08:11
केतु	03/06/2026 02:11
शुक्र	05/06/2026 05:35
सूर्य	05/06/2026 21:00
चंद्र	06/06/2026 22:43
मंगल	07/06/2026 16:42
राहु	09/06/2026 14:58
गुरु	11/06/2026 08:05

शुक्र - गुरु - चंद्र - बुध	
11/06/2026 08:05	
22/06/2026 20:03	
बुध	12/06/2026 23:11
केतु	13/06/2026 15:17
शुक्र	15/06/2026 13:17
सूर्य	16/06/2026 03:05
चंद्र	17/06/2026 02:04
मंगल	17/06/2026 18:10
राहु	19/06/2026 11:34
गुरु	21/06/2026 00:22
शनि	22/06/2026 20:03

शुक्र - गुरु - चंद्र - केतु	
22/06/2026 20:03	
27/06/2026 13:41	
केतु	23/06/2026 02:41
शुक्र	23/06/2026 21:37
सूर्य	24/06/2026 03:18
चंद्र	24/06/2026 12:47
मंगल	24/06/2026 19:24
राहु	25/06/2026 12:27
गुरु	26/06/2026 03:36
शनि	26/06/2026 21:36
बुध	27/06/2026 13:41

शुक्र - गुरु - चंद्र - शुक्र	
27/06/2026 13:41	
11/07/2026 02:21	
शुक्र	29/06/2026 19:48
सूर्य	30/06/2026 12:02
चंद्र	01/07/2026 15:05
मंगल	02/07/2026 10:02
राहु	04/07/2026 10:44
गुरु	06/07/2026 06:01
शनि	08/07/2026 09:25
बुध	10/07/2026 07:25
केतु	11/07/2026 02:21

शुक्र - गुरु - चंद्र - सूर्य	
11/07/2026 02:21	
15/07/2026 03:45	
सूर्य	11/07/2026 07:14
चंद्र	11/07/2026 15:21
मंगल	11/07/2026 21:02
राहु	12/07/2026 11:38
गुरु	13/07/2026 00:37
शनि	13/07/2026 16:03
बुध	14/07/2026 05:51
केतु	14/07/2026 11:31
शुक्र	15/07/2026 03:45

शुक्र - गुरु - मंगल - मंगल	
15/07/2026 03:45	
18/07/2026 11:18	
मंगल	15/07/2026 08:24
राहु	15/07/2026 20:20
गुरु	16/07/2026 06:56
शनि	16/07/2026 19:32
बुध	17/07/2026 06:48
केतु	17/07/2026 11:26
शुक्र	18/07/2026 00:42
सूर्य	18/07/2026 04:40
चंद्र	18/07/2026 11:18

शुक्र - गुरु - मंगल - राहु	
18/07/2026 11:18	
26/07/2026 23:50	
राहु	19/07/2026 17:59
गुरु	20/07/2026 21:15
शनि	22/07/2026 05:38
बुध	23/07/2026 10:37
केतु	23/07/2026 22:33
शुक्र	25/07/2026 08:38
सूर्य	25/07/2026 18:52
चंद्र	26/07/2026 11:55
मंगल	26/07/2026 23:50

शुक्र - गुरु - मंगल - गुरु	
26/07/2026 23:50	
03/08/2026 13:39	
गुरु	28/07/2026 00:05
शनि	29/07/2026 04:52
बुध	30/07/2026 06:38
केतु	30/07/2026 17:14
शुक्र	31/07/2026 23:32
सूर्य	01/08/2026 08:37
चंद्र	01/08/2026 23:47
मंगल	02/08/2026 10:23
राहु	03/08/2026 13:39

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 3 वर्ष 2 मास 27 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
09/07/1985		05/10/1988		05/10/2002		05/10/2017		05/10/2033	
05/10/1988		05/10/2002		05/10/2017		05/10/2033		05/10/2050	
	00/00/0000	शनि	14/06/1990	केतु	13/09/2004	चंद्र	20/12/2019	बुध	02/04/2036
	00/00/0000	केतु	05/04/1992	चंद्र	08/10/2006	बुध	25/04/2022	शुक्र	22/11/2038
	00/00/0000	चंद्र	11/03/1994	बुध	19/12/2008	शुक्र	17/10/2024	सूर्य	02/07/2040
	00/00/0000	बुध	30/03/1996	शुक्र	18/04/2011	सूर्य	25/04/2026	मंगल	06/04/2042
	09/07/1985	शुक्र	01/06/1998	सूर्य	19/09/2012	मंगल	20/12/2027	गुरु	02/03/2044
शुक्र	08/03/1986	सूर्य	29/09/1999	मंगल	09/04/2014	गुरु	05/10/2029	शनि	21/03/2046
सूर्य	02/06/1987	मंगल	11/03/2001	गुरु	14/12/2015	शनि	10/09/2031	केतु	01/06/2048
मंगल	05/10/1988	गुरु	05/10/2002	शनि	05/10/2017	केतु	05/10/2033	चंद्र	05/10/2050

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
05/10/2050		05/10/2068		06/10/2079		06/10/2091	
05/10/2068		06/10/2079		06/10/2091		00/00/0000	
शुक्र	21/07/2053	सूर्य	21/10/2069	मंगल	01/01/2081	गुरु	21/03/2093
सूर्य	06/04/2055	मंगल	10/12/2070	गुरु	07/05/2082	शनि	15/10/2094
मंगल	14/02/2057	गुरु	05/03/2072	शनि	18/10/2083	केतु	20/06/2096
गुरु	21/02/2059	शनि	03/07/2073	केतु	07/05/2085	चंद्र	06/04/2098
शनि	24/04/2061	केतु	04/12/2074	चंद्र	01/01/2087	बुध	03/03/2100
केतु	22/08/2063	चंद्र	10/06/2076	बुध	05/10/2088	शुक्र	10/07/2101
चंद्र	14/02/2066	बुध	20/01/2078	शुक्र	16/08/2090		00/00/0000
बुध	05/10/2068	शुक्र	06/10/2079	सूर्य	06/10/2091		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
09/07/1985		08/03/1986		02/06/1987		05/10/1988		14/06/1990	
08/03/1986		02/06/1987		05/10/1988		14/06/1990		05/04/1992	
	00/00/0000	सूर्य	20/04/1986	मंगल	22/07/1987	शनि	18/12/1988	केतु	07/09/1990
	00/00/0000	मंगल	06/06/1986	गुरु	15/09/1987	केतु	08/03/1989	चंद्र	08/12/1990
	00/00/0000	गुरु	26/07/1986	शनि	14/11/1987	चंद्र	01/06/1989	बुध	15/03/1991
	00/00/0000	शनि	18/09/1986	केतु	16/01/1988	बुध	31/08/1989	शुक्र	25/06/1991
	09/07/1985	केतु	16/11/1986	चंद्र	24/03/1988	शुक्र	04/12/1989	सूर्य	27/08/1991
केतु	11/08/1985	चंद्र	17/01/1987	बुध	04/06/1988	सूर्य	01/02/1990	मंगल	03/11/1991
चंद्र	20/11/1985	बुध	24/03/1987	शुक्र	19/08/1988	मंगल	06/04/1990	गुरु	16/01/1992
बुध	08/03/1986	शुक्र	02/06/1987	सूर्य	05/10/1988	गुरु	14/06/1990	शनि	05/04/1992

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
05/04/1992		11/03/1994		30/03/1996		01/06/1998		29/09/1999	
11/03/1994		30/03/1996		01/06/1998		29/09/1999		11/03/2001	
चंद्र	11/07/1992	बुध	29/06/1994	शुक्र	31/07/1996	सूर्य	17/07/1998	मंगल	23/11/1999
बुध	23/10/1992	शुक्र	24/10/1994	सूर्य	14/10/1996	मंगल	05/09/1998	गुरु	21/01/2000
शुक्र	09/02/1993	सूर्य	03/01/1995	मंगल	04/01/1997	गुरु	30/10/1998	शनि	25/03/2000
सूर्य	17/04/1993	मंगल	21/03/1995	गुरु	03/04/1997	शनि	27/12/1998	केतु	01/06/2000
मंगल	29/06/1993	गुरु	13/06/1995	शनि	08/07/1997	केतु	28/02/1999	चंद्र	13/08/2000
गुरु	16/09/1993	शनि	12/09/1995	केतु	19/10/1997	चंद्र	06/05/1999	बुध	30/10/2000
शनि	10/12/1993	केतु	17/12/1995	चंद्र	05/02/1998	बुध	16/07/1999	शुक्र	20/01/2001
केतु	11/03/1994	चंद्र	30/03/1996	बुध	01/06/1998	शुक्र	29/09/1999	सूर्य	11/03/2001

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
11/03/2001		05/10/2002		13/09/2004		08/10/2006		19/12/2008	
05/10/2002		13/09/2004		08/10/2006		19/12/2008		18/04/2011	
गुरु	14/05/2001	केतु	05/01/2003	चंद्र	26/12/2004	बुध	03/02/2007	शुक्र	30/04/2009
शनि	23/07/2001	चंद्र	13/04/2003	बुध	16/04/2005	शुक्र	08/06/2007	सूर्य	20/07/2009
केतु	05/10/2001	बुध	25/07/2003	शुक्र	11/08/2005	सूर्य	23/08/2007	मंगल	16/10/2009
चंद्र	23/12/2001	शुक्र	12/11/2003	सूर्य	22/10/2005	मंगल	14/11/2007	गुरु	19/01/2010
बुध	17/03/2002	सूर्य	19/01/2004	मंगल	08/01/2006	गुरु	12/02/2008	शनि	02/05/2010
शुक्र	14/06/2002	मंगल	01/04/2004	गुरु	03/04/2006	शनि	19/05/2008	केतु	20/08/2010
सूर्य	07/08/2002	गुरु	19/06/2004	शनि	03/07/2006	केतु	31/08/2008	चंद्र	15/12/2010
मंगल	05/10/2002	शनि	13/09/2004	केतु	08/10/2006	चंद्र	19/12/2008	बुध	18/04/2011

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र	
18/04/2011		19/09/2012		09/04/2014		14/12/2015		05/10/2017	
19/09/2012		09/04/2014		14/12/2015		05/10/2017		20/12/2019	
सूर्य	07/06/2011	मंगल	17/11/2012	गुरु	17/06/2014	शनि	03/03/2016	चंद्र	24/01/2018
मंगल	31/07/2011	गुरु	19/01/2013	शनि	30/08/2014	केतु	27/05/2016	बुध	22/05/2018
गुरु	27/09/2011	शनि	29/03/2013	केतु	17/11/2014	चंद्र	26/08/2016	शुक्र	24/09/2018
शनि	28/11/2011	केतु	10/06/2013	चंद्र	10/02/2015	बुध	01/12/2016	सूर्य	10/12/2018
केतु	04/02/2012	चंद्र	27/08/2013	बुध	11/05/2015	शुक्र	14/03/2017	मंगल	03/03/2019
चंद्र	15/04/2012	बुध	18/11/2013	शुक्र	14/08/2015	सूर्य	16/05/2017	गुरु	02/06/2019
बुध	30/06/2012	शुक्र	14/02/2014	सूर्य	11/10/2015	मंगल	23/07/2017	शनि	07/09/2019
शुक्र	19/09/2012	सूर्य	09/04/2014	मंगल	14/12/2015	गुरु	05/10/2017	केतु	20/12/2019

चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु	
20/12/2019		25/04/2022		17/10/2024		25/04/2026		20/12/2027	
25/04/2022		17/10/2024		25/04/2026		20/12/2027		05/10/2029	
बुध	24/04/2020	शुक्र	12/09/2022	सूर्य	09/12/2024	मंगल	26/06/2026	गुरु	02/03/2028
शुक्र	04/09/2020	सूर्य	07/12/2022	मंगल	04/02/2025	गुरु	02/09/2026	शनि	21/05/2028
सूर्य	24/11/2020	मंगल	11/03/2023	गुरु	07/04/2025	शनि	14/11/2026	केतु	13/08/2028
मंगल	20/02/2021	गुरु	21/06/2023	शनि	13/06/2025	केतु	31/01/2027	चंद्र	12/11/2028
गुरु	27/05/2021	शनि	08/10/2023	केतु	24/08/2025	चंद्र	24/04/2027	बुध	16/02/2029
शनि	08/09/2021	केतु	02/02/2024	चंद्र	08/11/2025	बुध	22/07/2027	शुक्र	28/05/2029
केतु	27/12/2021	चंद्र	06/06/2024	बुध	29/01/2026	शुक्र	24/10/2027	सूर्य	29/07/2029
चंद्र	25/04/2022	बुध	17/10/2024	शुक्र	25/04/2026	सूर्य	20/12/2027	मंगल	05/10/2029

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
05/10/2029		10/09/2031		05/10/2033		02/04/2036		22/11/2038	
10/09/2031		05/10/2033		02/04/2036		22/11/2038		02/07/2040	
शनि	29/12/2029	केतु	17/12/2031	बुध	15/02/2034	शुक्र	30/08/2036	सूर्य	16/01/2039
केतु	30/03/2030	चंद्र	30/03/2032	शुक्र	07/07/2034	सूर्य	29/11/2036	मंगल	18/03/2039
चंद्र	06/07/2030	बुध	19/07/2032	सूर्य	01/10/2034	मंगल	09/03/2037	गुरु	23/05/2039
बुध	17/10/2030	शुक्र	13/11/2032	मंगल	03/01/2035	गुरु	25/06/2037	शनि	02/08/2039
शुक्र	03/02/2031	सूर्य	24/01/2033	गुरु	15/04/2035	शनि	19/10/2037	केतु	17/10/2039
सूर्य	11/04/2031	मंगल	12/04/2033	शनि	03/08/2035	केतु	20/02/2038	चंद्र	07/01/2040
मंगल	23/06/2031	गुरु	06/07/2033	केतु	28/11/2035	चंद्र	03/07/2038	बुध	02/04/2040
गुरु	10/09/2031	शनि	05/10/2033	चंद्र	02/04/2036	बुध	22/11/2038	शुक्र	02/07/2040

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
02/07/2040		06/04/2042		02/03/2044		21/03/2046		01/06/2048	
06/04/2042		02/03/2044		21/03/2046		01/06/2048		05/10/2050	
मंगल	07/09/2040	गुरु	23/06/2042	शनि	31/05/2044	केतु	03/07/2046	चंद्र	27/09/2048
गुरु	18/11/2040	शनि	15/09/2042	केतु	05/09/2044	चंद्र	21/10/2046	बुध	30/01/2049
शनि	03/02/2041	केतु	14/12/2042	चंद्र	17/12/2044	बुध	16/02/2047	शुक्र	12/06/2049
केतु	27/04/2041	चंद्र	20/03/2043	बुध	06/04/2045	शुक्र	21/06/2047	सूर्य	02/09/2049
चंद्र	25/07/2041	बुध	30/06/2043	शुक्र	31/07/2045	सूर्य	05/09/2047	मंगल	29/11/2049
बुध	27/10/2041	शुक्र	16/10/2043	सूर्य	10/10/2045	मंगल	27/11/2047	गुरु	05/03/2050
शुक्र	04/02/2042	सूर्य	21/12/2043	मंगल	27/12/2045	गुरु	25/02/2048	शनि	17/06/2050
सूर्य	06/04/2042	मंगल	02/03/2044	गुरु	21/03/2046	शनि	01/06/2048	केतु	05/10/2050

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
05/10/2050		21/07/2053		06/04/2055		14/02/2057		21/02/2059	
21/07/2053		06/04/2055		14/02/2057		21/02/2059		24/04/2061	
शुक्र	13/03/2051	सूर्य	19/09/2053	मंगल	15/06/2055	गुरु	08/05/2057	शनि	28/05/2059
सूर्य	17/06/2051	मंगल	22/11/2053	गुरु	30/08/2055	शनि	05/08/2057	केतु	07/09/2059
मंगल	01/10/2051	गुरु	31/01/2054	शनि	21/11/2055	केतु	08/11/2057	चंद्र	26/12/2059
गुरु	23/01/2052	शनि	16/04/2054	केतु	17/02/2056	चंद्र	17/02/2058	बुध	20/04/2060
शनि	25/05/2052	केतु	06/07/2054	चंद्र	20/05/2056	बुध	05/06/2058	शुक्र	21/08/2060
केतु	04/10/2052	चंद्र	30/09/2054	बुध	28/08/2056	शुक्र	28/09/2058	सूर्य	04/11/2060
चंद्र	22/02/2053	बुध	30/12/2054	शुक्र	12/12/2056	सूर्य	07/12/2058	मंगल	25/01/2061
बुध	21/07/2053	शुक्र	06/04/2055	सूर्य	14/02/2057	मंगल	21/02/2059	गुरु	24/04/2061

शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल	
24/04/2061		22/08/2063		14/02/2066		05/10/2068		21/10/2069	
22/08/2063		14/02/2066		05/10/2068		21/10/2069		10/12/2070	
केतु	12/08/2061	चंद्र	26/12/2063	बुध	05/07/2066	सूर्य	10/11/2068	मंगल	03/12/2069
चंद्र	07/12/2061	बुध	06/05/2064	शुक्र	02/12/2066	मंगल	19/12/2068	गुरु	18/01/2070
बुध	11/04/2062	शुक्र	24/09/2064	सूर्य	03/03/2067	गुरु	31/01/2069	शनि	10/03/2070
शुक्र	21/08/2062	सूर्य	19/12/2064	मंगल	11/06/2067	शनि	18/03/2069	केतु	02/05/2070
सूर्य	10/11/2062	मंगल	23/03/2065	गुरु	27/09/2067	केतु	06/05/2069	चंद्र	29/06/2070
मंगल	06/02/2063	गुरु	03/07/2065	शनि	21/01/2068	चंद्र	28/06/2069	बुध	28/08/2070
गुरु	12/05/2063	शनि	20/10/2065	केतु	25/05/2068	बुध	23/08/2069	शुक्र	01/11/2070
शनि	22/08/2063	केतु	14/02/2066	चंद्र	05/10/2068	शुक्र	21/10/2069	सूर्य	10/12/2070

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध	
10/12/2070		05/03/2072		03/07/2073		04/12/2074		10/06/2076	
05/03/2072		03/07/2073		04/12/2074		10/06/2076		20/01/2078	
गुरु	30/01/2071	शनि	02/05/2072	केतु	08/09/2073	चंद्र	19/02/2075	बुध	05/09/2076
शनि	25/03/2071	केतु	04/07/2072	चंद्र	18/11/2073	बुध	11/05/2075	शुक्र	05/12/2076
केतु	22/05/2071	चंद्र	09/09/2072	बुध	03/02/2074	शुक्र	05/08/2075	सूर्य	30/01/2077
चंद्र	24/07/2071	बुध	19/11/2072	शुक्र	24/04/2074	सूर्य	26/09/2075	मंगल	01/04/2077
बुध	28/09/2071	शुक्र	02/02/2073	सूर्य	12/06/2074	मंगल	23/11/2075	गुरु	06/06/2077
शुक्र	06/12/2071	सूर्य	20/03/2073	मंगल	05/08/2074	गुरु	24/01/2076	शनि	16/08/2077
सूर्य	18/01/2072	मंगल	09/05/2073	गुरु	02/10/2074	शनि	31/03/2076	केतु	31/10/2077
मंगल	05/03/2072	गुरु	03/07/2073	शनि	04/12/2074	केतु	10/06/2076	चंद्र	20/01/2078

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
20/01/2078		06/10/2079		01/01/2081		07/05/2082		18/10/2083	
06/10/2079		01/01/2081		07/05/2082		18/10/2083		07/05/2085	
शुक्र	27/04/2078	मंगल	21/11/2079	गुरु	25/02/2081	शनि	10/07/2082	केतु	30/12/2083
सूर्य	25/06/2078	गुरु	11/01/2080	शनि	25/04/2081	केतु	16/09/2082	चंद्र	18/03/2084
मंगल	28/08/2078	शनि	06/03/2080	केतु	28/06/2081	चंद्र	28/11/2082	बुध	09/06/2084
गुरु	06/11/2078	केतु	04/05/2080	चंद्र	04/09/2081	बुध	14/02/2083	शुक्र	05/09/2084
शनि	21/01/2079	चंद्र	05/07/2080	बुध	15/11/2081	शुक्र	07/05/2083	सूर्य	28/10/2084
केतु	11/04/2079	बुध	10/09/2080	शुक्र	30/01/2082	सूर्य	26/06/2083	मंगल	26/12/2084
चंद्र	06/07/2079	शुक्र	19/11/2080	सूर्य	17/03/2082	मंगल	20/08/2083	गुरु	27/02/2085
बुध	06/10/2079	सूर्य	01/01/2081	मंगल	07/05/2082	गुरु	18/10/2083	शनि	07/05/2085

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
07/05/2085		01/01/2087		05/10/2088		16/08/2090		06/10/2091	
01/01/2087		05/10/2088		16/08/2090		06/10/2091		21/03/2093	
चंद्र	29/07/2085	बुध	06/04/2087	शुक्र	18/01/2089	सूर्य	24/09/2090	गुरु	04/12/2091
बुध	26/10/2085	शुक्र	14/07/2087	सूर्य	24/03/2089	मंगल	06/11/2090	शनि	06/02/2092
शुक्र	28/01/2086	सूर्य	13/09/2087	मंगल	02/06/2089	गुरु	23/12/2090	केतु	15/04/2092
सूर्य	26/03/2086	मंगल	19/11/2087	गुरु	17/08/2089	शनि	11/02/2091	चंद्र	28/06/2092
मंगल	28/05/2086	गुरु	30/01/2088	शनि	07/11/2089	केतु	06/04/2091	बुध	14/09/2092
गुरु	03/08/2086	शनि	16/04/2088	केतु	03/02/2090	चंद्र	02/06/2091	शुक्र	05/12/2092
शनि	15/10/2086	केतु	08/07/2088	चंद्र	08/05/2090	बुध	02/08/2091	सूर्य	25/01/2093
केतु	01/01/2087	चंद्र	05/10/2088	बुध	16/08/2090	शुक्र	06/10/2091	मंगल	21/03/2093

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 3 वर्ष 1 मास 27 दिन

शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष	
09/07/1985		04/09/1988		05/01/2000		04/09/2004		04/01/2018	
04/09/1988		05/01/2000		04/09/2004		04/01/2018		04/01/2022	
	00/00/0000	बुध	14/04/1990	केतु	13/04/2000	शुक्र	25/11/2006	सूर्य	18/03/2018
	00/00/0000	केतु	11/12/1990	शुक्र	22/01/2001	सूर्य	27/07/2007	चंद्र	18/07/2018
	00/00/0000	शुक्र	31/10/1992	सूर्य	18/04/2001	चंद्र	04/09/2008	मंगल	11/10/2018
	00/00/0000	सूर्य	26/05/1993	चंद्र	07/09/2001	मंगल	16/06/2009	राहु	19/05/2019
	00/00/0000	चंद्र	06/05/1994	मंगल	15/12/2001	राहु	16/06/2011	गुरु	29/11/2019
	00/00/0000	मंगल	03/01/1995	राहु	28/08/2002	गुरु	26/03/2013	शनि	18/07/2020
	09/07/1985	राहु	15/09/1996	गुरु	12/04/2003	शनि	06/05/2015	बुध	10/02/2021
राहु	28/12/1986	गुरु	20/03/1998	शनि	07/01/2004	बुध	26/03/2017	केतु	06/05/2021
गुरु	04/09/1988	शनि	05/01/2000	बुध	04/09/2004	केतु	04/01/2018	शुक्र	04/01/2022

चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष	
04/01/2022		04/09/2028		06/05/2033		06/05/2045		05/01/2056	
04/09/2028		06/05/2033		06/05/2045		05/01/2056		00/00/0000	
चंद्र	26/07/2022	मंगल	13/12/2028	राहु	22/02/2035	गुरु	07/10/2046	शनि	06/01/2058
मंगल	15/12/2022	राहु	26/08/2029	गुरु	29/09/2036	शनि	15/06/2048	बुध	24/10/2059
राहु	16/12/2023	गुरु	10/04/2030	शनि	24/08/2038	बुध	19/12/2049	केतु	20/07/2060
गुरु	04/11/2024	शनि	05/01/2031	बुध	06/05/2040	केतु	03/08/2050	शुक्र	30/08/2062
शनि	25/11/2025	बुध	03/09/2031	केतु	16/01/2041	शुक्र	14/05/2052	सूर्य	18/04/2063
बुध	05/11/2026	केतु	12/12/2031	शुक्र	17/01/2043	सूर्य	25/11/2052	चंद्र	08/05/2064
केतु	27/03/2027	शुक्र	21/09/2032	सूर्य	24/08/2043	चंद्र	15/10/2053	मंगल	02/02/2065
शुक्र	06/05/2028	सूर्य	15/12/2032	चंद्र	23/08/2044	मंगल	31/05/2054	राहु	09/07/2065
सूर्य	04/09/2028	चंद्र	06/05/2033	मंगल	06/05/2045	राहु	05/01/2056		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
09/07/1985		28/12/1986		04/09/1988		14/04/1990		11/12/1990	
28/12/1986		04/09/1988		14/04/1990		11/12/1990		31/10/1992	
	09/07/1985	गुरु	20/03/1987	बुध	26/11/1988	केतु	28/04/1990	शुक्र	05/04/1991
गुरु	17/08/1985	शनि	25/06/1987	केतु	31/12/1988	शुक्र	07/06/1990	सूर्य	10/05/1991
शनि	05/12/1985	बुध	21/09/1987	शुक्र	07/04/1989	सूर्य	19/06/1990	चंद्र	06/07/1991
बुध	13/03/1986	केतु	27/10/1987	सूर्य	07/05/1989	चंद्र	09/07/1990	मंगल	16/08/1991
केतु	23/04/1986	शुक्र	07/02/1988	चंद्र	25/06/1989	मंगल	23/07/1990	राहु	27/11/1991
शुक्र	17/08/1986	सूर्य	09/03/1988	मंगल	29/07/1989	राहु	29/08/1990	गुरु	27/02/1992
सूर्य	20/09/1986	चंद्र	29/04/1988	राहु	25/10/1989	गुरु	30/09/1990	शनि	15/06/1992
चंद्र	17/11/1986	मंगल	04/06/1988	गुरु	11/01/1990	शनि	07/11/1990	बुध	21/09/1992
मंगल	28/12/1986	राहु	04/09/1988	शनि	14/04/1990	बुध	11/12/1990	केतु	31/10/1992

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
31/10/1992		26/05/1993		06/05/1994		03/01/1995		15/09/1996	
26/05/1993		06/05/1994		03/01/1995		15/09/1996		20/03/1998	
सूर्य	11/11/1992	चंद्र	24/06/1993	मंगल	20/05/1994	राहु	06/04/1995	गुरु	27/11/1996
चंद्र	28/11/1992	मंगल	14/07/1993	राहु	25/06/1994	गुरु	28/06/1995	शनि	23/02/1997
मंगल	10/12/1992	राहु	04/09/1993	गुरु	28/07/1994	शनि	04/10/1995	बुध	12/05/1997
राहु	10/01/1993	गुरु	20/10/1993	शनि	04/09/1994	बुध	31/12/1995	केतु	13/06/1997
गुरु	07/02/1993	शनि	13/12/1993	बुध	08/10/1994	केतु	05/02/1996	शुक्र	13/09/1997
शनि	11/03/1993	बुध	31/01/1994	केतु	22/10/1994	शुक्र	19/05/1996	सूर्य	11/10/1997
बुध	10/04/1993	केतु	20/02/1994	शुक्र	01/12/1994	सूर्य	19/06/1996	चंद्र	26/11/1997
केतु	22/04/1993	शुक्र	19/04/1994	सूर्य	14/12/1994	चंद्र	09/08/1996	मंगल	28/12/1997
शुक्र	26/05/1993	सूर्य	06/05/1994	चंद्र	03/01/1995	मंगल	15/09/1996	राहु	20/03/1998

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
20/03/1998		05/01/2000		13/04/2000		22/01/2001		18/04/2001	
05/01/2000		13/04/2000		22/01/2001		18/04/2001		07/09/2001	
शनि	02/07/1998	केतु	11/01/2000	शुक्र	31/05/2000	सूर्य	27/01/2001	चंद्र	29/04/2001
बुध	03/10/1998	शुक्र	27/01/2000	सूर्य	14/06/2000	चंद्र	03/02/2001	मंगल	08/05/2001
केतु	10/11/1998	सूर्य	01/02/2000	चंद्र	08/07/2000	मंगल	08/02/2001	राहु	29/05/2001
शुक्र	28/02/1999	चंद्र	10/02/2000	मंगल	24/07/2000	राहु	21/02/2001	गुरु	17/06/2001
सूर्य	01/04/1999	मंगल	15/02/2000	राहु	05/09/2000	गुरु	04/03/2001	शनि	10/07/2001
चंद्र	26/05/1999	राहु	01/03/2000	गुरु	13/10/2000	शनि	17/03/2001	बुध	30/07/2001
मंगल	03/07/1999	गुरु	15/03/2000	शनि	27/11/2000	बुध	29/03/2001	केतु	07/08/2001
राहु	10/10/1999	शनि	30/03/2000	बुध	06/01/2001	केतु	03/04/2001	शुक्र	31/08/2001
गुरु	05/01/2000	बुध	13/04/2000	केतु	22/01/2001	शुक्र	18/04/2001	सूर्य	07/09/2001

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
07/09/2001		15/12/2001		28/08/2002		12/04/2003		07/01/2004	
15/12/2001		28/08/2002		12/04/2003		07/01/2004		04/09/2004	
मंगल	12/09/2001	राहु	22/01/2002	गुरु	27/09/2002	शनि	25/05/2003	बुध	10/02/2004
राहु	27/09/2001	गुरु	26/02/2002	शनि	02/11/2002	बुध	02/07/2003	केतु	24/02/2004
गुरु	11/10/2001	शनि	07/04/2002	बुध	04/12/2002	केतु	18/07/2003	शुक्र	04/04/2004
शनि	26/10/2001	बुध	13/05/2002	केतु	18/12/2002	शुक्र	01/09/2003	सूर्य	17/04/2004
बुध	09/11/2001	केतु	28/05/2002	शुक्र	24/01/2003	सूर्य	14/09/2003	चंद्र	07/05/2004
केतु	15/11/2001	शुक्र	10/07/2002	सूर्य	05/02/2003	चंद्र	07/10/2003	मंगल	21/05/2004
शुक्र	02/12/2001	सूर्य	23/07/2002	चंद्र	24/02/2003	मंगल	22/10/2003	राहु	26/06/2004
सूर्य	07/12/2001	चंद्र	13/08/2002	मंगल	09/03/2003	राहु	02/12/2003	गुरु	28/07/2004
चंद्र	15/12/2001	मंगल	28/08/2002	राहु	12/04/2003	गुरु	07/01/2004	शनि	04/09/2004

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
04/09/2004		25/11/2006		27/07/2007		04/09/2008		16/06/2009	
25/11/2006		27/07/2007		04/09/2008		16/06/2009		16/06/2011	
शुक्र	18/01/2005	सूर्य	07/12/2006	चंद्र	29/08/2007	मंगल	21/09/2008	राहु	03/10/2009
सूर्य	27/02/2005	चंद्र	28/12/2006	मंगल	22/09/2007	राहु	03/11/2008	गुरु	08/01/2010
चंद्र	06/05/2005	मंगल	11/01/2007	राहु	22/11/2007	गुरु	10/12/2008	शनि	04/05/2010
मंगल	22/06/2005	राहु	16/02/2007	गुरु	15/01/2008	शनि	24/01/2009	बुध	16/08/2010
राहु	22/10/2005	गुरु	21/03/2007	शनि	19/03/2008	बुध	06/03/2009	केतु	27/09/2010
गुरु	07/02/2006	शनि	28/04/2007	बुध	16/05/2008	केतु	22/03/2009	शुक्र	27/01/2011
शनि	16/06/2006	बुध	02/06/2007	केतु	08/06/2008	शुक्र	09/05/2009	सूर्य	05/03/2011
बुध	09/10/2006	केतु	16/06/2007	शुक्र	15/08/2008	सूर्य	23/05/2009	चंद्र	04/05/2011
केतु	25/11/2006	शुक्र	27/07/2007	सूर्य	04/09/2008	चंद्र	16/06/2009	मंगल	16/06/2011

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
16/06/2011		26/03/2013		06/05/2015		26/03/2017		04/01/2018	
26/03/2013		06/05/2015		26/03/2017		04/01/2018		18/03/2018	
गुरु	11/09/2011	शनि	26/07/2013	बुध	12/08/2015	केतु	12/04/2017	सूर्य	08/01/2018
शनि	22/12/2011	बुध	13/11/2013	केतु	21/09/2015	शुक्र	29/05/2017	चंद्र	14/01/2018
बुध	23/03/2012	केतु	28/12/2013	शुक्र	14/01/2016	सूर्य	12/06/2017	मंगल	18/01/2018
केतु	30/04/2012	शुक्र	05/05/2014	सूर्य	18/02/2016	चंद्र	06/07/2017	राहु	29/01/2018
शुक्र	16/08/2012	सूर्य	13/06/2014	चंद्र	15/04/2016	मंगल	23/07/2017	गुरु	08/02/2018
सूर्य	18/09/2012	चंद्र	16/08/2014	मंगल	26/05/2016	राहु	03/09/2017	शनि	20/02/2018
चंद्र	11/11/2012	मंगल	30/09/2014	राहु	06/09/2016	गुरु	11/10/2017	बुध	02/03/2018
मंगल	19/12/2012	राहु	24/01/2015	गुरु	07/12/2016	शनि	25/11/2017	केतु	06/03/2018
राहु	26/03/2013	गुरु	06/05/2015	शनि	26/03/2017	बुध	04/01/2018	शुक्र	18/03/2018

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
18/03/2018		18/07/2018		11/10/2018		19/05/2019		29/11/2019	
18/07/2018		11/10/2018		19/05/2019		29/11/2019		18/07/2020	
चंद्र	29/03/2018	मंगल	23/07/2018	राहु	13/11/2018	गुरु	14/06/2019	शनि	05/01/2020
मंगल	05/04/2018	राहु	05/08/2018	गुरु	13/12/2018	शनि	14/07/2019	बुध	07/02/2020
राहु	23/04/2018	गुरु	16/08/2018	शनि	16/01/2019	बुध	11/08/2019	केतु	20/02/2020
गुरु	09/05/2018	शनि	30/08/2018	बुध	16/02/2019	केतु	22/08/2019	शुक्र	30/03/2020
शनि	28/05/2018	बुध	11/09/2018	केतु	01/03/2019	शुक्र	24/09/2019	सूर्य	10/04/2020
बुध	15/06/2018	केतु	16/09/2018	शुक्र	07/04/2019	सूर्य	04/10/2019	चंद्र	30/04/2020
केतु	22/06/2018	शुक्र	30/09/2018	सूर्य	18/04/2019	चंद्र	20/10/2019	मंगल	13/05/2020
शुक्र	12/07/2018	सूर्य	04/10/2018	चंद्र	06/05/2019	मंगल	31/10/2019	राहु	17/06/2020
सूर्य	18/07/2018	चंद्र	11/10/2018	मंगल	19/05/2019	राहु	29/11/2019	गुरु	18/07/2020

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
18/07/2020		10/02/2021		06/05/2021		04/01/2022		26/07/2022	
10/02/2021		06/05/2021		04/01/2022		26/07/2022		15/12/2022	
बुध	16/08/2020	केतु	15/02/2021	शुक्र	16/06/2021	चंद्र	21/01/2022	मंगल	04/08/2022
केतु	28/08/2020	शुक्र	01/03/2021	सूर्य	28/06/2021	मंगल	02/02/2022	राहु	25/08/2022
शुक्र	02/10/2020	सूर्य	05/03/2021	चंद्र	18/07/2021	राहु	05/03/2022	गुरु	13/09/2022
सूर्य	12/10/2020	चंद्र	12/03/2021	मंगल	01/08/2021	गुरु	01/04/2022	शनि	05/10/2022
चंद्र	29/10/2020	मंगल	17/03/2021	राहु	07/09/2021	शनि	03/05/2022	बुध	25/10/2022
मंगल	10/11/2020	राहु	30/03/2021	गुरु	09/10/2021	बुध	01/06/2022	केतु	03/11/2022
राहु	11/12/2020	गुरु	10/04/2021	शनि	17/11/2021	केतु	12/06/2022	शुक्र	26/11/2022
गुरु	08/01/2021	शनि	24/04/2021	बुध	21/12/2021	शुक्र	16/07/2022	सूर्य	04/12/2022
शनि	10/02/2021	बुध	06/05/2021	केतु	04/01/2022	सूर्य	26/07/2022	चंद्र	15/12/2022

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
15/12/2022		16/12/2023		04/11/2024		25/11/2025		05/11/2026	
16/12/2023		04/11/2024		25/11/2025		05/11/2026		27/03/2027	
राहु	08/02/2023	गुरु	28/01/2024	शनि	04/01/2025	बुध	13/01/2026	केतु	13/11/2026
गुरु	29/03/2023	शनि	19/03/2024	बुध	28/02/2025	केतु	02/02/2026	शुक्र	07/12/2026
शनि	26/05/2023	बुध	04/05/2024	केतु	22/03/2025	शुक्र	31/03/2026	सूर्य	14/12/2026
बुध	16/07/2023	केतु	23/05/2024	शुक्र	26/05/2025	सूर्य	18/04/2026	चंद्र	26/12/2026
केतु	07/08/2023	शुक्र	16/07/2024	सूर्य	14/06/2025	चंद्र	16/05/2026	मंगल	03/01/2027
शुक्र	07/10/2023	सूर्य	02/08/2024	चंद्र	16/07/2025	मंगल	05/06/2026	राहु	24/01/2027
सूर्य	25/10/2023	चंद्र	29/08/2024	मंगल	08/08/2025	राहु	27/07/2026	गुरु	12/02/2027
चंद्र	24/11/2023	मंगल	17/09/2024	राहु	04/10/2025	गुरु	11/09/2026	शनि	07/03/2027
मंगल	16/12/2023	राहु	04/11/2024	गुरु	25/11/2025	शनि	05/11/2026	बुध	27/03/2027

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
27/03/2027		06/05/2028		04/09/2028		13/12/2028		26/08/2029	
06/05/2028		04/09/2028		13/12/2028		26/08/2029		10/04/2030	
शुक्र	02/06/2027	सूर्य	12/05/2028	मंगल	10/09/2028	राहु	20/01/2029	गुरु	25/09/2029
सूर्य	23/06/2027	चंद्र	22/05/2028	राहु	25/09/2028	गुरु	23/02/2029	शनि	31/10/2029
चंद्र	27/07/2027	मंगल	29/05/2028	गुरु	08/10/2028	शनि	05/04/2029	बुध	02/12/2029
मंगल	19/08/2027	राहु	16/06/2028	शनि	24/10/2028	बुध	11/05/2029	केतु	15/12/2029
राहु	19/10/2027	गुरु	03/07/2028	बुध	07/11/2028	केतु	26/05/2029	शुक्र	22/01/2030
गुरु	12/12/2027	शनि	22/07/2028	केतु	13/11/2028	शुक्र	08/07/2029	सूर्य	03/02/2030
शनि	15/02/2028	बुध	08/08/2028	शुक्र	30/11/2028	सूर्य	20/07/2029	चंद्र	21/02/2030
बुध	12/04/2028	केतु	15/08/2028	सूर्य	05/12/2028	चंद्र	11/08/2029	मंगल	07/03/2030
केतु	06/05/2028	शुक्र	04/09/2028	चंद्र	13/12/2028	मंगल	26/08/2029	राहु	10/04/2030

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
10/04/2030		05/01/2031		03/09/2031		12/12/2031		21/09/2032	
05/01/2031		03/09/2031		12/12/2031		21/09/2032		15/12/2032	
शनि	23/05/2030	बुध	08/02/2031	केतु	09/09/2031	शुक्र	28/01/2032	सूर्य	25/09/2032
बुध	30/06/2030	केतु	22/02/2031	शुक्र	26/09/2031	सूर्य	11/02/2032	चंद्र	02/10/2032
केतु	15/07/2030	शुक्र	03/04/2031	सूर्य	30/09/2031	चंद्र	06/03/2032	मंगल	07/10/2032
शुक्र	29/08/2030	सूर्य	15/04/2031	चंद्र	09/10/2031	मंगल	22/03/2032	राहु	20/10/2032
सूर्य	12/09/2030	चंद्र	05/05/2031	मंगल	15/10/2031	राहु	04/05/2032	गुरु	31/10/2032
चंद्र	04/10/2030	मंगल	19/05/2031	राहु	29/10/2031	गुरु	11/06/2032	शनि	14/11/2032
मंगल	20/10/2030	राहु	25/06/2031	गुरु	12/11/2031	शनि	26/07/2032	बुध	26/11/2032
राहु	30/11/2030	गुरु	27/07/2031	शनि	27/11/2031	बुध	04/09/2032	केतु	01/12/2032
गुरु	05/01/2031	शनि	03/09/2031	बुध	12/12/2031	केतु	21/09/2032	शुक्र	15/12/2032

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
15/12/2032		06/05/2033		22/02/2035		29/09/2036		24/08/2038	
06/05/2033		22/02/2035		29/09/2036		24/08/2038		06/05/2040	
चंद्र	27/12/2032	राहु	13/08/2033	गुरु	11/05/2035	शनि	17/01/2037	बुध	20/11/2038
मंगल	04/01/2033	गुरु	08/11/2033	शनि	12/08/2035	बुध	25/04/2037	केतु	26/12/2038
राहु	25/01/2033	शनि	20/02/2034	बुध	03/11/2035	केतु	04/06/2037	शुक्र	08/04/2039
गुरु	13/02/2033	बुध	24/05/2034	केतु	07/12/2035	शुक्र	28/09/2037	सूर्य	09/05/2039
शनि	08/03/2033	केतु	02/07/2034	शुक्र	13/03/2036	सूर्य	02/11/2037	चंद्र	30/06/2039
बुध	28/03/2033	शुक्र	19/10/2034	सूर्य	11/04/2036	चंद्र	30/12/2037	मंगल	05/08/2039
केतु	05/04/2033	सूर्य	21/11/2034	चंद्र	30/05/2036	मंगल	08/02/2038	राहु	07/11/2039
शुक्र	29/04/2033	चंद्र	15/01/2035	मंगल	03/07/2036	राहु	23/05/2038	गुरु	28/01/2040
सूर्य	06/05/2033	मंगल	22/02/2035	राहु	29/09/2036	गुरु	24/08/2038	शनि	06/05/2040

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल	
06/05/2040		16/01/2041		17/01/2043		24/08/2043		23/08/2044	
16/01/2041		17/01/2043		24/08/2043		23/08/2044		06/05/2045	
केतु	21/05/2040	शुक्र	18/05/2041	सूर्य	28/01/2043	चंद्र	23/09/2043	मंगल	07/09/2044
शुक्र	02/07/2040	सूर्य	24/06/2041	चंद्र	15/02/2043	मंगल	15/10/2043	राहु	16/10/2044
सूर्य	15/07/2040	चंद्र	23/08/2041	मंगल	28/02/2043	राहु	09/12/2043	गुरु	19/11/2044
चंद्र	05/08/2040	मंगल	05/10/2041	राहु	02/04/2043	गुरु	26/01/2044	शनि	29/12/2044
मंगल	20/08/2040	राहु	23/01/2042	गुरु	01/05/2043	शनि	24/03/2044	बुध	03/02/2045
राहु	28/09/2040	गुरु	30/04/2042	शनि	05/06/2043	बुध	15/05/2044	केतु	18/02/2045
गुरु	01/11/2040	शनि	24/08/2042	बुध	06/07/2043	केतु	05/06/2044	शुक्र	02/04/2045
शनि	11/12/2040	बुध	05/12/2042	केतु	18/07/2043	शुक्र	05/08/2044	सूर्य	15/04/2045
बुध	16/01/2041	केतु	17/01/2043	शुक्र	24/08/2043	सूर्य	23/08/2044	चंद्र	06/05/2045

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
06/05/2045		07/10/2046		15/06/2048		19/12/2049		03/08/2050	
07/10/2046		15/06/2048		19/12/2049		03/08/2050		14/05/2052	
गुरु	14/07/2045	शनि	13/01/2047	बुध	01/09/2048	केतु	01/01/2050	शुक्र	20/11/2050
शनि	04/10/2045	बुध	10/04/2047	केतु	04/10/2048	शुक्र	08/02/2050	सूर्य	22/12/2050
बुध	17/12/2045	केतु	16/05/2047	शुक्र	04/01/2049	सूर्य	20/02/2050	चंद्र	14/02/2051
केतु	16/01/2046	शुक्र	27/08/2047	सूर्य	31/01/2049	चंद्र	11/03/2050	मंगल	24/03/2051
शुक्र	13/04/2046	सूर्य	27/09/2047	चंद्र	18/03/2049	मंगल	24/03/2050	राहु	30/06/2051
सूर्य	09/05/2046	चंद्र	17/11/2047	मंगल	19/04/2049	राहु	27/04/2050	गुरु	24/09/2051
चंद्र	21/06/2046	मंगल	23/12/2047	राहु	11/07/2049	गुरु	27/05/2050	शनि	05/01/2052
मंगल	21/07/2046	राहु	25/03/2048	गुरु	23/09/2049	शनि	02/07/2050	बुध	06/04/2052
राहु	07/10/2046	गुरु	15/06/2048	शनि	19/12/2049	बुध	03/08/2050	केतु	14/05/2052

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
14/05/2052		25/11/2052		15/10/2053		31/05/2054		05/01/2056	
25/11/2052		15/10/2053		31/05/2054		05/01/2056		06/01/2058	
सूर्य	24/05/2052	चंद्र	22/12/2052	मंगल	29/10/2053	राहु	26/08/2054	शनि	30/04/2056
चंद्र	09/06/2052	मंगल	10/01/2053	राहु	02/12/2053	गुरु	12/11/2054	बुध	12/08/2056
मंगल	20/06/2052	राहु	27/02/2053	गुरु	01/01/2054	शनि	13/02/2055	केतु	23/09/2056
राहु	19/07/2052	गुरु	12/04/2053	शनि	06/02/2054	बुध	06/05/2055	शुक्र	23/01/2057
गुरु	14/08/2052	शनि	02/06/2053	बुध	10/03/2054	केतु	10/06/2055	सूर्य	01/03/2057
शनि	14/09/2052	बुध	18/07/2053	केतु	23/03/2054	शुक्र	15/09/2055	चंद्र	01/05/2057
बुध	12/10/2052	केतु	06/08/2053	शुक्र	30/04/2054	सूर्य	14/10/2055	मंगल	13/06/2057
केतु	23/10/2052	शुक्र	29/09/2053	सूर्य	12/05/2054	चंद्र	02/12/2055	राहु	01/10/2057
शुक्र	25/11/2052	सूर्य	15/10/2053	चंद्र	31/05/2054	मंगल	05/01/2056	गुरु	06/01/2058

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 17 वर्ष 0 मास 21 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
09/07/1985		31/07/2002		30/07/2008		31/07/2023		31/07/2031	
31/07/2002		30/07/2008		31/07/2023		31/07/2031		30/07/2048	
शुक्र	30/08/1985	सूर्य	29/11/2002	चंद्र	30/08/2010	मंगल	03/03/2024	बुध	03/04/2034
सूर्य	30/10/1986	चंद्र	30/09/2003	मंगल	10/10/2011	बुध	06/06/2025	शनि	30/10/2035
चंद्र	29/09/1989	मंगल	10/03/2004	बुध	18/02/2014	शनि	04/03/2026	गुरु	27/10/2038
मंगल	20/04/1991	बुध	18/02/2005	शनि	11/07/2015	गुरु	31/07/2027	राहु	16/09/2040
बुध	10/08/1994	शनि	09/09/2005	गुरु	28/02/2018	राहु	20/06/2028	शुक्र	06/01/2044
शनि	20/07/1996	गुरु	30/09/2006	राहु	30/10/2019	शुक्र	09/01/2030	सूर्य	16/12/2044
गुरु	30/03/2000	राहु	31/05/2007	शुक्र	30/09/2022	सूर्य	20/06/2030	चंद्र	27/04/2047
राहु	31/07/2002	शुक्र	30/07/2008	सूर्य	31/07/2023	चंद्र	31/07/2031	मंगल	30/07/2048

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
30/07/2048		31/07/2058		30/07/2077		30/07/2089	
31/07/2058		30/07/2077		30/07/2089		00/00/0000	
शनि	03/07/2049	गुरु	03/12/2061	राहु	29/11/2078	शुक्र	09/07/2093
गुरु	07/04/2051	राहु	13/01/2064	शुक्र	31/03/2081		00/00/0000
राहु	17/05/2052	शुक्र	23/09/2067	सूर्य	29/11/2081		00/00/0000
शुक्र	27/04/2054	सूर्य	13/10/2068	चंद्र	31/07/2083		00/00/0000
सूर्य	16/11/2054	चंद्र	03/06/2071	मंगल	20/06/2084		00/00/0000
चंद्र	06/04/2056	मंगल	29/10/2072	बुध	11/05/2086		00/00/0000
मंगल	02/01/2057	बुध	27/10/2075	शनि	20/06/2087		00/00/0000
बुध	31/07/2058	शनि	30/07/2077	गुरु	30/07/2089		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र	
09/07/1985	
30/08/1985	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	09/07/1985
राहु	30/08/1985

शुक्र - सूर्य	
30/08/1985	
30/10/1986	
सूर्य	23/09/1985
चंद्र	21/11/1985
मंगल	22/12/1985
बुध	27/02/1986
शनि	08/04/1986
गुरु	22/06/1986
राहु	08/08/1986
शुक्र	30/10/1986

शुक्र - चंद्र	
30/10/1986	
29/09/1989	
चंद्र	27/03/1987
मंगल	14/06/1987
बुध	29/11/1987
शनि	06/03/1988
गुरु	10/09/1988
राहु	06/01/1989
शुक्र	01/08/1989
सूर्य	29/09/1989

शुक्र - मंगल	
29/09/1989	
20/04/1991	
मंगल	10/11/1989
बुध	08/02/1990
शनि	01/04/1990
गुरु	10/07/1990
राहु	12/09/1990
शुक्र	31/12/1990
सूर्य	01/02/1991
चंद्र	20/04/1991

शुक्र - बुध	
20/04/1991	
10/08/1994	
बुध	28/10/1991
शनि	16/02/1992
गुरु	16/09/1992
राहु	28/01/1993
शुक्र	20/09/1993
सूर्य	26/11/1993
चंद्र	12/05/1994
मंगल	10/08/1994

शुक्र - शनि	
10/08/1994	
20/07/1996	
शनि	15/10/1994
गुरु	17/02/1995
राहु	06/05/1995
शुक्र	22/09/1995
सूर्य	31/10/1995
चंद्र	07/02/1996
मंगल	30/03/1996
बुध	20/07/1996

शुक्र - गुरु	
20/07/1996	
30/03/2000	
गुरु	14/03/1997
राहु	11/08/1997
शुक्र	01/05/1998
सूर्य	15/07/1998
चंद्र	18/01/1999
मंगल	28/04/1999
बुध	26/11/1999
शनि	30/03/2000

शुक्र - राहु	
30/03/2000	
31/07/2002	
राहु	03/07/2000
शुक्र	16/12/2000
सूर्य	01/02/2001
चंद्र	31/05/2001
मंगल	02/08/2001
बुध	14/12/2001
शनि	03/03/2002
गुरु	31/07/2002

सूर्य - सूर्य	
31/07/2002	
29/11/2002	
सूर्य	06/08/2002
चंद्र	23/08/2002
मंगल	01/09/2002
बुध	21/09/2002
शनि	02/10/2002
गुरु	23/10/2002
राहु	06/11/2002
शुक्र	29/11/2002

सूर्य - चंद्र	
29/11/2002	
30/09/2003	
चंद्र	11/01/2003
मंगल	02/02/2003
बुध	22/03/2003
शनि	19/04/2003
गुरु	12/06/2003
राहु	16/07/2003
शुक्र	13/09/2003
सूर्य	30/09/2003

सूर्य - मंगल	
30/09/2003	
10/03/2004	
मंगल	12/10/2003
बुध	06/11/2003
शनि	21/11/2003
गुरु	20/12/2003
राहु	07/01/2004
शुक्र	08/02/2004
सूर्य	17/02/2004
चंद्र	10/03/2004

सूर्य - बुध	
10/03/2004	
18/02/2005	
बुध	03/05/2004
शनि	04/06/2004
गुरु	04/08/2004
राहु	11/09/2004
शुक्र	17/11/2004
सूर्य	07/12/2004
चंद्र	24/01/2005
मंगल	18/02/2005

सूर्य - शनि	
18/02/2005	
09/09/2005	
शनि	09/03/2005
गुरु	14/04/2005
राहु	06/05/2005
शुक्र	15/06/2005
सूर्य	26/06/2005
चंद्र	24/07/2005
मंगल	08/08/2005
बुध	09/09/2005

सूर्य - गुरु	
09/09/2005	
30/09/2006	
गुरु	16/11/2005
राहु	29/12/2005
शुक्र	14/03/2006
सूर्य	04/04/2006
चंद्र	28/05/2006
मंगल	25/06/2006
बुध	25/08/2006
शनि	30/09/2006

सूर्य - राहु	
30/09/2006	
31/05/2007	
राहु	27/10/2006
शुक्र	13/12/2006
सूर्य	26/12/2006
चंद्र	29/01/2007
मंगल	16/02/2007
बुध	27/03/2007
शनि	18/04/2007
गुरु	31/05/2007

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध		चंद्र - शनि	
31/05/2007		30/07/2008		30/08/2010		10/10/2011		18/02/2014	
30/07/2008		30/08/2010		10/10/2011		18/02/2014		11/07/2015	
शुक्र	22/08/2007	चंद्र	13/11/2008	मंगल	29/09/2010	बुध	23/02/2012	शनि	06/04/2014
सूर्य	15/09/2007	मंगल	08/01/2009	बुध	02/12/2010	शनि	13/05/2012	गुरु	05/07/2014
चंद्र	13/11/2007	बुध	08/05/2009	शनि	09/01/2011	गुरु	11/10/2012	राहु	30/08/2014
मंगल	14/12/2007	शनि	17/07/2009	गुरु	21/03/2011	राहु	15/01/2013	शुक्र	07/12/2014
बुध	19/02/2008	गुरु	28/11/2009	राहु	05/05/2011	शुक्र	02/07/2013	सूर्य	04/01/2015
शनि	30/03/2008	राहु	21/02/2010	शुक्र	23/07/2011	सूर्य	19/08/2013	चंद्र	15/03/2015
गुरु	13/06/2008	शुक्र	19/07/2010	सूर्य	15/08/2011	चंद्र	16/12/2013	मंगल	22/04/2015
राहु	30/07/2008	सूर्य	30/08/2010	चंद्र	10/10/2011	मंगल	18/02/2014	बुध	11/07/2015

चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल	
11/07/2015		28/02/2018		30/10/2019		30/09/2022		31/07/2023	
28/02/2018		30/10/2019		30/09/2022		31/07/2023		03/03/2024	
गुरु	27/12/2015	राहु	07/05/2018	शुक्र	24/05/2020	सूर्य	16/10/2022	मंगल	16/08/2023
राहु	12/04/2016	शुक्र	02/09/2018	सूर्य	23/07/2020	चंद्र	28/11/2022	बुध	19/09/2023
शुक्र	17/10/2016	सूर्य	06/10/2018	चंद्र	18/12/2020	मंगल	20/12/2022	शनि	09/10/2023
सूर्य	09/12/2016	चंद्र	30/12/2018	मंगल	06/03/2021	बुध	06/02/2023	गुरु	16/11/2023
चंद्र	22/04/2017	मंगल	13/02/2019	बुध	21/08/2021	शनि	06/03/2023	राहु	10/12/2023
मंगल	03/07/2017	बुध	20/05/2019	शनि	28/11/2021	गुरु	29/04/2023	शुक्र	21/01/2024
बुध	01/12/2017	शनि	15/07/2019	गुरु	03/06/2022	राहु	02/06/2023	सूर्य	02/02/2024
शनि	28/02/2018	गुरु	30/10/2019	राहु	30/09/2022	शुक्र	31/07/2023	चंद्र	03/03/2024

मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु		मंगल - शुक्र	
03/03/2024		06/06/2025		04/03/2026		31/07/2027		20/06/2028	
06/06/2025		04/03/2026		31/07/2027		20/06/2028		09/01/2030	
बुध	15/05/2024	शनि	01/07/2025	गुरु	02/06/2026	राहु	05/09/2027	शुक्र	08/10/2028
शनि	26/06/2024	गुरु	18/08/2025	राहु	29/07/2026	शुक्र	07/11/2027	सूर्य	09/11/2028
गुरु	15/09/2024	राहु	17/09/2025	शुक्र	06/11/2026	सूर्य	25/11/2027	चंद्र	27/01/2029
राहु	05/11/2024	शुक्र	09/11/2025	सूर्य	05/12/2026	चंद्र	09/01/2028	मंगल	10/03/2029
शुक्र	03/02/2025	सूर्य	24/11/2025	चंद्र	14/02/2027	मंगल	02/02/2028	बुध	07/06/2029
सूर्य	28/02/2025	चंद्र	31/12/2025	मंगल	24/03/2027	बुध	24/03/2028	शनि	30/07/2029
चंद्र	03/05/2025	मंगल	20/01/2026	बुध	13/06/2027	शनि	23/04/2028	गुरु	07/11/2029
मंगल	06/06/2025	बुध	04/03/2026	शनि	31/07/2027	गुरु	20/06/2028	राहु	09/01/2030

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि		बुध - गुरु	
09/01/2030		20/06/2030		31/07/2031		03/04/2034		30/10/2035	
20/06/2030		31/07/2031		03/04/2034		30/10/2035		27/10/2038	
सूर्य	18/01/2030	चंद्र	15/08/2030	बुध	01/01/2032	शनि	27/05/2034	गुरु	09/05/2036
चंद्र	09/02/2030	मंगल	15/09/2030	शनि	31/03/2032	गुरु	05/09/2034	राहु	08/09/2036
मंगल	21/02/2030	बुध	17/11/2030	गुरु	19/09/2032	राहु	08/11/2034	शुक्र	08/04/2037
बुध	19/03/2030	शनि	25/12/2030	राहु	06/01/2033	शुक्र	27/02/2035	सूर्य	08/06/2037
शनि	03/04/2030	गुरु	06/03/2031	शुक्र	15/07/2033	सूर्य	31/03/2035	चंद्र	07/11/2037
गुरु	01/05/2030	राहु	20/04/2031	सूर्य	07/09/2033	चंद्र	19/06/2035	मंगल	27/01/2038
राहु	20/05/2030	शुक्र	08/07/2031	चंद्र	21/01/2034	मंगल	01/08/2035	बुध	17/07/2038
शुक्र	20/06/2030	सूर्य	31/07/2031	मंगल	03/04/2034	बुध	30/10/2035	शनि	27/10/2038

बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल	
27/10/2038		16/09/2040		06/01/2044		16/12/2044		27/04/2047	
16/09/2040		06/01/2044		16/12/2044		27/04/2047		30/07/2048	
राहु	11/01/2039	शुक्र	08/05/2041	सूर्य	25/01/2044	चंद्र	15/04/2045	मंगल	31/05/2047
शुक्र	25/05/2039	सूर्य	14/07/2041	चंद्र	13/03/2044	मंगल	17/06/2045	बुध	12/08/2047
सूर्य	03/07/2039	चंद्र	29/12/2041	मंगल	07/04/2044	बुध	31/10/2045	शनि	23/09/2047
चंद्र	07/10/2039	मंगल	28/03/2042	बुध	01/06/2044	शनि	19/01/2046	गुरु	13/12/2047
मंगल	27/11/2039	बुध	05/10/2042	शनि	03/07/2044	गुरु	20/06/2046	राहु	02/02/2048
बुध	14/03/2040	शनि	24/01/2043	गुरु	01/09/2044	राहु	24/09/2046	शुक्र	02/05/2048
शनि	17/05/2040	गुरु	25/08/2043	राहु	10/10/2044	शुक्र	10/03/2047	सूर्य	27/05/2048
गुरु	16/09/2040	राहु	06/01/2044	शुक्र	16/12/2044	सूर्य	27/04/2047	चंद्र	30/07/2048

शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
30/07/2048		03/07/2049		07/04/2051		17/05/2052		27/04/2054	
03/07/2049		07/04/2051		17/05/2052		27/04/2054		16/11/2054	
शनि	30/08/2048	गुरु	24/10/2049	राहु	22/05/2051	शुक्र	02/10/2052	सूर्य	08/05/2054
गुरु	29/10/2048	राहु	04/01/2050	शुक्र	09/08/2051	सूर्य	10/11/2052	चंद्र	05/06/2054
राहु	06/12/2048	शुक्र	09/05/2050	सूर्य	31/08/2051	चंद्र	17/02/2053	मंगल	20/06/2054
शुक्र	09/02/2049	सूर्य	13/06/2050	चंद्र	27/10/2051	मंगल	11/04/2053	बुध	22/07/2054
सूर्य	28/02/2049	चंद्र	11/09/2050	मंगल	26/11/2051	बुध	31/07/2053	शनि	10/08/2054
चंद्र	16/04/2049	मंगल	28/10/2050	बुध	29/01/2052	शनि	05/10/2053	गुरु	15/09/2054
मंगल	11/05/2049	बुध	06/02/2051	शनि	06/03/2052	गुरु	07/02/2054	राहु	07/10/2054
बुध	03/07/2049	शनि	07/04/2051	गुरु	17/05/2052	राहु	27/04/2054	शुक्र	16/11/2054

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध		गुरु - गुरु		गुरु - राहु	
16/11/2054		06/04/2056		02/01/2057		31/07/2058		03/12/2061	
06/04/2056		02/01/2057		31/07/2058		03/12/2061		13/01/2064	
चंद्र	25/01/2055	मंगल	26/04/2056	बुध	02/04/2057	गुरु	02/03/2059	राहु	26/02/2062
मंगल	04/03/2055	बुध	08/06/2056	शनि	25/05/2057	राहु	16/07/2059	शुक्र	26/07/2062
बुध	23/05/2055	शनि	03/07/2056	गुरु	04/09/2057	शुक्र	10/03/2060	सूर्य	07/09/2062
शनि	09/07/2055	गुरु	19/08/2056	राहु	06/11/2057	सूर्य	16/05/2060	चंद्र	23/12/2062
गुरु	06/10/2055	राहु	19/09/2056	शुक्र	26/02/2058	चंद्र	02/11/2060	मंगल	18/02/2063
राहु	01/12/2055	शुक्र	10/11/2056	सूर्य	30/03/2058	मंगल	31/01/2061	बुध	20/06/2063
शुक्र	09/03/2056	सूर्य	25/11/2056	चंद्र	18/06/2058	बुध	12/08/2061	शनि	30/08/2063
सूर्य	06/04/2056	चंद्र	02/01/2057	मंगल	31/07/2058	शनि	03/12/2061	गुरु	13/01/2064

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध	
13/01/2064		23/09/2067		13/10/2068		03/06/2071		29/10/2072	
23/09/2067		13/10/2068		03/06/2071		29/10/2072		27/10/2075	
शुक्र	01/10/2064	सूर्य	14/10/2067	चंद्र	23/02/2069	मंगल	12/07/2071	बुध	19/04/2073
सूर्य	15/12/2064	चंद्र	07/12/2067	मंगल	06/05/2069	बुध	30/09/2071	शनि	30/07/2073
चंद्र	20/06/2065	मंगल	05/01/2068	बुध	05/10/2069	शनि	17/11/2071	गुरु	07/02/2074
मंगल	28/09/2065	बुध	05/03/2068	शनि	02/01/2070	गुरु	15/02/2072	राहु	08/06/2074
बुध	29/04/2066	शनि	10/04/2068	गुरु	20/06/2070	राहु	13/04/2072	शुक्र	07/01/2075
शनि	01/09/2066	गुरु	17/06/2068	राहु	05/10/2070	शुक्र	22/07/2072	सूर्य	08/03/2075
गुरु	26/04/2067	राहु	30/07/2068	शुक्र	11/04/2071	सूर्य	19/08/2072	चंद्र	07/08/2075
राहु	23/09/2067	शुक्र	13/10/2068	सूर्य	03/06/2071	चंद्र	29/10/2072	मंगल	27/10/2075

गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
27/10/2075		30/07/2077		29/11/2078		31/03/2081		29/11/2081	
30/07/2077		29/11/2078		31/03/2081		29/11/2081		31/07/2083	
शनि	25/12/2075	राहु	23/09/2077	शुक्र	14/05/2079	सूर्य	13/04/2081	चंद्र	22/02/2082
गुरु	16/04/2076	शुक्र	26/12/2077	सूर्य	30/06/2079	चंद्र	17/05/2081	मंगल	08/04/2082
राहु	27/06/2076	सूर्य	22/01/2078	चंद्र	27/10/2079	मंगल	04/06/2081	बुध	13/07/2082
शुक्र	30/10/2076	चंद्र	31/03/2078	मंगल	29/12/2079	बुध	12/07/2081	शनि	07/09/2082
सूर्य	04/12/2076	मंगल	06/05/2078	बुध	11/05/2080	शनि	04/08/2081	गुरु	23/12/2082
चंद्र	04/03/2077	बुध	22/07/2078	शनि	29/07/2080	गुरु	16/09/2081	राहु	01/03/2083
मंगल	20/04/2077	शनि	05/09/2078	गुरु	26/12/2080	राहु	13/10/2081	शुक्र	27/06/2083
बुध	30/07/2077	गुरु	29/11/2078	राहु	31/03/2081	शुक्र	29/11/2081	सूर्य	31/07/2083

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 1 वर्ष 2 मास 29 दिन

भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
09/07/1985	**07/10/1986**	**07/10/1992**	**07/10/1999**	**07/10/2007**
07/10/1986	**07/10/1992**	**07/10/1999**	**07/10/2007**	**07/10/2008**
00/00/0000	उल्क 07/10/1987	सिद्ध 16/02/1994	संक 18/07/2001	मंग 18/10/2007
00/00/0000	सिद्ध 07/12/1988	संक 07/09/1995	मंग 07/10/2001	पिंग 07/11/2007
00/00/0000	संक 08/04/1990	मंग 17/11/1995	पिंग 18/03/2002	धांय 07/12/2007
00/00/0000	मंग 07/06/1990	पिंग 07/04/1996	धांय 17/11/2002	भ्राम 17/01/2008
09/07/1985	पिंग 07/10/1990	धांय 06/11/1996	भ्राम 07/10/2003	भद्रि 08/03/2008
पिंग 17/10/1985	धांय 08/04/1991	भ्राम 17/08/1997	भद्रि 16/11/2004	उल्क 08/05/2008
धांय 18/03/1986	भ्राम 07/12/1991	भद्रि 07/08/1998	उल्क 18/03/2006	सिद्ध 18/07/2008
भ्राम 07/10/1986	भद्रि 07/10/1992	उल्क 07/10/1999	सिद्ध 07/10/2007	संक 07/10/2008

पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष
07/10/2008	**07/10/2010**	**07/10/2013**	**07/10/2017**	**07/10/2022**
07/10/2010	**07/10/2013**	**07/10/2017**	**07/10/2022**	**07/10/2028**
पिंग 16/11/2008	धांय 07/01/2011	भ्राम 18/03/2014	भद्रि 18/06/2018	उल्क 07/10/2023
धांय 16/01/2009	भ्राम 08/05/2011	भद्रि 07/10/2014	उल्क 18/04/2019	सिद्ध 07/12/2024
भ्राम 07/04/2009	भद्रि 07/10/2011	उल्क 08/06/2015	सिद्ध 07/04/2020	संक 08/04/2026
भद्रि 18/07/2009	उल्क 07/04/2012	सिद्ध 18/03/2016	संक 18/05/2021	मंग 07/06/2026
उल्क 17/11/2009	सिद्ध 06/11/2012	संक 05/02/2017	मंग 08/07/2021	पिंग 07/10/2026
सिद्ध 08/04/2010	संक 08/07/2013	मंग 18/03/2017	पिंग 17/10/2021	धांय 08/04/2027
संक 17/09/2010	मंग 07/08/2013	पिंग 07/06/2017	धांय 18/03/2022	भ्राम 07/12/2027
मंग 07/10/2010	पिंग 07/10/2013	धांय 07/10/2017	भ्राम 07/10/2022	भद्रि 07/10/2028

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
07/10/2028		07/10/2035		07/10/2043		07/10/2044		07/10/2046	
07/10/2035		07/10/2043		07/10/2044		07/10/2046		07/10/2049	
सिद्ध	16/02/2030	संक	18/07/2037	मंग	18/10/2043	पिंग	16/11/2044	धांय	07/01/2047
संक	07/09/2031	मंग	07/10/2037	पिंग	07/11/2043	धांय	16/01/2045	भ्राम	08/05/2047
मंग	17/11/2031	पिंग	18/03/2038	धांय	07/12/2043	भ्राम	07/04/2045	भद्रि	07/10/2047
पिंग	07/04/2032	धांय	17/11/2038	भ्राम	17/01/2044	भद्रि	18/07/2045	उल्क	07/04/2048
धांय	06/11/2032	भ्राम	07/10/2039	भद्रि	08/03/2044	उल्क	17/11/2045	सिद्ध	06/11/2048
भ्राम	17/08/2033	भद्रि	16/11/2040	उल्क	08/05/2044	सिद्ध	08/04/2046	संक	08/07/2049
भद्रि	07/08/2034	उल्क	18/03/2042	सिद्ध	18/07/2044	संक	17/09/2046	मंग	07/08/2049
उल्क	07/10/2035	सिद्ध	07/10/2043	संक	07/10/2044	मंग	07/10/2046	पिंग	07/10/2049

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
07/10/2049		07/10/2053		07/10/2058		07/10/2064		07/10/2071	
07/10/2053		07/10/2058		07/10/2064		07/10/2071		07/10/2079	
भ्राम	18/03/2050	भद्रि	18/06/2054	उल्क	07/10/2059	सिद्ध	16/02/2066	संक	18/07/2073
भद्रि	07/10/2050	उल्क	18/04/2055	सिद्ध	07/12/2060	संक	07/09/2067	मंग	07/10/2073
उल्क	08/06/2051	सिद्ध	07/04/2056	संक	08/04/2062	मंग	17/11/2067	पिंग	18/03/2074
सिद्ध	18/03/2052	संक	18/05/2057	मंग	07/06/2062	पिंग	07/04/2068	धांय	17/11/2074
संक	05/02/2053	मंग	08/07/2057	पिंग	07/10/2062	धांय	06/11/2068	भ्राम	07/10/2075
मंग	18/03/2053	पिंग	17/10/2057	धांय	08/04/2063	भ्राम	17/08/2069	भद्रि	16/11/2076
पिंग	07/06/2053	धांय	18/03/2058	भ्राम	07/12/2063	भद्रि	07/08/2070	उल्क	18/03/2078
धांय	07/10/2053	भ्राम	07/10/2058	भद्रि	07/10/2064	उल्क	07/10/2071	सिद्ध	07/10/2079

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
07/10/2079		07/10/2080		07/10/2082		07/10/2085		07/10/2089	
07/10/2080		07/10/2082		07/10/2085		07/10/2089		00/00/0000	
मंग	18/10/2079	पिंग	16/11/2080	धांय	07/01/2083	भ्राम	18/03/2086	भद्रि	18/06/2090
पिंग	07/11/2079	धांय	16/01/2081	भ्राम	08/05/2083	भद्रि	07/10/2086	उल्क	18/04/2091
धांय	07/12/2079	भ्राम	07/04/2081	भद्रि	07/10/2083	उल्क	08/06/2087	सिद्ध	07/04/2092
भ्राम	17/01/2080	भद्रि	18/07/2081	उल्क	07/04/2084	सिद्ध	18/03/2088	संक	18/05/2093
भद्रि	08/03/2080	उल्क	17/11/2081	सिद्ध	06/11/2084	संक	05/02/2089	मंग	08/07/2093
उल्क	08/05/2080	सिद्ध	08/04/2082	संक	08/07/2085	मंग	18/03/2089	पिंग	09/07/2093
सिद्ध	18/07/2080	संक	17/09/2082	मंग	07/08/2085	पिंग	07/06/2089		00/00/0000
संक	07/10/2080	मंग	07/10/2082	पिंग	07/10/2085	धांय	07/10/2089		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - संक		उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम	
07/12/2024		08/04/2026		07/06/2026		07/10/2026		08/04/2027	
08/04/2026		07/06/2026		07/10/2026		08/04/2027		07/12/2027	
संक	25/03/2025	मंग	09/04/2026	पिंग	14/06/2026	धांय	22/10/2026	भ्राम	05/05/2027
मंग	07/04/2025	पिंग	13/04/2026	धांय	24/06/2026	भ्राम	12/11/2026	भद्रि	08/06/2027
पिंग	04/05/2025	धांय	18/04/2026	भ्राम	08/07/2026	भद्रि	07/12/2026	उल्क	18/07/2027
धांय	14/06/2025	भ्राम	25/04/2026	भद्रि	25/07/2026	उल्क	07/01/2027	सिद्ध	04/09/2027
भ्राम	07/08/2025	भद्रि	03/05/2026	उल्क	14/08/2026	सिद्ध	11/02/2027	संक	28/10/2027
भद्रि	14/10/2025	उल्क	13/05/2026	सिद्ध	07/09/2026	संक	24/03/2027	मंग	04/11/2027
उल्क	03/01/2026	सिद्ध	25/05/2026	संक	04/10/2026	मंग	29/03/2027	पिंग	17/11/2027
सिद्ध	08/04/2026	संक	07/06/2026	मंग	07/10/2026	पिंग	08/04/2027	धांय	07/12/2027

उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग	
07/12/2027		07/10/2028		16/02/2030		07/09/2031		17/11/2031	
07/10/2028		16/02/2030		07/09/2031		17/11/2031		07/04/2032	
भद्रि	19/01/2028	सिद्ध	11/01/2029	संक	22/06/2030	मंग	09/09/2031	पिंग	25/11/2031
उल्क	09/03/2028	संक	02/05/2029	मंग	08/07/2030	पिंग	13/09/2031	धांय	07/12/2031
सिद्ध	08/05/2028	मंग	16/05/2029	पिंग	08/08/2030	धांय	19/09/2031	भ्राम	23/12/2031
संक	14/07/2028	पिंग	12/06/2029	धांय	25/09/2030	भ्राम	27/09/2031	भद्रि	11/01/2032
मंग	23/07/2028	धांय	24/07/2029	भ्राम	27/11/2030	भद्रि	07/10/2031	उल्क	04/02/2032
पिंग	09/08/2028	भ्राम	17/09/2029	भद्रि	14/02/2031	उल्क	18/10/2031	सिद्ध	03/03/2032
धांय	03/09/2028	भद्रि	25/11/2029	उल्क	20/05/2031	सिद्ध	01/11/2031	संक	03/04/2032
भ्राम	07/10/2028	उल्क	16/02/2030	सिद्ध	07/09/2031	संक	17/11/2031	मंग	07/04/2032

सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक	
07/04/2032		06/11/2032		17/08/2033		07/08/2034		07/10/2035	
06/11/2032		17/08/2033		07/08/2034		07/10/2035		18/07/2037	
धांय	25/04/2032	भ्राम	08/12/2032	भद्रि	06/10/2033	उल्क	17/10/2034	संक	29/02/2036
भ्राम	19/05/2032	भद्रि	16/01/2033	उल्क	04/12/2033	सिद्ध	08/01/2035	मंग	18/03/2036
भद्रि	17/06/2032	उल्क	05/03/2033	सिद्ध	11/02/2034	संक	13/04/2035	पिंग	23/04/2036
उल्क	23/07/2032	सिद्ध	29/04/2033	संक	01/05/2034	मंग	25/04/2035	धांय	16/06/2036
सिद्ध	02/09/2032	संक	01/07/2033	मंग	11/05/2034	पिंग	18/05/2035	भ्राम	27/08/2036
संक	19/10/2032	मंग	09/07/2033	पिंग	30/05/2034	धांय	23/06/2035	भद्रि	25/11/2036
मंग	25/10/2032	पिंग	25/07/2033	धांय	29/06/2034	भ्राम	09/08/2035	उल्क	14/03/2037
पिंग	06/11/2032	धांय	17/08/2033	भ्राम	07/08/2034	भद्रि	07/10/2035	सिद्ध	18/07/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - मंग		संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि	
18/07/2037		07/10/2037		18/03/2038		17/11/2038		07/10/2039	
07/10/2037		18/03/2038		17/11/2038		07/10/2039		16/11/2040	
मंग	20/07/2037	पिंग	16/10/2037	धांय	08/04/2038	भ्राम	23/12/2038	भद्रि	03/12/2039
पिंग	25/07/2037	धांय	30/10/2037	भ्राम	05/05/2038	भद्रि	06/02/2039	उल्क	08/02/2040
धांय	31/07/2037	भ्राम	17/11/2037	भद्रि	07/06/2038	उल्क	01/04/2039	सिद्ध	27/04/2040
भ्राम	09/08/2037	भद्रि	09/12/2037	उल्क	18/07/2038	सिद्ध	03/06/2039	संक	27/07/2040
भद्रि	21/08/2037	उल्क	05/01/2038	सिद्ध	03/09/2038	संक	14/08/2039	मंग	07/08/2040
उल्क	03/09/2037	सिद्ध	06/02/2038	संक	28/10/2038	मंग	23/08/2039	पिंग	29/08/2040
सिद्ध	19/09/2037	संक	14/03/2038	मंग	03/11/2038	पिंग	10/09/2039	धांय	02/10/2040
संक	07/10/2037	मंग	18/03/2038	पिंग	17/11/2038	धांय	07/10/2039	भ्राम	16/11/2040

संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग		मंग - धांय	
16/11/2040		18/03/2042		07/10/2043		18/10/2043		07/11/2043	
18/03/2042		07/10/2043		18/10/2043		07/11/2043		07/12/2043	
उल्क	05/02/2041	सिद्ध	07/07/2042	मंग	08/10/2043	पिंग	19/10/2043	धांय	09/11/2043
सिद्ध	11/05/2041	संक	10/11/2042	पिंग	08/10/2043	धांय	20/10/2043	भ्राम	13/11/2043
संक	27/08/2041	मंग	26/11/2042	धांय	09/10/2043	भ्राम	23/10/2043	भद्रि	17/11/2043
मंग	10/09/2041	पिंग	27/12/2042	भ्राम	10/10/2043	भद्रि	26/10/2043	उल्क	22/11/2043
पिंग	07/10/2041	धांय	13/02/2043	भद्रि	12/10/2043	उल्क	29/10/2043	सिद्ध	28/11/2043
धांय	17/11/2041	भ्राम	17/04/2043	उल्क	13/10/2043	सिद्ध	02/11/2043	संक	05/12/2043
भ्राम	10/01/2042	भद्रि	05/07/2043	सिद्ध	15/10/2043	संक	06/11/2043	मंग	06/12/2043
भद्रि	18/03/2042	उल्क	07/10/2043	संक	18/10/2043	मंग	07/11/2043	पिंग	07/12/2043

मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध		मंग - संक	
07/12/2043		17/01/2044		08/03/2044		08/05/2044		18/07/2044	
17/01/2044		08/03/2044		08/05/2044		18/07/2044		07/10/2044	
भ्राम	12/12/2043	भद्रि	24/01/2044	उल्क	18/03/2044	सिद्ध	21/05/2044	संक	05/08/2044
भद्रि	17/12/2043	उल्क	01/02/2044	सिद्ध	30/03/2044	संक	06/06/2044	मंग	07/08/2044
उल्क	24/12/2043	सिद्ध	11/02/2044	संक	12/04/2044	मंग	08/06/2044	पिंग	11/08/2044
सिद्ध	01/01/2044	संक	23/02/2044	मंग	14/04/2044	पिंग	12/06/2044	धांय	18/08/2044
संक	10/01/2044	मंग	24/02/2044	पिंग	17/04/2044	धांय	18/06/2044	भ्राम	27/08/2044
मंग	11/01/2044	पिंग	27/02/2044	धांय	22/04/2044	भ्राम	26/06/2044	भद्रि	07/09/2044
पिंग	14/01/2044	धांय	02/03/2044	भ्राम	29/04/2044	भद्रि	06/07/2044	उल्क	21/09/2044
धांय	17/01/2044	भ्राम	08/03/2044	भद्रि	08/05/2044	उल्क	18/07/2044	सिद्ध	07/10/2044

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 20 वर्ष 9 मास 7 दिन
कुल दशाकाल : 86 वर्ष
तिथि : उ०भाद्रपद - 4 सव्य
देह : कर्क जीव : मीन

कर्क 21 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष	
09/07/1985		17/04/2006		17/04/2011		16/04/2020		16/04/2036	
17/04/2006		17/04/2011		16/04/2020		16/04/2036		17/04/2043	
कर्क	02/06/1990	सिंह	01/08/2006	मिथु	26/03/2012	वृष	09/04/2023	मेष	10/11/2036
सिंह	22/08/1991	मिथु	08/02/2007	वृष	28/11/2013	मेष	27/07/2024	मीन	04/09/2037
मिथु	02/11/1993	वृष	14/01/2008	मेष	22/08/2014	मीन	07/06/2026	कुंभ	01/01/2038
वृष	29/09/1997	मेष	10/06/2008	मीन	08/09/2015	कुंभ	06/03/2027	मक	30/04/2038
मेष	15/06/1999	मीन	09/01/2009	कुंभ	08/02/2016	मक	02/12/2027	धनु	21/02/2039
मीन	23/11/2001	कुंभ	04/04/2009	मक	10/07/2016	धनु	12/10/2029	कर्क	06/11/2040
कुंभ	15/11/2002	मक	28/06/2009	धनु	27/07/2017	कर्क	08/09/2033	सिंह	04/04/2041
मक	07/11/2003	धनु	26/01/2010	कर्क	08/10/2019	सिंह	14/08/2034	मिथु	27/12/2041
धनु	17/04/2006	कर्क	17/04/2011	सिंह	16/04/2020	मिथु	16/04/2036	वृष	17/04/2043

मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		धनु 10 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
17/04/2043		17/04/2053		17/04/2057		17/04/2061		17/04/2071	
17/04/2053		17/04/2057		17/04/2061		17/04/2071		00/00/0000	
मीन	15/06/2044	कुंभ	23/06/2053	मक	23/06/2057	धनु	15/06/2062	कर्क	09/07/2071
कुंभ	02/12/2044	मक	30/08/2053	धनु	10/12/2057	कर्क	23/11/2064		00/00/0000
मक	20/05/2045	धनु	16/02/2054	कर्क	02/12/2058	सिंह	23/06/2065		00/00/0000
धनु	19/07/2046	कर्क	08/02/2055	सिंह	25/02/2059	मिथु	11/07/2066		00/00/0000
कर्क	27/12/2048	सिंह	04/05/2055	मिथु	28/07/2059	वृष	20/05/2068		00/00/0000
सिंह	27/07/2049	मिथु	04/10/2055	वृष	25/04/2060	मेष	14/03/2069		00/00/0000
मिथु	14/08/2050	वृष	02/07/2056	मेष	22/08/2060	मीन	12/05/2070		00/00/0000
वृष	23/06/2052	मेष	29/10/2056	मीन	08/02/2061	कुंभ	29/10/2070		00/00/0000
मेष	17/04/2053	मीन	17/04/2057	कुंभ	17/04/2061	मक	17/04/2071		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मीन		वृष - कुंभ		वृष - मक		वृष - धनु		वृष - कर्क	
27/07/2024		07/06/2026		06/03/2027		02/12/2027		12/10/2029	
07/06/2026		06/03/2027		02/12/2027		12/10/2029		08/09/2033	
मीन	14/10/2024	कुंभ	19/06/2026	मक	18/03/2027	धनु	19/02/2028	कर्क	25/09/2030
कुंभ	15/11/2024	मक	02/07/2026	धनु	19/04/2027	कर्क	03/08/2028	सिंह	17/12/2030
मक	16/12/2024	धनु	03/08/2026	कर्क	24/06/2027	सिंह	12/09/2028	मिथु	16/05/2031
धनु	05/03/2025	कर्क	08/10/2026	सिंह	10/07/2027	मिथु	22/11/2028	वृष	05/02/2032
कर्क	18/08/2025	सिंह	24/10/2026	मिथु	07/08/2027	वृष	28/03/2029	मेष	31/05/2032
सिंह	27/09/2025	मिथु	21/11/2026	वृष	27/09/2027	मेष	23/05/2029	मीन	13/11/2032
मिथु	07/12/2025	वृष	11/01/2027	मेष	19/10/2027	मीन	10/08/2029	कुंभ	19/01/2033
वृष	12/04/2026	मेष	02/02/2027	मीन	20/11/2027	कुंभ	10/09/2029	मक	26/03/2033
मेष	07/06/2026	मीन	06/03/2027	कुंभ	02/12/2027	मक	12/10/2029	धनु	08/09/2033

वृष - सिंह		वृष - मिथु		मेष - मेष		मेष - मीन		मेष - कुंभ	
08/09/2033		14/08/2034		16/04/2036		10/11/2036		04/09/2037	
14/08/2034		16/04/2036		10/11/2036		04/09/2037		01/01/2038	
सिंह	28/09/2033	मिथु	17/10/2034	मेष	03/05/2036	मीन	15/12/2036	कुंभ	09/09/2037
मिथु	02/11/2033	वृष	07/02/2035	मीन	27/05/2036	कुंभ	29/12/2036	मक	15/09/2037
वृष	04/01/2034	मेष	29/03/2035	कुंभ	06/06/2036	मक	12/01/2037	धनु	29/09/2037
मेष	01/02/2034	मीन	08/06/2035	मक	16/06/2036	धनु	15/02/2037	कर्क	28/10/2037
मीन	13/03/2034	कुंभ	07/07/2035	धनु	10/07/2036	कर्क	29/04/2037	सिंह	04/11/2037
कुंभ	28/03/2034	मक	04/08/2035	कर्क	30/08/2036	सिंह	16/05/2037	मिथु	16/11/2037
मक	13/04/2034	धनु	14/10/2035	सिंह	11/09/2036	मिथु	16/06/2037	वृष	08/12/2037
धनु	23/05/2034	कर्क	12/03/2036	मिथु	03/10/2036	वृष	10/08/2037	मेष	18/12/2037
कर्क	14/08/2034	सिंह	16/04/2036	वृष	10/11/2036	मेष	04/09/2037	मीन	01/01/2038

मेष - मक		मेष - धनु		मेष - कर्क		मेष - सिंह		मेष - मिथु	
01/01/2038		30/04/2038		21/02/2039		06/11/2040		04/04/2041	
30/04/2038		21/02/2039		06/11/2040		04/04/2041		27/12/2041	
मक	06/01/2038	धनु	03/06/2038	कर्क	23/07/2039	सिंह	15/11/2040	मिथु	02/05/2041
धनु	20/01/2038	कर्क	15/08/2038	सिंह	29/08/2039	मिथु	30/11/2040	वृष	21/06/2041
कर्क	18/02/2038	सिंह	01/09/2038	मिथु	02/11/2039	वृष	28/12/2040	मेष	12/07/2041
सिंह	25/02/2038	मिथु	02/10/2038	वृष	26/02/2040	मेष	09/01/2041	मीन	12/08/2041
मिथु	09/03/2038	वृष	26/11/2038	मेष	17/04/2040	मीन	26/01/2041	कुंभ	25/08/2041
वृष	31/03/2038	मेष	21/12/2038	मीन	28/06/2040	कुंभ	02/02/2041	मक	06/09/2041
मेष	10/04/2038	मीन	24/01/2039	कुंभ	27/07/2040	मक	09/02/2041	धनु	07/10/2041
मीन	24/04/2038	कुंभ	07/02/2039	मक	26/08/2040	धनु	26/02/2041	कर्क	12/12/2041
कुंभ	30/04/2038	मक	21/02/2039	धनु	06/11/2040	कर्क	04/04/2041	सिंह	27/12/2041

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मेष - वृष		मीन - मीन		मीन - कुंभ		मीन - मक		मीन - धनु	
27/12/2041		17/04/2043		15/06/2044		02/12/2044		20/05/2045	
17/04/2043		15/06/2044		02/12/2044		20/05/2045		19/07/2046	
वृष	26/03/2042	मीन	05/06/2043	कुंभ	23/06/2044	मक	10/12/2044	धनु	09/07/2045
मेष	04/05/2042	कुंभ	25/06/2043	मक	01/07/2044	धनु	29/12/2044	कर्क	21/10/2045
मीन	28/06/2042	मक	15/07/2043	धनु	20/07/2044	कर्क	09/02/2045	सिंह	14/11/2045
कुंभ	20/07/2042	धनु	02/09/2043	कर्क	31/08/2044	सिंह	19/02/2045	मिथु	29/12/2045
मक	11/08/2042	कर्क	15/12/2043	सिंह	10/09/2044	मिथु	08/03/2045	वृष	18/03/2046
धनु	05/10/2042	सिंह	09/01/2044	मिथु	27/09/2044	वृष	09/04/2045	मेष	21/04/2046
कर्क	30/01/2043	मिथु	22/02/2044	वृष	29/10/2044	मेष	23/04/2045	मीन	10/06/2046
सिंह	26/02/2043	वृष	11/05/2044	मेष	12/11/2044	मीन	13/05/2045	कुंभ	29/06/2046
मिथु	17/04/2043	मेष	15/06/2044	मीन	02/12/2044	कुंभ	20/05/2045	मक	19/07/2046

मीन - कर्क		मीन - सिंह		मीन - मिथु		मीन - वृष		मीन - मेष	
19/07/2046		27/12/2048		27/07/2049		14/08/2050		23/06/2052	
27/12/2048		27/07/2049		14/08/2050		23/06/2052		17/04/2053	
कर्क	22/02/2047	सिंह	08/01/2049	मिथु	05/09/2049	वृष	18/12/2050	मेष	17/07/2052
सिंह	15/04/2047	मिथु	31/01/2049	वृष	16/11/2049	मेष	11/02/2051	मीन	21/08/2052
मिथु	17/07/2047	वृष	11/03/2049	मेष	17/12/2049	मीन	01/05/2051	कुंभ	04/09/2052
वृष	30/12/2047	मेष	28/03/2049	मीन	30/01/2050	कुंभ	02/06/2051	मक	18/09/2052
मेष	12/03/2048	मीन	22/04/2049	कुंभ	17/02/2050	मक	04/07/2051	धनु	22/10/2052
मीन	23/06/2048	कुंभ	02/05/2049	मक	07/03/2050	धनु	21/09/2051	कर्क	03/01/2053
कुंभ	04/08/2048	मक	12/05/2049	धनु	20/04/2050	कर्क	05/03/2052	सिंह	20/01/2053
मक	14/09/2048	धनु	06/06/2049	कर्क	22/07/2050	सिंह	13/04/2052	मिथु	20/02/2053
धनु	27/12/2048	कर्क	27/07/2049	सिंह	14/08/2050	मिथु	23/06/2052	वृष	17/04/2053

कुंभ - कुंभ		कुंभ - मक		कुंभ - धनु		कुंभ - कर्क		कुंभ - सिंह	
17/04/2053		23/06/2053		30/08/2053		16/02/2054		08/02/2055	
23/06/2053		30/08/2053		16/02/2054		08/02/2055		04/05/2055	
कुंभ	20/04/2053	मक	27/06/2053	धनु	19/09/2053	कर्क	14/05/2054	सिंह	13/02/2055
मक	23/04/2053	धनु	05/07/2053	कर्क	31/10/2053	सिंह	04/06/2054	मिथु	22/02/2055
धनु	01/05/2053	कर्क	21/07/2053	सिंह	10/11/2053	मिथु	11/07/2054	वृष	10/03/2055
कर्क	17/05/2053	सिंह	25/07/2053	मिथु	27/11/2053	वृष	16/09/2054	मेष	17/03/2055
सिंह	21/05/2053	मिथु	01/08/2053	वृष	29/12/2053	मेष	15/10/2054	मीन	26/03/2055
मिथु	28/05/2053	वृष	14/08/2053	मेष	12/01/2054	मीन	25/11/2054	कुंभ	30/03/2055
वृष	10/06/2053	मेष	19/08/2053	मीन	31/01/2054	कुंभ	12/12/2054	मक	03/04/2055
मेष	16/06/2053	मीन	27/08/2053	कुंभ	08/02/2054	मक	29/12/2054	धनु	13/04/2055
मीन	23/06/2053	कुंभ	30/08/2053	मक	16/02/2054	धनु	08/02/2055	कर्क	04/05/2055

चर दशा

भोग्य दशा काल : सिंह 2 वर्ष 0 मास 0 दिन

सिंह 2 वर्ष	
09/07/1985	
09/07/1987	
कन्या	08/09/1985
तुला	08/11/1985
वृश्चि	07/01/1986
धनु	09/03/1986
मक	09/05/1986
कुंभ	09/07/1986
मीन	08/09/1986
मेष	08/11/1986
वृष	08/01/1987
मिथु	10/03/1987
कर्क	09/05/1987
सिंह	09/07/1987

कन्या 2 वर्ष	
09/07/1987	
09/07/1989	
तुला	08/09/1987
वृश्चि	08/11/1987
धनु	08/01/1988
मक	09/03/1988
कुंभ	09/05/1988
मीन	09/07/1988
मेष	07/09/1988
वृष	07/11/1988
मिथु	07/01/1989
कर्क	09/03/1989
सिंह	09/05/1989
कन्या	09/07/1989

तुला 7 वर्ष	
09/07/1989	
09/07/1996	
वृश्चि	07/02/1990
धनु	08/09/1990
मक	09/04/1991
कुंभ	08/11/1991
मीन	08/06/1992
मेष	07/01/1993
वृष	08/08/1993
मिथु	09/03/1994
कर्क	08/10/1994
सिंह	09/05/1995
कन्या	09/12/1995
तुला	09/07/1996

वृश्चिक 7 वर्ष	
09/07/1996	
09/07/2003	
तुला	07/02/1997
कन्या	08/09/1997
सिंह	09/04/1998
कर्क	08/11/1998
मिथु	09/06/1999
वृष	08/01/2000
मेष	08/08/2000
मीन	09/03/2001
कुंभ	08/10/2001
मक	09/05/2002
धनु	08/12/2002
वृश्चि	09/07/2003

धनु 1 वर्ष	
09/07/2003	
09/07/2004	
वृश्चि	09/08/2003
तुला	08/09/2003
कन्या	09/10/2003
सिंह	08/11/2003
कर्क	09/12/2003
मिथु	08/01/2004
वृष	07/02/2004
मेष	09/03/2004
मीन	08/04/2004
कुंभ	09/05/2004
मक	08/06/2004
धनु	09/07/2004

मकर 3 वर्ष	
09/07/2004	
09/07/2007	
धनु	08/10/2004
वृश्चि	07/01/2005
तुला	09/04/2005
कन्या	09/07/2005
सिंह	08/10/2005
कर्क	07/01/2006
मिथु	09/04/2006
वृष	09/07/2006
मेष	08/10/2006
मीन	08/01/2007
कुंभ	09/04/2007
मक	09/07/2007

कुम्भ 4 वर्ष	
09/07/2007	
09/07/2011	
मीन	08/11/2007
मेष	09/03/2008
वृष	09/07/2008
मिथु	07/11/2008
कर्क	09/03/2009
सिंह	09/07/2009
कन्या	08/11/2009
तुला	09/03/2010
वृश्चि	09/07/2010
धनु	08/11/2010
मक	10/03/2011
कुंभ	09/07/2011

मीन 2 वर्ष	
09/07/2011	
09/07/2013	
मेष	08/09/2011
वृष	08/11/2011
मिथु	08/01/2012
कर्क	09/03/2012
सिंह	09/05/2012
कन्या	09/07/2012
तुला	07/09/2012
वृश्चि	07/11/2012
धनु	07/01/2013
मक	09/03/2013
कुंभ	09/05/2013
मीन	09/07/2013

मेष 2 वर्ष	
09/07/2013	
09/07/2015	
वृष	08/09/2013
मिथु	08/11/2013
कर्क	07/01/2014
सिंह	09/03/2014
कन्या	09/05/2014
तुला	09/07/2014
वृश्चि	08/09/2014
धनु	08/11/2014
मक	08/01/2015
कुंभ	10/03/2015
मीन	09/05/2015
मेष	09/07/2015

वृष 12 वर्ष	
09/07/2015	
09/07/2027	
मेष	09/07/2016
मीन	09/07/2017
कुंभ	09/07/2018
मक	09/07/2019
धनु	09/07/2020
वृश्चि	09/07/2021
तुला	09/07/2022
कन्या	09/07/2023
सिंह	09/07/2024
कर्क	09/07/2025
मिथु	09/07/2026
वृष	09/07/2027

मिथुन 1 वर्ष	
09/07/2027	
09/07/2028	
वृष	09/08/2027
मेष	08/09/2027
मीन	09/10/2027
कुंभ	08/11/2027
मक	09/12/2027
धनु	08/01/2028
वृश्चि	07/02/2028
तुला	09/03/2028
कन्या	08/04/2028
सिंह	09/05/2028
कर्क	08/06/2028
मिथु	09/07/2028

कर्क 4 वर्ष	
09/07/2028	
09/07/2032	
मिथु	07/11/2028
वृष	09/03/2029
मेष	09/07/2029
मीन	08/11/2029
कुंभ	09/03/2030
मक	09/07/2030
धनु	08/11/2030
वृश्चि	10/03/2031
तुला	09/07/2031
कन्या	08/11/2031
सिंह	09/03/2032
कर्क	09/07/2032

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मिथु		वृष - वृष		मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन	
09/07/2025		09/07/2026		09/07/2027		09/08/2027		08/09/2027	
09/07/2026		09/07/2027		09/08/2027		08/09/2027		09/10/2027	
वृष	08/08/2025	मेष	09/08/2026	मेष	12/07/2027	वृष	11/08/2027	मेष	11/09/2027
मेष	08/09/2025	मीन	08/09/2026	मीन	14/07/2027	मिथु	14/08/2027	वृष	13/09/2027
मीन	08/10/2025	कुंभ	08/10/2026	कुंभ	17/07/2027	कर्क	16/08/2027	मिथु	16/09/2027
कुंभ	08/11/2025	मक	08/11/2026	मक	20/07/2027	सिंह	19/08/2027	कर्क	18/09/2027
मक	08/12/2025	धनु	08/12/2026	धनु	22/07/2027	कन्या	21/08/2027	सिंह	21/09/2027
धनु	07/01/2026	वृश्चि	08/01/2027	वृश्चि	25/07/2027	तुला	24/08/2027	कन्या	23/09/2027
वृश्चि	07/02/2026	तुला	07/02/2027	तुला	27/07/2027	वृश्चि	27/08/2027	तुला	26/09/2027
तुला	09/03/2026	कन्या	10/03/2027	कन्या	30/07/2027	धनु	29/08/2027	वृश्चि	29/09/2027
कन्या	09/04/2026	सिंह	09/04/2027	सिंह	01/08/2027	मक	01/09/2027	धनु	01/10/2027
सिंह	09/05/2026	कर्क	09/05/2027	कर्क	04/08/2027	कुंभ	03/09/2027	मक	04/10/2027
कर्क	09/06/2026	मिथु	09/06/2027	मिथु	06/08/2027	मीन	06/09/2027	कुंभ	06/10/2027
मिथु	09/07/2026	वृष	09/07/2027	वृष	09/08/2027	मेष	08/09/2027	मीन	09/10/2027

मिथु - कुंभ		मिथु - मक		मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला	
09/10/2027		08/11/2027		09/12/2027		08/01/2028		07/02/2028	
08/11/2027		09/12/2027		08/01/2028		07/02/2028		09/03/2028	
मीन	11/10/2027	धनु	11/11/2027	वृश्चि	11/12/2027	तुला	11/01/2028	वृश्चि	10/02/2028
मेष	14/10/2027	वृश्चि	13/11/2027	तुला	14/12/2027	कन्या	13/01/2028	धनु	13/02/2028
वृष	16/10/2027	तुला	16/11/2027	कन्या	16/12/2027	सिंह	16/01/2028	मक	15/02/2028
मिथु	19/10/2027	कन्या	18/11/2027	सिंह	19/12/2027	कर्क	18/01/2028	कुंभ	18/02/2028
कर्क	21/10/2027	सिंह	21/11/2027	कर्क	21/12/2027	मिथु	21/01/2028	मीन	20/02/2028
सिंह	24/10/2027	कर्क	23/11/2027	मिथु	24/12/2027	वृष	23/01/2028	मेष	23/02/2028
कन्या	26/10/2027	मिथु	26/11/2027	वृष	26/12/2027	मेष	26/01/2028	वृष	25/02/2028
तुला	29/10/2027	वृष	28/11/2027	मेष	29/12/2027	मीन	28/01/2028	मिथु	28/02/2028
वृश्चि	01/11/2027	मेष	01/12/2027	मीन	31/12/2027	कुंभ	31/01/2028	कर्क	01/03/2028
धनु	03/11/2027	मीन	03/12/2027	कुंभ	03/01/2028	मक	02/02/2028	सिंह	04/03/2028
मक	06/11/2027	कुंभ	06/12/2027	मक	05/01/2028	धनु	05/02/2028	कन्या	06/03/2028
कुंभ	08/11/2027	मक	09/12/2027	धनु	08/01/2028	वृश्चि	07/02/2028	तुला	09/03/2028

मिथु - कन्या		मिथु - सिंह		मिथु - कर्क		मिथु - मिथु		कर्क - मिथु	
09/03/2028		08/04/2028		09/05/2028		08/06/2028		09/07/2028	
08/04/2028		09/05/2028		08/06/2028		09/07/2028		07/11/2028	
तुला	11/03/2028	कन्या	11/04/2028	मिथु	11/05/2028	वृष	11/06/2028	वृष	19/07/2028
वृश्चि	14/03/2028	तुला	13/04/2028	वृष	14/05/2028	मेष	13/06/2028	मेष	29/07/2028
धनु	16/03/2028	वृश्चि	16/04/2028	मेष	16/05/2028	मीन	16/06/2028	मीन	08/08/2028
मक	19/03/2028	धनु	18/04/2028	मीन	19/05/2028	कुंभ	18/06/2028	कुंभ	18/08/2028
कुंभ	22/03/2028	मक	21/04/2028	कुंभ	21/05/2028	मक	21/06/2028	मक	28/08/2028
मीन	24/03/2028	कुंभ	24/04/2028	मक	24/05/2028	धनु	23/06/2028	धनु	07/09/2028
मेष	27/03/2028	मीन	26/04/2028	धनु	26/05/2028	वृश्चि	26/06/2028	वृश्चि	18/09/2028
वृष	29/03/2028	मेष	29/04/2028	वृश्चि	29/05/2028	तुला	28/06/2028	तुला	28/09/2028
मिथु	01/04/2028	वृष	01/05/2028	तुला	01/06/2028	कन्या	01/07/2028	कन्या	08/10/2028
कर्क	03/04/2028	मिथु	04/05/2028	कन्या	03/06/2028	सिंह	04/07/2028	सिंह	18/10/2028
सिंह	06/04/2028	कर्क	06/05/2028	सिंह	06/06/2028	कर्क	06/07/2028	कर्क	28/10/2028
कन्या	08/04/2028	सिंह	09/05/2028	कर्क	08/06/2028	मिथु	09/07/2028	मिथु	07/11/2028

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - वृष		कर्क - मेष		कर्क - मीन		कर्क - कुंभ		कर्क - मक	
07/11/2028		09/03/2029		09/07/2029		08/11/2029		09/03/2030	
09/03/2029		09/07/2029		08/11/2029		09/03/2030		09/07/2030	
मेष	18/11/2028	वृष	19/03/2029	मेष	19/07/2029	मीन	18/11/2029	धनु	20/03/2030
मीन	28/11/2028	मिथु	29/03/2029	वृष	29/07/2029	मेष	28/11/2029	वृश्चि	30/03/2030
कुंभ	08/12/2028	कर्क	09/04/2029	मिथु	08/08/2029	वृष	08/12/2029	तुला	09/04/2030
मक	18/12/2028	सिंह	19/04/2029	कर्क	18/08/2029	मिथु	18/12/2029	कन्या	19/04/2030
धनु	28/12/2028	कन्या	29/04/2029	सिंह	29/08/2029	कर्क	28/12/2029	सिंह	29/04/2030
वृश्चि	07/01/2029	तुला	09/05/2029	कन्या	08/09/2029	सिंह	07/01/2030	कर्क	09/05/2030
तुला	17/01/2029	वृश्चि	19/05/2029	तुला	18/09/2029	कन्या	18/01/2030	मिथु	19/05/2030
कन्या	28/01/2029	धनु	29/05/2029	वृश्चि	28/09/2029	तुला	28/01/2030	वृष	30/05/2030
सिंह	07/02/2029	मक	08/06/2029	धनु	08/10/2029	वृश्चि	07/02/2030	मेष	09/06/2030
कर्क	17/02/2029	कुंभ	19/06/2029	मक	18/10/2029	धनु	17/02/2030	मीन	19/06/2030
मिथु	27/02/2029	मीन	29/06/2029	कुंभ	28/10/2029	मक	27/02/2030	कुंभ	29/06/2030
वृष	09/03/2029	मेष	09/07/2029	मीन	08/11/2029	कुंभ	09/03/2030	मक	09/07/2030

कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि		कर्क - तुला		कर्क - कन्या		कर्क - सिंह	
09/07/2030		08/11/2030		10/03/2031		09/07/2031		08/11/2031	
08/11/2030		10/03/2031		09/07/2031		08/11/2031		09/03/2032	
वृश्चि	19/07/2030	तुला	18/11/2030	वृश्चि	20/03/2031	तुला	20/07/2031	कन्या	18/11/2031
तुला	29/07/2030	कन्या	28/11/2030	धनु	30/03/2031	वृश्चि	30/07/2031	तुला	28/11/2031
कन्या	09/08/2030	सिंह	08/12/2030	मक	09/04/2031	धनु	09/08/2031	वृश्चि	09/12/2031
सिंह	19/08/2030	कर्क	18/12/2030	कुंभ	19/04/2031	मक	19/08/2031	धनु	19/12/2031
कर्क	29/08/2030	मिथु	29/12/2030	मीन	29/04/2031	कुंभ	29/08/2031	मक	29/12/2031
मिथु	08/09/2030	वृष	08/01/2031	मेष	09/05/2031	मीन	08/09/2031	कुंभ	08/01/2032
वृष	18/09/2030	मेष	18/01/2031	वृष	20/05/2031	मेष	18/09/2031	मीन	18/01/2032
मेष	28/09/2030	मीन	28/01/2031	मिथु	30/05/2031	वृष	29/09/2031	मेष	28/01/2032
मीन	08/10/2030	कुंभ	07/02/2031	कर्क	09/06/2031	मिथु	09/10/2031	वृष	07/02/2032
कुंभ	19/10/2030	मक	17/02/2031	सिंह	19/06/2031	कर्क	19/10/2031	मिथु	18/02/2032
मक	29/10/2030	धनु	27/02/2031	कन्या	29/06/2031	सिंह	29/10/2031	कर्क	28/02/2032
धनु	08/11/2030	वृश्चि	10/03/2031	तुला	09/07/2031	कन्या	08/11/2031	सिंह	09/03/2032

कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क		कर्क - कर्क	
09/03/2032		09/03/2032		09/03/2032		09/03/2032		09/03/2032	
09/07/2032		09/07/2032		09/07/2032		09/07/2032		09/07/2032	
मिथु	19/03/2032	मिथु	19/03/2032	मिथु	19/03/2032	मिथु	19/03/2032	मिथु	19/03/2032
वृष	29/03/2032	वृष	29/03/2032	वृष	29/03/2032	वृष	29/03/2032	वृष	29/03/2032
मेष	08/04/2032	मेष	08/04/2032	मेष	08/04/2032	मेष	08/04/2032	मेष	08/04/2032
मीन	18/04/2032	मीन	18/04/2032	मीन	18/04/2032	मीन	18/04/2032	मीन	18/04/2032
कुंभ	29/04/2032	कुंभ	29/04/2032	कुंभ	29/04/2032	कुंभ	29/04/2032	कुंभ	29/04/2032
मक	09/05/2032	मक	09/05/2032	मक	09/05/2032	मक	09/05/2032	मक	09/05/2032
धनु	19/05/2032	धनु	19/05/2032	धनु	19/05/2032	धनु	19/05/2032	धनु	19/05/2032
वृश्चि	29/05/2032	वृश्चि	29/05/2032	वृश्चि	29/05/2032	वृश्चि	29/05/2032	वृश्चि	29/05/2032
तुला	08/06/2032	तुला	08/06/2032	तुला	08/06/2032	तुला	08/06/2032	तुला	08/06/2032
कन्या	18/06/2032	कन्या	18/06/2032	कन्या	18/06/2032	कन्या	18/06/2032	कन्या	18/06/2032
सिंह	28/06/2032	सिंह	28/06/2032	सिंह	28/06/2032	सिंह	28/06/2032	सिंह	28/06/2032
कर्क	09/07/2032	कर्क	09/07/2032	कर्क	09/07/2032	कर्क	09/07/2032	कर्क	09/07/2032

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 3, 6, 9
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	89%	धनार्जन, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	84%	धनार्जन, भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	76%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	70%	भाग्योदय, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	59%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	47%	व्यय, हानि, धन हानि
पुखराज	गुरु	25%	शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	3%	पराक्रम हानि, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, व्यय

रत्न की शुभता

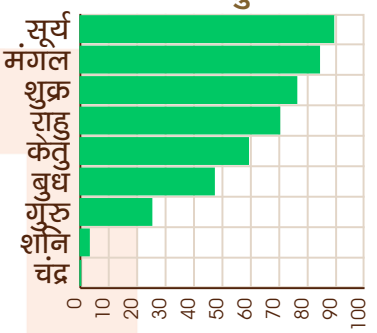

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	04/04/1990	77%	0%	72%	55%	25%	82%	28%	77%	44%
बुध	04/04/2007	95%	0%	84%	61%	25%	82%	3%	70%	59%
केतु	04/04/2014	77%	0%	91%	47%	25%	82%	0%	58%	72%
शुक्र	04/04/2034	77%	0%	84%	55%	25%	89%	16%	77%	66%
सूर्य	04/04/2040	100%	0%	91%	47%	38%	64%	0%	58%	44%
चंद्र	04/04/2050	95%	0%	84%	55%	25%	76%	3%	58%	44%
मंगल	04/04/2057	95%	0%	97%	22%	38%	76%	3%	58%	66%
राहु	04/04/2075	77%	0%	72%	47%	25%	82%	16%	83%	44%
गुरु	04/04/2091	95%	0%	91%	22%	50%	64%	3%	70%	59%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, मूंगा व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना व पुखराज रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

नीलम व मोती रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से

विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने से आप धनवान, बलवान और सुखी बनेंगे। यह रत्न धारण कर आप स्वाभिमानी बनेंगे। रत्न धारण से आप तपस्वी और योगी समान बनेंगे। आपका जीवन सदाचार युक्त होगा। माणिक्य रत्न धारण कर आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माणिक्य रत्न आपको उच्च पद की प्राप्ति होगी। उच्च अधिकारियों से आपके संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न आपको महत्त्वाकांक्षी बनाएगा।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में सूर्य लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य का रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। लग्नेश सर्वदा शुभ फलदायक होता है। इसलिए माणिक्य भी आपके लिए विशेष रूप से शुभ रत्न है। माणिक्य रत्न की शुभता से आप तेजस्वी, साहसी, स्वाभिमानी, प्रभावशाली व्यक्तित्व पा सकते है। रत्न का शुभ प्रभाव आपको अनुशासित जीवन, वैवाहिक जीवन को अनुकूलता दे सकता है। माणिक्य रत्न को आप सरकारी क्षेत्र से जुड़े कार्यो को शीघ्र से कराने के लिए भी धारण कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यो से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत

सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं नवमेश है। मंगल आपके लिए नवमेश होने के कारण शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप कर्म से भाग्य बदलने का प्रयास कर सकते है। मूंगा रत्न आपको धर्मपरायण व सौभाग्यशाली बना सकता है। इस रत्न के शुभ प्रभाव से आप माता सुख, भूमि व भवन पक्ष से सबल कर सकता है। आप यह रत्न धारण कर अपने दैनिक जीवन को गौरवशाली बना सकते है। इसके साथ ही रत्न धारण से आपके व्यवसायिक जीवन में सुख भाव बना रहेगा।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभदायक सिद्ध होगा। यह रत्न आपके स्वभाव को शांत और मिलनसार बनाएगा। आपको विवादों से दूर रखेगा। इसकी शुभता से आपका नैतिक आचरण अच्छा रहेगा। आप धार्मिक और श्रद्धालु स्वभाव के होंगे। हीरे रत्न की शक्तियां आपकी दान पुण्य में रुचि बनाए रखेंगी। हीरे का शुभ प्रभाव से आप अच्छे वक्ता होंगे। धन-दौलत की आपको कोई कमी नहीं होगी। पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। गायन, वादन, साहित्य रचना, चित्रकारी जैसी ललित कलाओं में आपकी अच्छी रुचि जागृत होगी।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीय और दशम भाव के स्वामी है। अतः आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न धारण कर आप आकर्षक, कीर्तिवान, धैर्यवान, उदार, विनोदी एवं संतान से सुखी हो सकते है। तथा इस रत्न को धारण करने के बाद आजीविका क्षेत्र में आपको अच्छी नौकरी, व्यवसायिक सफलता, संगीत तथा कला क्षेत्रों से धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न शुभ होने के कारण आपको अभिनय, गायन एवं राजनीति क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखाने के अवसर दे सकता है। पुरुषार्थ से कर्मक्षेत्र में सफलता पाने के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए आप गोमेद रत्न धारण करें। गोमेद रत्न शुभता से आप परिश्रमी और ईश्वर पर श्रद्धावान बनेंगे। रत्न शुभता से आप सभ्य और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको सुधारवादी विचार वाले, उन्नति आत्मशक्ति वाले और जगत के कल्याण के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति बना सकता है। यात्राओं को सुखद बनाने के लिए भी आप गोमेद रत्न धारण कर सकते है। विद्वान और पूज्यनीय व्यक्तियों के संपर्क में आने के अवसर यह रत्न आपको दे सकता है।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में

रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु तीसरे भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न आपको बल और पराक्रम में आगे रखेगा। कम दूरी की यात्राएं आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपको धैर्यवान बना रहा है। रत्न प्रभाव से आप ईश्वरपरायण होकार अध्यात्मवादी भी बन सकते है। लहसुनिया रत्न आपको विवादों से दूरी देगा। केतु रत्न आपको भाईयों से संबन्ध मधुर बनायेगा। केतु ग्रह को मंगल के समान कहा गया है। इसलिए इस रत्न को धारण करने से मंगल ग्रह की शुभता में भी बढ़ोतरी होगी।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का ९ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको जीवन के कुछ सुनहरे अवसरों को खोना पड सकता है। बौद्धिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको समय समय पर हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा किए गये नियोजन कार्य असफल हो सकते है। समझ बूझ की कमी भी आपको अवगत हो सकती है। पन्ना रत्न पहनने पर आपको शेयर बाजार से जुड़े क्षेत्रों में हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके द्वारा संचित धन आपके काम न आकर दूसरों के काम ज्यादा आ सकता है। बुध रत्न पन्ना आपमें व्यवहारिकता की भी कमी कर सकता है। पिता के स्नेह में कमी की स्थितियां भी यह रत्न आपमें बना सकता

है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में बुध द्वितीय भाव एवं एकादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप अत्यधिक उच्चाभिलाषी होकर स्वार्थी हो सकते है। यह रत्न कुटुंब से आपका वादि-ववाद करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी आय संचय का रूप नहीं ले पाएगी। आय की अस्थिरता आपकी आर्थिक स्थिति को कमजोर कर सकती है। पन्ना रत्न आपके धन में कमी करेगा। इस रत्न को धारण करने पर शेयर बाजार में आपके द्वारा धन विनियोजन आपको हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके आय साधन सीमित हो सकते है। पन्ना रत्न आपको वाचाल बना सकता है। रत्न शुभता के अभाव के कारण आपकी वाकशक्ति में मधुरता व चातुर्य की कमी हो सकती है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आप के रोगों, ऋण और शत्रुओं में वृद्धि हो सकती है। पुखराज रत्न आपकी शारीरिक प्रकृति को पीड़ित कर सकता है। विवेक, पराक्रम और उदारता भाव के लिए भी रत्न का सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पुखराज रत्न धारण करना आपके मामा और भाईयों के सुखों में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके काम समय पर पूरे नहीं हो पायेंगे। सेवकों के कारण कार्य विलंबित हो सकते है। न्याय प्रणाली पर आपकी आस्था कमजोर हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में वरिष्ठजन आपको परेशानियां दे सकते हैं।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में गुरु पंचम भाव एवं अष्टम भाव के स्वामी है। अष्टम भाव के स्वामी गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप विदयाभिमानी हो सकते है। पुखराज रत्न आपमें विनम्रता भाव की कमी ला सकता है। आप प्रतिकूल बुद्धि के स्वामी हो सकते है। यह रत्न आपके शत्रुओं में वृद्धि कर रहा है। रत्न प्रभाव से आपकी संतान को कष्ट हो सकता है। पुखराज रत्न आपके पिता को ऋणी कर सकता है। सरकारी नौकरी प्राप्ति में यह रत्न परेशानियां दे सकता है। नीच संगति में रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपमें आलस्य भाव को बढ़ाएगा। रत्न धारण के बाद आपको मधुमेह रोग से बचना होगा।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर न्यायिक, प्रमाणिक और चातुर्य योग्यता का सहयोग आपको पूरा नहीं मिल पाएगा। नीलम रत्न आपमें दूरदर्शिता एवं आरोग्यता की कमी ला सकता है। यह रत्न आपकी विद्वता, विवेक शीलता का हनन कर सकता है। रत्न धारण पर आपमें विद्वता की कमी, चातुर्य का अभाव, विवेकहीनता एवं शत्रुओं से पराजित हो सकते है. रत्न प्रभाव से आपकी संघर्ष क्षमता और परिश्रम भाव में कमी हो सकती है। नीलम रत्न शिक्षा एवं भाग्य में कमी कर आपके व्ययों में वृद्धि कर सकता है। आपको शारीरिक अस्वस्थता भी हो सकती है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में शनि षष्ठेश एवं सप्तमेश है। शनि का नीलम रत्न आपको शारीरिक, मानसिक एवं धन संबंधी कष्ट दे सकता है। यह रत्न आपको यात्रा में कष्ट दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी स्वास्थ्य हानि हो सकती है। नीलम रत्न धारण करने के बाद आपको सामान्य उन्नति के लिए भी विशेष संघर्ष करना पड़ सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके शत्रु समय समय पर आपकी परेशानियां बढ़ा सकते है। आपको पैतृक ऋण देना पड़ सकता है। रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में कठिनाईयां दे सकता है। आय व आयु दोनों के लिए यह रत्न अनुकूल फलदायी नहीं है। रत्न प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईर्ष्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती है। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण दुःख का सामना करना पड सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी सिंह लग्न की कुंडली में चंद्र द्वादश भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण से आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। इस रत्न को धारण करने पर आपको व्यय से संबंधित चिंताएं अधिक हो सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपके दांपत्य जीवन में भी अनियमितता का कारण बन सकता है। रत्न धारण से आपके व्यावसायिक कार्यो में परेशानियां बनी रहेंगी। यह रत्न आपको शारीरिक दुर्बलता दे सकता है। कुसंगति के व्यक्ति आपको प्रिय हो सकते है। जल से शारीरिक हानि का भय आपको हो सकता है। रत्न प्रभाव नजला, जुकाम से आपको पीड़ित कर सकता है। आप क्रोधी, हठी एवं निराशाभाव युक्त हो सकते है। नेत्रादि रोग और कुटुम्ब के कारण आपके दुःख बढ़ सकते है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(04/04/2014 - 04/04/2034)

शुक्र की दशा में आपका हीरा, मूंगा, माणिक्य व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(04/04/2034 - 04/04/2040)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(04/04/2040 - 04/04/2050)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(04/04/2050 - 04/04/2057)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(04/04/2057 - 04/04/2075)

राहु की दशा में आपका गोमेद, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(04/04/2075 - 04/04/2091)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, हीरा, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, नीलम व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

शनि - 04/04/1990

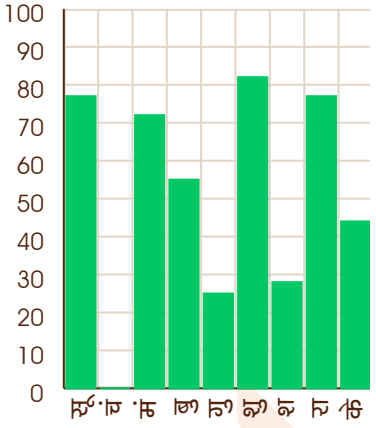

बुध - 04/04/2007

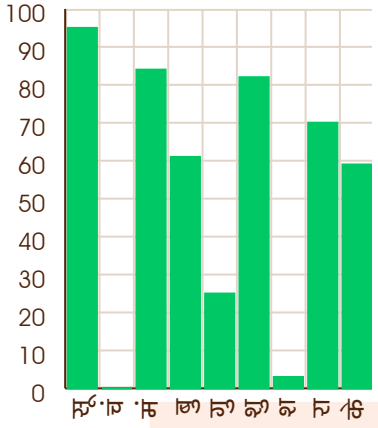

केतु - 04/04/2014

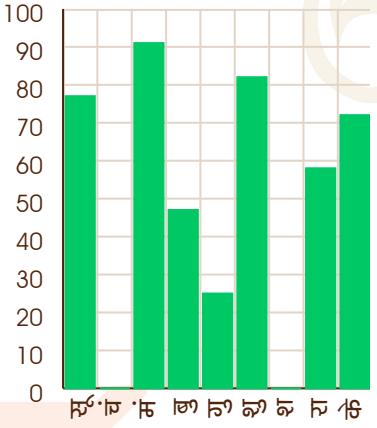

शुक्र - 04/04/2034

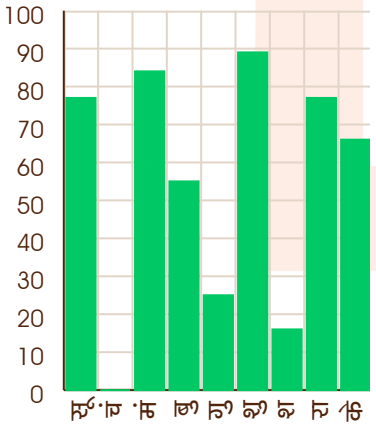

सूर्य - 04/04/2040

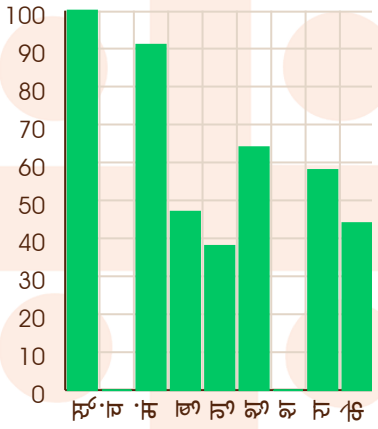

चन्द्र - 04/04/2050

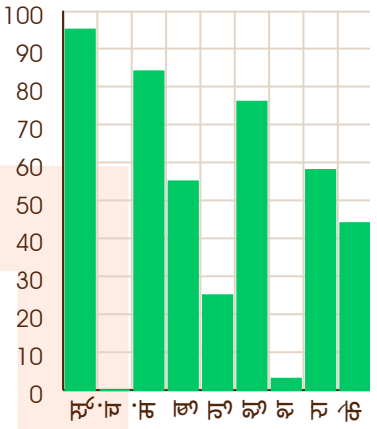

मंगल - 04/04/2057

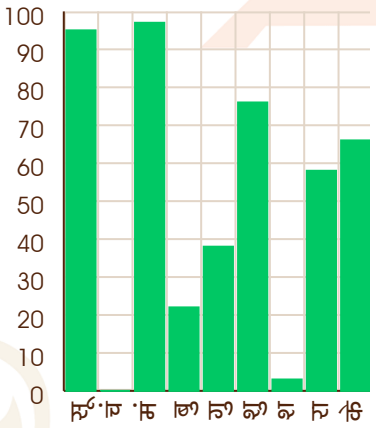

राहु - 04/04/2075

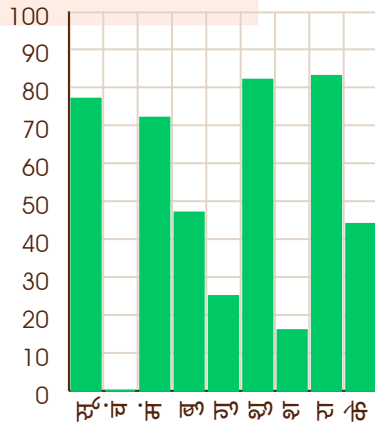

गुरु - 04/04/2091

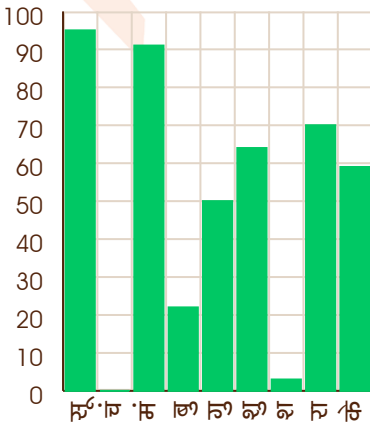

शुभ रत्न

ढठवसकझढथ्वदजझढस्मवच्सउभ्पदकप01झ010ध्झ आपका शुभ रत्न - माणिक्य ढध थ्वदजझढठवसकझ

आपका जन्म सिंह राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी सूर्य होता है। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है, क्योंकि सभी ग्रह इसके चारों ओर अपनी अपनी कक्षा में चक्कर लगाते हैं। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः सिंह राशि के लग्न वाले जातकों को सिंह राशि के स्वामी ग्रह सूर्य को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। सूर्य ग्रह के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी सूर्य राजा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राजा से लाभ जैसे राजनीतिक क्षेत्र में सफलता, उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को पिता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। सूर्य ग्रह हृदय का प्रतिनिधि आत्मा आदि का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको हृदय से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

माणिक्य रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्य की अंगुली मानी जाती है। माणिक्य रत्न सूर्य का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात रविवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल सूर्य की होरा में श्रेष्ठ होता है। रविवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय सूर्य की होरा का होता है। माणिक्य को यदि रविवार के साथ-साथ सूर्य के नक्षत्र अर्थात् कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

माणिक्य को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नारंगी रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, सूर्य के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

सूर्य का मंत्र - ऊँ घृणि सूर्याय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि सूर्य से संबंधित पदार्थ जैसे सफेद चंदन, घी, लाल कपड़ा सवा मीटर का दान करें तो माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन सूर्य का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या सूर्य को तांबे के पात्र से जल दें और सूर्य को नमस्कार करें तो यह माणिक्य रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक रविवार को आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

सिंह लग्न वाले जातक यदि माणिक्य रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली सिंह लग्न की है। आप अत्यंत तेजस्वी एवं आत्मविश्वासी हैं। अग्नि की ही भांति आप ऊर्जावान भी हैं किसी भी कार्य को करने से पीछे नहीं हटते हैं जो कार्य प्रारंभ करते हैं उसे पूरा करके ही बैठते हैं। नीतियाँ बनाना एवं उन पर कार्य करना आपको विशेष पसंद हो सकता है। अनुशासनहीनता आपको बर्दाश्त नहीं होती है। जो नियम आप बनाते हैं, उन पर स्वयं भी कार्य करते हैं और दूसरों से करवाते भी है। अपना मान सम्मान आपको बहुत प्रिय होता है। यदि किसी से कोई वादा करते हैं तो उसे निभाते हैं। स्थिर लग्न होने से आपके स्वभाव एवं व्यवहार में भी स्थिरता होती है। आप जो भी कहते हैं, उस पर अंत तक स्थिर रहते हैं। जिस भी कार्य को आप शुरू करते हैं उससे अंत तक जुडे रहते हैं। आप मानसिक और

प्रशासनिक कार्य अच्छे से करते हैं। इसके विपरीत हो सकता है की शारीरिक कार्य करना आपको अधिक पसंद न हो। आप जिनसे प्यार अथवा मित्रता करते हैं उस पर केवल अपना ही अधिकार समझते हैं और ये ईर्ष्या की हद तक होता है।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन भाव-भावेशों का सम्बन्ध जिन भी ग्रहों व भावेशों से बनता है उनकी शुभता में कमी आती हैं। त्रिक भावों को शुभ भाव नहीं समझा जाता। इन्हीं में से छठा भाव रोग, ऋण व सेवा भाव है। शत्रुओं का विचार करने के लिए भी इसी भाव का विश्लेषण किया जाता हैं। यह उपचय भाव भी है। इसके अलावा अर्थ भाव है। इस भाव के भावेश का अशुभ प्रभाव में होना, आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता हैं। दूसरा त्रिक भाव अष्टम भाव है। इस भाव से जिन विषयों का विचार किया जाता है, उन विषयों में आठंवा भाव आयु, दुर्घटना, आपरेशन, अपयश व नैतिक पतन हैं। इस भाव से व्यक्ति को मिलने वाला अपमान, पदच्युति, शोक, ऋण, मृत्यु तथा व्यक्ति के जीवन में आने वाली रुकावटें देखी जाती है। अंतिम त्रिक भाव द्वादश भाव है, द्वादश भाव से व्यय, हानियां, कारावास, बंधन, विदेश में जीवन आदि का विचार किया जाता हैं।

इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न के लिए षष्ठ भाव व सप्तम भाव के स्वामी शनि है, शनि षष्ठेश है, इसलिए आपको वात-पित्त रोग हो सकते हैं। विवेक व बुद्धि से शत्रुओं पर विजय, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, जीवन संकटमय, व्यय अधिक, पराक्रम वृद्धि, भाई बहनों से अल्प सुख का कारण बन सकता हैं।

अष्टम भाव व पंचम के गुरु आपको दीर्घायु, प्रभावशाली दिनचर्या, विद्या व बुद्धि का अल्प लाभ, संतान से कष्ट, विदेश स्थानों से लाभ, माता, भूमि व सम्पति से साधारण लाभ प्राप्ति के योग बना रहे हैं।

द्वादश के चन्द्र है। द्वादशेश चन्द्र मानसिक सुखों में कमी, माता सुख में कमी करता हैं, धन और प्रतिष्ठा की हानि होती हैं। इसके अतिरिक्त यह योग नजला-जुकाम और गुप्त शत्रुओं की वृद्धि करता हैं।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा हैं।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश

पीड़ित हो सकते है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	09/07/1985-17/09/1985	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में है। अतः आप चन्द्र कुंडली से मांगलिक है। चूंकि यह योग भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा चल एवं अचल सम्पति को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। शारीरिक रूप से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी रूकावटें उत्पन्न होगी परन्तु अन्ततः इस में सफलता मिल ही जाएगी। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा लेकिन इसका दाम्पत्य जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सुख पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

चतुर्थ भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी लेकिन सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक नित्य उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है तथा समाज से इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में भी आपको सफलता मिलेगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इसके अतिरिक्त परिश्रम पूर्वक आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी आप समर्थ रहेंगे।

मंगल की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे

पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपको इच्छित मात्रा में सांसारिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा चल एवं अचल सम्पति को बनाने में भी आप समर्थ रहेंगे। साथ ही सर्वत्र सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं जीवन में एक दूसरे को सुख तथा सहयोग प्रदान करके आप आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है।

आपकी कुडली में गुरु और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक नौ होने से आपका मूलांक नौ होता है। मूलांक नौ का स्वामी मंगल है। मंगल को ग्रहों का सेनापति माना गया है। अतः आपके अन्दर भी सेनापति, नायक, मुखिया इत्यादि बनने की चाह सामाजिक क्षेत्रों में बनी रहेगी। रोजगार व्यवसाय मे एकाधिकार की प्रवृत्ति आपमें पाई जायेगी। आपके अन्दर साहस अधिक होने से आप अपने कार्यों को अदम्य साहस से करते हुये कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेंगे। स्वभाव में आपके तेजी रहेगी। फुर्ती एवं जल्दबाजी रहेगी। आपकी सदैव यही कोशिश रहेगी कि आप जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये।

आपके स्वभाव में साहसीपन होने से आपको दुःसाहस के कार्यों से सदैव दूर रहना हितकर रहेगा। आप अनुशासन प्रिय रहेंगे एवं दूसरों से अनुशासन रखने की अपेक्षा करेंगे। खुशामद एवं चापलूसी से आप प्रभावित होकर कभी-कभी नुकसान भी उठायेंगे। अतः खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सदैव बचें। मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी आपमें रहेगी। इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं आप में शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहेगा।

मंगल के मूलांक के प्रभाववश आप अग्नितत्व प्रधान रोगों के शिकार होंगे। अतः आपको सौम्यता का व्यवहार रखना भाग्य में वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगे।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगे। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगे। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगे और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगे जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता है। और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

आपका मूलांक 9 है तथा भाग्यांक 3 है। मूलांक 9 का स्वामी मंगल है तथा भाग्यांक 3 का स्वामी गुरु है। मूलांक 9 एवं भाग्यांक 3 के बीच मित्र संबंध है। इसके प्रभाववश आप अपने रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में प्रमुखता प्राप्त करेंगे। आप ऐसा ही रोजगार पसंद करेंगे, जिसमें आपका एकाधिकार रहे। रोजगार के क्षेत्र में आप बुद्धि एवं साहस भरे कार्यों को प्रधानता देंगे एवं जोखिम उठाने में भी आप पीछे नहीं रहेंगे। आपका रुझान सामाजिक कार्य, संगठनात्मक कार्य, चिकित्सा, यांत्रिकी, राजनीति इत्यादि की ओर विशेष रूप से रहेगा। आप अपने कार्यक्षेत्र को, अपने सामर्थ्य के अनुसार, विस्तृत रूप देना पसंद करेंगे।

प्रतिस्पर्धाओं में आप हमेशा अपने विरोधियों को परास्त करना सीखेंगे तथा निरंतर अपना एकाधिकार स्थापित करने की कोशिश करते रहेंगे। आप अपने जीवन में काफी धन-संपत्ति एकत्रित करेंगे। आपको समाज सेवा, दान-धर्म के कार्यों के द्वारा यश और लाभ प्राप्त होगा। गुरु-मंगल के योगवश आपकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति लाभदायक रहेगी। आप युवावस्था से धनार्जन प्रारंभ कर अंतिम अवस्था तक उचित मात्रा में धन का संग्रह करेंगे।

आपका भाग्योदय 30 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 39 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 48 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 9 की 3 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 3 की 6 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 3, 6, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा इनसे आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक की आपके भाग्यांक से मित्रता होने से मूलांक-भाग्यांक के फल आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास, या उपर्युक्त वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, जून, सितंबर के माह विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे दिन, तारीख तथा मास के दिन प्रारंभ करें, जब आपके मूलांक तथा भाग्यांक आपस में मेल स्थापित करें तथा एक समय पर दोनों ही शुभ रहें।

मूलांक 9 एवं भाग्यांक 3 के प्रभाववश ईस्वी सन् जिनका योग 3, 6, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक होंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षो में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

मंगल दिनांक 23 मार्च से 20 अप्रैल तक एवं 24 अक्तूबर से 21 नवंबर तक पाश्चात्य मत से, सूर्य मेष तथा वृश्चिक राशि में रहता है। भारतीय मत से यह समय 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर होता है। मेष एवं वृश्चिक मंगल की अपनी राशियां हैं। दिनांक 14 जनवरी से 13 फरवरी तक सूर्य मकर राशि में रहता है, जो मंगल कि उच्च राशि है अतः उपर्युक्त समय मूलांक 9 के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

मंगलवार, शुक्रवार एवं गुरुवार आपके लिए ठीक दिन रहेंगे। आप यदि किसी भी कार्य को करते हैं तो इन्ही दिवसों में प्रारंभ करें और यदि इन दिवसों में अनुकूल तारीखें भी आ जाएं तो श्रेष्ठ फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 29 एवं 30 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। इन तारीखों में महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार के कार्य, अधिकारी या विशिष्ट व्यक्तियों से संबंधित कार्य अथवा पत्र इत्यादि लिखना आपके लिए अधिक उपयुक्त तथा सफलतादायक होंगे।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 7, 10, 16, 19, 20, 25 एवं 28 तारीखें ठीक नहीं हैं। आपके लिए पत्र इत्यादि लिखना या दस्तावेज लिखने हेतु अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने हेतु या कोई भी नया कार्य प्रारंभ करना हो तो इन तारीखों में प्रारंभ न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों को अथवा 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर तथा 14 जनवरी से 13 फरवरी के मध्य हुआ हो, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा रोजगार, व्यापार के क्षेत्र में भी आप उच्चता के शिखर पर पहुंचेगें। ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 3, 6, 9 वाली महिलाएं तथा जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 दिनांकों में हुआ हो पर वे आपके लिए विश्वसनीय सिद्ध होंगी। ऐसी स्त्रियों से ही आप प्रेम अथवा विवाह संबंध स्थापित कर सकते हैं जो आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा।

अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग गुलाबी, गहरा लाल होने के कारण आपको चाहिए की अपने घर में दीवारें, खिड़कियां, पर्दे आदि का चुनाव करते समय इन रंगों को ध्यान में रखें तथा यदि आपका स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है तब आप इन रंगों का रुमाल बना कर अपने पास हमेशा रखें तथा कोई भी रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करते समय इन रंगों के वस्त्र धारण करना न भूलें, जो आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए दक्षिण दिशा उत्तमकारी है। अतः आपके लिए मकान या कॉम्पलेक्स वही शुभ रहेगा जो दक्षिण में स्थित हो। अतः आप शहर की दक्षिण दिशा या भवन की दक्षिण दिशा का चुनाव कर सकते हैं एवं रोजगार-व्यापार की बैठक भी दक्षिण दिशा में रख सकते हैं, जो आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा। भवन के फ्लैट का क्रमांक का योग 3, 6 या 9 रखना लाभप्रद रहेगा।

शुभ वाहन नं

नये वाहन का पंजीकरण क्रमांक आपके मूलांक 9 या मूलांक के मित्र अंक 6 तथा 3 में से कोई एक लेना हितकर रहेगा, जैसे वाहन पंजीकरण क्रमांक 5238 = 9 इत्यादि होना चाहिए। यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करते हैं, तो उसके लिए अंक 108 = 9 होना आपके लिए हितकर रहेगा। अथवा आप वाहन द्वारा यात्रा करते हैं, तो सीट इत्यादि क्रमांक आपके मूलांक या मित्र अंक भाग्यशाली अंक साबित होंगे। इन्हीं शुभ अंकों के प्रभाव से ही आपकी यात्रा सफल हो सकती है।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको क्रोध, झल्लाहट, दुर्घटना, चोट, अंग शैथिल्य, हृदय रोग, रक्तचाप इत्यादि पीड़ा देंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय आप हनुमान की उपासना तथा आराधना करें, मंगलवार का व्रत करें और एक समय भोजन करें।

व्यवसाय

संगठन, संघ संचालक, नियंत्रक, चिकित्सा, ज्योतिष, धर्मोपदेशक, सैन्य विभाग, गोला-बारूद, आतिशबाजी का व्यवसाय, वकालत, औषधि विक्रेता, लौह तथा अन्य धातु संबंधी कार्य अथवा प्रभुता के कार्य। इन सबको अंक 9 में समाविष्ट कर सकते हैं।

व्रतोपवास

मंगलवार को भौम अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। यह व्रत पैंतालीस मंगलवार या कम से कम इक्कीस मंगलवारों को करें। लाल वस्त्र धारण करें एवं लाल वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति मंगल के मंत्र का मूंगे की माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप मूंगा धारण करें। इसके न मिलने पर संगसितारा, लाल हकीक, लाल मून स्टोन धारण कर सकते हैं। इसे आप मंगलवार के दिन, शुक्ल पक्ष में, शुभ चौघड़िया मुहूर्त में, तांबा, सोना, मिश्रित धातु या चांदी में छह से नौ रत्ती का मूंगा बनवा कर, दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

अनुकूल देवता

आप मंगल ग्रह की उपासना करें अथवा हनुमान जी की उपासना करने से आपके सभी प्रकार के अरिष्ट दूर होंगे। आप प्रति मंगलवार एवं शनिवार को सुंदर कांड का पाठ किया करें। साथ में हनुमान जी के मंत्र का नित्य एक सौ आठ बार मूंगे की माला पर जप किया करें। हनुमान जी का मंत्र इस प्रकार है : 'हं हनुमत रुद्रात्मकाय हुं फट्'। मंगलवार को एक समय भोजन करें तथा चने एवं मिष्ठान का प्रसाद हनुमान जी को अर्पण करने से आपके सभी कार्य बनेंगे।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए मंगल के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, मंगल गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

भौम गायत्री मंत्र - ऊँ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप मंगल का ध्यान करें, मन में मंगल की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कांतिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ मंगल को अनुकूल बनाने हेतु मंगल के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान सौ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ क्रौं क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।। जप संख्या 10000।।

वनस्पति धारण

आप मंगलवार के दिन एक इंच लंबी अनंतमूल की जड़ ला कर, लाल धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे

मंगल के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक मंगलवार को एक बाल्टी या बर्तन में सौंठ, सौंफ, लाल चंदन, सिंगरफ, माल कांगनी और मौलसरी के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ मंगल के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, को मिला कर, चूर्ण कर किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

मंगल की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को मंगल के पदार्थ-तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चंदन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

मंगल को अनुकूल बनाए रखने हेतु मंगल यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में सिंह लग्न के उदय काल में मेष राशि के नवमांश एवं सिंह राशि के द्रेष्काण में हुआ था। यह जन्मकालिक संयोजन उत्तम प्रकार की आकृति स्थापित कर आपकों उत्तम प्रकार का व्यवहार कुशल प्राणी बनाया है।

आप जंगल का राजा सिंह के समान हैं। आप सभी प्रकार की स्थिति का पर्यावलोकन करने के लिए समर्थ हैं आपको प्रकृति ने सभी प्रकार के पत्ते को छाँटने के लिए स्वामित्व प्रदान किया है। अर्थात आप सभी प्रकार के कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

प्रकृति ने आपको साहसी आत्मविश्वासी, नेतृत्व करने के गुणों से युक्त एवं समृद्धवान बनाया है। आप अच्छी प्रकार सोच विचार कर किसी भी विषय में कार्य करें तो आप विजयी हो सकते हैं। परन्तु विषय वस्तु को भली प्रकार अर्थात् सावधानी पूर्वक अग्रसारित करें। आप अन्य लोगों पर अपनी विश्वसनीयता का पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। आप मुक्त हस्त से धन का दुरूपयोग करेंगे तो सन्देह है कि आप इस प्रकार समर्थ नहीं हो सकेंगे। फलस्वरूप इस प्रकार धन का दुरूपयोग करना शोभनीय नहीं है। आप ऐसा अनुभव करें जब आप वृद्धावस्था को प्राप्त होंगे तब तक आपके बैंक का शेष क्षीण हो जाएगा और आप धन के मामले में कमजोर हो जाएंगे। अन्य तथ्य यह है कि जब आपके धन की थैली अन्य के सहयोग में खर्च हो जाएंगे तथा आप इस प्रकार उदारता बरतने के अभिलाषी रहे तो आपकी आकांक्षा अधूरी रह जाएगी। अतः आप दृढ़तापूर्वक अपनी (फिजूल खर्ची) अपव्यय को नियंत्रित करना परमावश्यक है। अतः आप इस प्रवृति का परित्याग करें अन्यथा आपके जीवन के अन्त समय में धन का अभाव कष्टदायक एवं अनुभव पूर्ण रहेगा।

आपकी प्रवृति धार्मिक है। आप धर्मपारायण एवं अपने माता-पिता के प्रति निष्ठावान हैं। आपकी अभ्युक्ति सेवा भावना की रहती है तथा आप विश्वास पूर्वक मानव सेवा को भगवान की सेवा समझते हैं। परिणामस्वरूप आपके लिए अभावग्रस्त व्यक्तियों को निश्चित रूप से दान करना अनिवार्य है। अर्थात् आप पर्याप्त मात्रा में दान करने में सुखानुभूति करते हैं।

आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। आप भव्य, दीर्घकाय, चौड़े कन्धे वाले मुलायम और घने बालों वाले समय से पूर्व गंजा हो जाने वाले, वर्त्तमान काल के प्रभावशाली हुक्म चलाने वाले एवं प्रतिभा सम्पन्न दबंग व्यक्ति है। इसलिए आपके अनुकूल पद-प्रतिष्ठा हेतु प्रबन्धक भारी उद्योग/कम्पनी के उच्चाधिकारी या निगम के उच्चाधिकारी का पद उपयुक्त है। आरामदायक वस्तुओं का निर्माण करना अथवा ट्रेडिंग का कार्य करने से अच्छी आय होगी। विडियों कैमरा का कार्य व्यवसाय भी उत्तम होगा। अथवा इसके अतिरिक्त आप व्यवसायों में वित्तीय व्यवसाय बन्धक कार्य, भूमि भवन सम्बंधी क्रय-विक्रय, किराया, भूमि एवं कृषि कार्य अथवा पठन-पाठन, शैक्षणिक संस्थान का संचालन कार्य व्यवसाय भी आपके योग्य है।

सिंह लग्न/राशीय प्रभावित गुणों के आधार पर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। संयोगवश यदा-कदा ज्वर पीड़ा से आक्रान्त भी हो सकते हैं परन्तु शीघ्रतापूर्वक आरोग्य लाभ

प्राप्त कर लेंगे। क्योंकि आप के शरीर में लौह गुण (शक्ति) विद्यमान है। इसके बाद सिंह राशीय निर्देशानुसार आप हृदय रोग, पीठ के रीढ़ की हड्डी रोगादि आपके स्वास्थ्य में न्यूनता ला सकता है। परिणाम स्वरूप हृदय की धड़कन शोथ रोग तथा सिर में चक्कर आना संभाव्य है। अस्तु उत्तम तो यह होगा कि आप अधिक भोजन करना तथा अत्यधिक मद्यपान करने वाली प्रवृति का त्याग करें। यदि आप पूर्णिमा का व्रत रखें तो यह अनिष्टकारी प्रभाव से रक्षा करने में सहायक होगा। आप प्रसन्नतम एवं आनन्ददायक पारिवारिक जीवन तथा स्वस्थ सन्तान एवं समझदार पत्नी को सुख प्राप्त होगा।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में भाग्यशाली दिन रविवार, मंगलवार, और गुरुवार का दिन किसी भी बड़े कार्यों को प्रारंभ करने के लिए उपयुक्त एवं ठीक है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके नये कार्य-कलाप के प्रारंभ करने हेतु अनुपयुक्त हैं। कृपया इन तीन दिनों को अव्यवहारणीय समझे। सोमवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंक 1, 4, 5, 6 एवं 9 अंक उत्तम है। इसके अतिरिक्त अंक 2 एवं 7 अंक आपके लिए अनुकूल नहीं है। आपके लिए नारंगी रंग, लाल एवं हरा रंग लाभदायक प्रमाणित होंगे। ब्लू, सफेद एवं काला रंग आपके लिए सर्वथा त्याज्य है।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मिथुन राशि में मंगल हो तो जातक शिल्पकार, परदेशवासी, कार्यदक्ष, सुखी, जनहितैषी, विद्वान, बलवान शरीर, कवि, संगीतकार, नीतिज्ञ, कुशाबुद्धिवाला एवं चतुर होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्,

भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। सामान्यतया सिंह लग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होते हैं। उनके अंदर आत्मविश्वास का भाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों से ये प्रायः युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुख पूर्वक इसका उपभोग करते हैं। ये जातक सिद्धांतवादी होते हैं तथा अपने सिद्धांतों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव में परोपकार का भाव भी रहता है फलतः ये पूर्ण विश्वास के योग्य होते हैं। इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में ये किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश समाज में विद्यमान रहता है साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय पुरूष होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उन्नति मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलतः आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपके हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रर्दशन करेंगे। आपको स्वपुरूषार्थ से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगे तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्दी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोक प्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

लग्न में लग्नेश सूर्य की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक शांति एवं सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आप में शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। राजनीति या सरकार अथवा व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगे तथा इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा। अतः यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा रहेगी तथा समय समय पर योगाभ्यास करेंगे। आप में गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा फलतः आपके कार्य धैर्य एवं गम्भीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में सत्संग आदि में भी अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रूचिकर लगेगा। अतः आप समय समय पर ऐसे स्थानों की सैर करते रहेंगे। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखों का उपभोग करते

हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपकी जन्म कुंडली में द्वितीय भाव में कन्या राशि स्थित है जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप धन संग्रह के प्रति हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा आपात्काल के लिए आपके पास कुछ न कुछ अवश्य रहेगा। आतिथ्य सत्कार की भावना की आप में प्रबलता रहेगी तथा इससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। फलतः समय समय पर आप अपने घर में अन्य जनों को आंमत्रित करते रहेंगे। आपका पारिवारिक जीवन शांत तथा प्रसन्नता से युक्त रहेगा तथा परिवार में समृद्धि बनी रहेगी। साथ ही परस्पर सेवा तथा सहयोग का भाव भी विद्य मान रहेगा। लेकिन पैतृक सम्पति की प्राप्ति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे तथा जो कुछ अर्जित करेंगे अपने परिश्रम एवं पराक्रम से करेंगे।

यह स्थान वाणी का प्रतिनिधि भाव है तथा इसका स्वामी बुध वाणी का प्रतिनिधि है अतः इसके प्रभाव से आपकी वाणी में धुरता रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही अपने विचारों को भी आप सरल एवं स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने में सफल होंगे। इसके साथ ही आप अपनी विद्वता से धनार्जन करेंगे तथा स्वर्ण आदि बहुमूल्य धातुओं को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप धन वैभव से युक्त होकर आनन्द पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है अतः इसके प्रभाव से आप एक प्रसन्नचित व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी तीव्र होगी। साथ ही दीर्घकाल तक किसी वस्तु को याद रख सकेंगे तथा शीघ्र ही ज्ञान अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे। जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा इनका पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आप भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सुख सुविधाएं एवं आधुनिक उपकरणों से युक्त करने में हमेशा तत्पर रहेंगे परन्तु यदि वे आपकी अपेक्षा अनुसार व्यवहार नहीं करते है या कोई कार्य नहीं करते हैं तो आप शीघ्र उनपर उत्तेजित हो जाएंगे परन्तु पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए अपने पर नियंत्रण रखने में भी सफल रहेंगे।

आप एक साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा उत्तेजना में कभी भी कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेंगे। अपनी इसी बुद्धिमता के कारण आप धनवान होंगे तथा समाज में आदरणीय भी समझें जाएंगे। अपने सुख एवं वैभव पूर्ण जीवन के लिए आपको संचार संबन्धी उपकरण यथा दूर भाष दूरदर्शन या अन्य वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा आनन्द पूर्वक आप इनका उपभोग भी करेंगे। आप रोमांटिक संगीत के प्रिय रहेंगे तथा समय समय पर संगीत से अपना तथा अन्य जनों का मनोरंजन करेंगे। आपकी आनन्ददायक यात्राएं होती रहेंगी तथा दूर समीप की यात्राओं से इच्छित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रा के मध्य नवीन मित्रों को बनाने में सफल रहेंगे तथा संबन्धियों से भी आप सहयोग प्राप्त करेंगे। आप सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे साथ ही अध्ययन में भी रुचिशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपका स्वभाव चंचलता से युक्त रहेगा तथा संतति अल्प मात्रा में ही होगी। परन्तु नौकरों तथा सेवकों की बहुलता रहेगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपको जीवन में समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों एवं सुख संसाधनों से भी युक्त रहेंगे।

आप एक पराक्रमी एवं भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। पिता से भी आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी जिससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी। चतुर्थेश मंगल के प्रभाव से आपको जमीन जायदाद संबंधी सम्पत्ति से शीघ्र एवं उचित लाभ के योग बनते है। अतः यदि आप इन क्षेत्रों में पूंजी निवेश करें तो प्रचुरमात्रा में लाभ अर्जित करने में समर्थ हो सकते है लेकिन विवादित सम्पत्ति का आपको कभी भी क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

जीवन में आप उत्तम गृह से युक्त होंगे तथा यह विस्तृत क्षेत्र में होगा। यह आधुनिक उपकरणों एवं सजावट की वस्तुओं से सुसज्जित रहेगा। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे लेकिन संबंधों में औपचारिक्ता रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी उत्तम होगा तथा युवावस्था के बाद आप स्वयं के वाहन को आर्जित करके इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माता जी तेजस्वी शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा पारिवारिक सदस्यों पर उनका पूर्ण प्रभाव रहेगा एवं सबका वह अपनी ओर से उचित देखभाल करेंगी। आपकी उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा समयानुसार उनसे आप वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग से लाभान्वित होते रहेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी रूचि रहेगी तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप स्नातक परीक्षा सम्मानित रूप से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में उत्साह की वृद्धि होगी तथा पूर्ण उत्साह के साथ आप भविष्य में उन्नति के लिए प्रयत्नशील होंगे। इसके अतिरिक्त आप किसी तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा में भी डिग्री अर्जित कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप उद्यमी साहसी तथा पराक्रमी पुरूष होंगे। उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा इसके लिए प्रयत्न भी करेंगे जिसमें आपको न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होगी। आप उच्च श्रेणी के धार्मिक दार्शनिक तथा ईश्वर को मानने वाले व्यक्ति होंगे तथा धर्म तथा शास्त्र के अनुसार ही अपने अधिकांश सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। बृहस्पति के प्रभाव से आप मुक्त विचार धारा के व्यक्ति आत्म विश्वासी तथा धार्मिक क्षेत्र में उन्नति करने वाले होंगे तथा इसमें आपको श्रखयाति तथा मान सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी सीखने की शक्ति अत्यंत ही तीव्र होगी तथा शीघ्र ही आप नवीन विचारों का सृजन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही आपका अन्तर्ज्ञान हमेशा सही रहेगा।

आपकी पत्नी बुद्धिमान होगी तथा वे शांत स्वभाव की चतुर महिला होंगी। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा तथा समता के भाव की उत्पति वृद्धावस्था में होगी जिससे आप वांछित आदर एवं श्रखयाति प्राप्त करेंगे। आपके साथ में वह स्थितियों को अनुकूल बनाने में समर्थ रहेंगी। आपकी संतति संख्या सीमित रहेगी तथा उनका स्वभाव भी उत्तम रहेगा। साथ ही वे बुद्धिमान होंगे एवं अपने अपने क्षेत्र में वांछित सफलता अर्जित करेंगे। वृद्धावस्था में आपकी वे श्रद्धा पूर्वक सेवा करेंगे वे सभी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे वैदिक ज्ञान या ज्योतिष पर भी आपकी श्रद्धा रहेगी इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से सुसम्पन्न, शत्रुनाशक, सज्जनों की सेवा करने वाले तथा भाग्यशाली पुत्रों से युक्त रहेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से कार्य क्षेत्र में आपको मजबूत विपक्ष का सामना करना पड़ेगा। यदि आप किसी के साथ कार्य कर रहें हो या अपने व्यवसाय के कार्य में किसी साझेदार का चुनाव कर रहें हो तो इससे साझेदार या जिसके लिए कार्य कर रहे है शत्रुता का भाव आरंभ हो सकता है। वैसे आप एक व्यावहारिक व्यक्ति है तथा यत्नपूर्वक शत्रुता के भाव की उपेक्षा करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु आपके कार्य कलापों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य जन प्रभावित होंगे जिससे वे आपका विरोध करेंगे तथा इसी सन्दर्भ में कोई मुकद्दमेबाजी प्रारंभ हो सकती है। आप अपने धैर्य शान्ति तथा प्रतिभा से अपने शत्रु या विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही कभी भी शत्रुपक्ष की गतिविधियों से विचलित नहीं होंगे।

आपकी उचित सेवा करने के लिए आपके पास अच्छे नौकर होंगे लेकिन अधिक होने पर उनमें से कोई एक यदा कदा आपके लिए परेशानी पैदा कर सकता है। अतः सेवकों का चुनाव करते समय सावधान तथा सतर्क रहें। आपके संबन्धी कार्य क्षेत्र में आपके लिए हानि कारक रहेंगे तथा वास्तव में वे ही आपके मुख्य शत्रु होंगे अतः सोच समझकर अपने कार्यो को सम्पन्न करें। आप सीमित एवं आवश्यकता के अनुसार ही व्यय करेंगे। अतः ऋण आदि की आवश्यकता के अवसर बहुत कम आएंगे लेकिन युवास्था में यदा कदा ऐसी स्थिति आएगी परन्तु उसको संभालने में आप समर्थ रहेंगे। आपके मामा मामियों के प्रति पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा परन्तु आर्थिक या अन्य सहयोग अल्प मात्रा में ही प्रदान करेंगे। साथ ही मामियों का मामाओं पर प्रभाव रहेगा।

आर्थिक मुकद्दमे आपके लिए लाभदायक सिद्ध होंगे यद्यपि आप मुकद्दमे बाजी की उपेक्षा करेंगे तथा कोर्ट से बाहर ही उसका समाधान चाहेंगे। यदि ऐसा नहीं होता तो तभी आप कोर्ट में जाएंगे। इस प्रकार स्वपराक्रम एवं प्रभाव से शत्रु एवं विरोधी पक्ष पर विजय प्राप्त करके अपने सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया कुम्भराशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी उग्रस्वभाव कुल में श्रेष्ठ पित प्रकृति व्ययशील एवं सेवकों से युक्त रहता है तथा वह पराक्रमी तेजस्वी एवं शिक्षित होता है एवं स्वाभिमान की भावना भी मन में विद्यमान रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की स्वाभिमानी महिला होंगी तथा सांसारिक कार्य कलापों को दक्षता से सम्पन्न करेंगी। कुम्भ राशि के प्रभाव से वह कुल में श्रेष्ठ होंगी तथा सेवकों से भी युक्त रहेंगी परन्तु उनकी प्रवृति अधिक व्ययशील होगी एवं सहिष्णुता के भाव की न्यूनता रहेगी। लेकिन कर्तव्य परायणता का भाव विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने में तत्पर रहेंगी।

आपकी पत्नी का वर्ण किंचित लालिमा लिए गौरवर्ण होगा तथा कद ऊंचा होगा साथ ही शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय होगा एवं शरीर के सभी अंग प्रत्यंग सुडौल तथा पुष्ट रहेंगे लेकिन वायुतत्व कुम्भ राशि के प्रभाव से शरीर में पतलापन रहेगा। इससे उनका सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा। सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वे सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कला एवं भौतिक वस्तुओं के प्रति भी रूचि रहेगी।

सप्तम भाव में शनि की राशि के प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब की संभावना रहेगी। आपका विवाह प्रेम विवाह होगा या स्वयं ही कन्या का चुनाव करेंगे। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा सहयोग का भाव विद्यमान होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सहमति से सम्पन्न करेंगे। परन्तु दोनों के स्वभाव में तेजस्विता के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी जिससे अल्प समय के लिए संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे मध्यम होंगे। सास ससुर से भी आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं होंगे एवं एक दूसरे के प्रति यथोचित सम्मान एवं स्नेह के भाव की न्यूनता रहेगी। अतः आपस में मेल मिलाप भी कम ही होगा।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनकी तेजस्वी प्रकृति से अप्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें वांछित सहयोग एवं सम्मान नहीं देंगे जिससे परिवार में अशांति रहेगी।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो के लिए सामान्यतया साझेदारी अनुकूल होगी। लेकिन साझेदारी को सोच समझकर करना चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आप में अंतर्प्रज्ञा शक्ति विद्यमान रहेगी तथा ज्योतिष या तंत्र मंत्र का ज्ञान भी रहेगा। इस क्षेत्र में आपको इच्छित मान सम्मान एवं सफलता भी प्राप्त होगी तथा समय समय पर आप इससे लाभान्वित होते रहेंगे। आपको पैतृक सम्पत्ति की अवश्य प्राप्ति होगी या किसी वृद्ध संबन्धी की जमीन जायदाद भी आपको मिल सकती है। आप सर्वप्रकार से खुशहाल रहेंगे तथा चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामी बनेंगे। साथ ही आपके एक से अधिक आवास स्थल हो सकते हैं। शादी से आपको लाभ होगा तथा आपकी पत्नी किसी धनाढ्य परिवार से सम्बन्धित होगी अथवा वे किसी कार्य क्षेत्र में रत हो सकती है। साथ ही आपके ससुराल वाले आपको अपेक्षा से अधिक धन एवं अन्य कीमती वस्तुएं प्रदान करेंगे ।

बीमा आदि करवाने से भी आपको समय समय पर लाभ हो सकता है लेकिन दीर्घावधि की अपेक्षा यदि आप लधुअवधि के बीमे करवाएं तो इसमें आपको शीघ्र एवं प्रचुर मात्रा में लाभ होगा तथा सम्बधित वस्तु या प्राणी की पूर्ण सुरक्षा रहेगी। अतः आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी आदि के द्वारा कोई हानि नहीं है यद्यपि जीवन में एक बार चोर अवश्य आपके यहां आएंगे लेकिन वे कोई कीमती वस्तु को चुराने में असफल रहेंगे क्योंकि आप पूर्व ही सतर्क हो जाएंगे तथा बहुमूल्य वस्तुओं की विशेष सुरक्षा करेंगे। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक ही व्यतीत होगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मेष राशि उदित हो रही जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से आप ईश्वर की सत्ता पर विश्वास करेंगे तथा धार्मिक एवं पारिवारिक रीति रिवाजों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। आप प्रतिदिन भगवान का ध्यान अवश्य करेंगे परन्तु पूजा पाठ आदि में आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी । क्योंकि आपके विचार से यह पद्धति कुछ लोगों के द्वारा अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए बनाई गई है। धार्मिक कार्यों पर व्यय करने में भी आप अत्यधिक सतर्कता का पालन करेंगे जिससे ऐसे मामलों में अन्य लोग आपको धोखा न दे सकें। आप ध्यान समाधि या योगादि के भी इच्छुक रहेंगे तथा तंत्र मंत्र में भी यदा कदा रूचि का प्रदर्शन करेंगे। तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि करने में भी आपकी कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। दूसरे शब्दों में आप भीड़ से तथा पूजा आदि संस्कारों से घबराहट की अनुभूति करते है। आपको शान्ति पूर्ण स्थान अच्छा लगेगा। साथ ही धार्मिक आध्यात्मिक, तंत्र मंत्र, ज्योतिष तथा इनसे सम्बन्धित शास्त्रों का अध्ययन करने में रूचिशील रहेंगे।

आप में अन्तर्प्रज्ञा शक्ति रहेगी तथा भविष्यवाणी आदि करने में भी आप समर्थ रहेंगे। आप उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति होंगे तथा इससे समाज में आपको आदर तथा ख्याति प्राप्त होगी । यदि आप कहीं विकट परिस्थितियों में फंसेंगे तो भाग्य बल से इससे सुरक्षित हो जाएंगे। लम्बी दूरी की यात्राओं से आप लाभ तथा विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित करेंगे। पौत्रों से आपको खुशी एवं सुख प्राप्त होगा साथ ही समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपके पूर्वजन्म के पुण्य इस जन्म में आपको खुशहाली प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मन में सेवा प्रवृति रहेगी तथा प्राणिमात्र की सेवा करके अपनी दयालुता का परिचय देंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही शुक्र भी स्वराशि में स्थित होकर दशमभाव में ही स्थित है। वृष राशि भूमितत्व तथा शुक्र जलतत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा जलतत्व ग्रह के प्रभाव से इसमें आप सामान्यतया परिवर्तन करते रहेंगे तथा ऐसे परिवर्तनों से आपको लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होगी जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

दशमभाव में स्वगृही शुक्र के प्रभाव से आजीविका में आपके लिए कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन विभाग, इलैक्ट्रोनिक्स विभाग, न्याय विभाग, न्यायधीश, वकील, सचिव, सलाहकार, फिल्म निदेशक या कलाकार के रूप में कार्य करना शुभ एवं अनुकूल होगा। इन क्षेत्रों में यदि आप अपनी आजीविका प्रारंभ करते है तो आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः आप को उपरोक्त विभागों में ही अपने कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए चांदी, सोना, हीरा आदि रत्न एवं धातु का कार्य, चतुष्पद या वाहन संबंधी क्रय विक्रय, आलंकारिक एवं मूल्यवान वस्त्रों का व्यापार, सौन्दर्य प्रसाधन संबंधी कार्य, सफेद वस्त्रों या रेशमी वस्त्रों का व्यापार एवं आयात निर्यात से भी लाभ होगा। साथ ही कीमती शराब, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरण एवं फिल्म निर्माण का कार्य भी शुभ एवं अनुकूल रहेगा। अतः व्यापार से वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आपको इन्हीं वस्तुओं या क्षेत्रों में व्यापार प्रारंभ करना चाहिए।

दशमेश की दशमभाव में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चपद को भी प्राप्त करने में सफल होंगे। साथ ही सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं एवं क्लब आदि में भी आप कोई सम्मानीय पदाधिकारी हो सकते है। इससे आपके सामाजिक प्रभाव में वृद्धि होगी तथा यश भी दूर दूर तक व्याप्त होगा। इसके साथ ही आप सामाजिक एवं राज्यस्तर पर कोई सम्मान भी प्राप्त कर सकते है।

आपके पिता सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा सामाजिक जन उनसे पूर्ण रूप से प्रभावित रहेंगे। साथ ही वह बुद्धिमान शिक्षित एवं मनोरंजक प्रवृति के भी व्यक्ति होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा अपनत्व का भाव होगा एवं शिक्षा दीक्षा का वे उचित प्रबंध करेंगे। कार्यक्षेत्र में भी पिता से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा एवं उनके प्रभाव से भी आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आप दोनों के परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी होगी। इसके अतिरिक्त पिता के आप आज्ञाकारी रहेंगे तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को एक दूसरे के सहयोग एवं सलाह से सम्पन्न करेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म के समय में एकादश भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आप महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा मन हमेशा उमंगो से युक्त रहेगा तथा आपकी मानसिक इच्छाएं समय समय पर आपके परिश्रम तथा योग्यता से पूर्ण होती रहेंगी। आप एक चतुर व्यक्ति होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर हमेशा अग्रसर रहेंगे। आप सक्रिय व्यक्ति होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने में आप तत्पर रहेंगे। साथ ही लेखन कमीशन संवाददाता, ज्यौतिष तथा व्यापार से इच्छित धन लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे तथा इन्हीं क्षेत्रों में आपको लाभ होगा। आपका बड़ी बहनों के प्रति पूर्ण लगाव रहेगा तथा उनसे पूर्ण सुख सहयोग एवं स्नेह की प्राप्ति होगी। साथ ही भाइयों से भी नैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा मित्र मंडली के आप सम्मानीय सदस्य समझे जाएंगे तथा आपके सभी मित्र शिक्षित चतुर एवं विद्वान होंगे। मित्रों के बीच में आपको नवीन आनन्द की प्राप्ति होगी तथा आपस में विषय विशेष के प्रति भी तर्क होंगे जिससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। साथ ही सामाजिक जनों के विषय में भी आप चिन्तित रहेंगे तथा उनके परोपकार संबन्धी कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे एवं मानवता के आदर्श गुणों से भी युक्त रहेंगे। आप जिस क्षेत्र में रहते है वहां के लोगों तथा पड़ोसियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा सभी लोगों के मध्य आप की प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी। आपको समय समय पर विशेष सम्मान भी मिलते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप बुद्धिजीवी वर्ग से हमेशा प्रभावित रहेंगे तथा उनसे संबंध स्थापित करके आनन्द की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आप सुख पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया भाग्यशाली होंगे तथा आर्थिक दृष्टि से आपके कई स्रोत होंगे जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। आप किसी संस्था या सरकार में किसी उच्च पद को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपको महत्वपूर्ण कार्यों पर विशेष ध्यान देना चाहिए तथा कम महत्वपूर्ण कार्यों को अपने सहायकों के लिए छोड़ देना चाहिए जिससे वे अपने आपको आपसे उपेक्षित न समझें।

आपका व्यय अधिक मात्रा में रहेगा फलतः अवस्था के साथ साथ यदा कदा आर्थिक परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं आप एक स्वच्छंद प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से व्यय करेंगे तथा बिना अपनी स्थिति देखे हुए कई बार अन्य जनों की सहायता के लिए तत्पर हो जाएंगे। इससे आपके मान सम्मान में वृद्धि तो अवश्य होगी लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका दुष्प्रभाव पड़ेगा अतः आपको इस आदत पर नियंत्रण रखना चाहिए। अपने मान सम्मान की रक्षा के लिए आप कभी कभी अनावश्यक व्यय करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इससे भी आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी अतः आपको ऐसे व्ययों पर अंकुश रखना चाहिए। युवावस्था में आपको कई प्रकार के उतार चढ़ाव देखने पड़ेगें लेकिन व्यय आप जो भी तथा जहां भी करेंगे वह अच्छे कार्य के लिए ही होगा।

आपकी दूर समीप की यात्राएं प्रायः सम्पन्न होती रहेंगी। साथ ही इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी सामान्य यात्राएं व्यापार या विभागीय के कार्य से होंगी साथ ही विदेश भ्रमण के भी योग बनते है तथा काफी समय तक आपका प्रवास हो सकता है। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण मनुष्य, नाड़ी मध्य, योनि गो तथा वर्ग सिंह होगा। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "ज" अक्षर से होगा यथा- जगदीश, जगमोहन आदि।

आप अपने कुल या परिवार के लोगों के मध्य श्रेष्ठ माने जाएंगे तथा सभी कौटुम्बिक जन आपको यथायोग्य स्नेह तथा आदर प्रदान करेंगे। आप मध्यम शारीरिक कद के पुरूष होंगे एवं सत्कार्यों को करने के लिए हमेशा उद्यत रहेंगे। आपके इन कार्यों से अन्य लोग भी लाभान्वित होंगे एवं आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप धनैश्वर्य से युक्त रहकर एक धनाढ्य पुरूष के रूप में समाज में जाने जाएंगे तथा जीवन में इस धन का सुखपूर्वक उपभोग भी कर सकेंगे। आप में अभिमान का भी भाव रहेगा तथा इसका प्रदर्शन भी आप समय समय पर करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक यशस्वी पुरूष होंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी।

कुलस्य मध्येऽधिकभूषणं च नात्युच्चदेहः शुभकर्मकर्ता।
यस्तोत्तराभाद्रपदा च जन्यां धन्यो भवेन्मानधनो वदान्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न जातक कुल में श्रेष्ठ, मध्यम देह वाला, शुभकर्मों को करने वाला, धनाढ्य, अभिमानी और कीर्तिशाली होता है।

आप में सर्वदा सत्वगुणों की प्रधानता रहेगी तथा जीवन में आप पूर्ण रूपेण इनका अनुपालन करने के लिए कृतसंकल्प रहेंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार समाज तथा परिवार में अपनी इस भावना का प्रदर्शन करते रहेंगे। धन का आपके पास सामन्यतया अभाव नहीं रहेगा तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके एक विद्वान के रूप में भी आपका मान सम्मान होता रहेगा।

चाहिर्बुध्न्यजमानवो मृदुगुणस्त्यागी धनी पंडितः।
जातक परिजातः

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक मृदुगुणों से सम्पन्न अर्थात् सात्विक, धनी, त्यागी और पंडित होता है।

भाषण देने की कला में आप दक्ष रहेंगे एवं अपने प्रभावपूर्ण वक्तव्यों से सभी लोगों को प्रभावित करने में सफल रहेंगे। आप अधिकांश रूप से सुखसंसाधनों से सम्पन्न रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप विशाल परिवार के स्वामी होंगे तथा जीवन में पुत्र पौत्रादि का सुख प्राप्त करके सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। शत्रुवर्ग को नष्ट करने में आप सक्षम होंगे तथा वे भी आपसे नित्य पराजित तथा भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने की

उनमें शक्ति का सर्वथा अभाव रहेगा। इसके साथ ही धर्म के प्रति भी आपकी निष्ठा रहेगी एवं इसका नियमानुसार पालन करने में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

वक्ता सुखी प्रजावान जितशत्रुधार्मिको द्वितीयासु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र का जातक वक्ता, जीवन में सुखी, बहुत पुत्र एवं पौत्रों से युक्त, शत्रुओं को जीतने वाला तथा धार्मिक आचरण से सम्पन्न होता है।

समाज में आप अपने सद्गुणों तथा सत्कार्यों से गौरव अर्जित करेंगे एवं एक गौरवशाली पुरूष के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। धर्म के विषय में आप पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान के योग्य समझे जाएंगे। आपमें साहस के भाव की भी प्रबलता रहेगी तथा नित्य साहसिक कार्यों को करने के लिए आप तत्पर रहेंगे अतः आपके साहस तथा शौर्य भाव से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

गौरः ससत्वो धर्मज्ञः शत्रुघाती परामरः।
उत्तराभाद्रपदजो नरः साहिसको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य गौरवर्ण, धर्म का ज्ञाता, शत्रुओं का नाश करने वाला, देवताओं के तुल्य, सत्वगुण प्रधान एवं साहसी होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीडित रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा ललाट विस्तृत होगा। आपकी आखें भी सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। साथ ही नासिका भी उन्नत होगी। आपके शरीर के सभी अंग सुन्दर, सुडौल तथा पुष्टता से युक्त रहेंगे। आपकी कमर पतली होगी। शिल्प शास्त्र या चित्रकारी के प्रति आपके मन में स्वाभाविक आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक सफलता एवं ख्याति अर्जित करने में सफल हो सकेंगी। संगीत के प्रति भी आपका रूझान रहेगा एवं इसका भी आप नियमित रूप से अभ्यास करते रहेंगे। आपके शत्रु आपसे सर्वदा पराजित एवं भयभीत रहेंगे एवं आपका विरोध करने में प्रायः

असमर्थ ही रहेंगे। आप एक उच्चकोटि के विद्वान भी होंगे तथा विविध शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इसका आचरण करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। स्त्रीवर्ग में भी आप प्रिय रहेंगे एवं उनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके महिलावर्ग से मधुर एवं मैत्री पूर्ण संबंध भी रहेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होंगी जिसे सुनकर श्रोता तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे एवं प्रसन्न भी रहेंगे। आप अपने जीवन में नाना प्रकार के सुखसंसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप में क्रोध की अल्पता रहेगी तथा राजकीय सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। इसके साथ ही खान से निकाले गए पदार्थो से आप जीवन में वांछित लाभ अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। लेकिन स्त्री से आप हमेशा पराजित रहेंगे एवं अधिकांश सांसारिक कार्यों को उसी के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे। समाज में आपके सभी से मधुर संबंध रहेंगे एवं स्वभाव से भी आप अच्छे होंगे। साथ ही समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि की सैर करने में आप अत्यन्त ही इच्छुक रहेंगे तथा इससे आपको पूर्ण मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता की प्रवृति भी आप में रहेगी तथा यथाशक्ति इसका अनुपालन भी करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आप समुद्र या जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थो तथा मोती, शंखादि रत्नों से युक्त रहेंगे एवं इनमें आपको विशेष लाभ भी होता रहेगा। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति मित्र या संबंधी के धन सम्पत्ति की भी आपको प्राप्ति होगी एवं इसका आप आनन्दपूर्वक उपभोग भी करेंगे। इसके साथ ही नारी वस्त्रों के प्रति भी आपके मन में प्रबल अनुराग या आसक्ति भी रहेगी। साथ ही आपका शारीरिक कद भी मध्यम ही रहेगा।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आपकी जल पीने की इच्छा दिन में कई बार होगी तथा आप इसका उपभोग भी करेंगी। आप एक बुद्धिमती तथा गुणवती स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे एवं सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपका गृहस्थ जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप उच्चकोटि के विद्वान भी होंगे एवं कृतज्ञता के भाव से पूर्णरूपेण युक्त रहेंगे तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनका उपकार मानेंगे एवं हृदय से उनके प्रति आभार भी प्रकट करेंगे। इस के साथ ही आपका भाग्य भी प्रबल रहेगा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सम्पन्न हो जाया करेंगे।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमी पुरूष होंगे तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप एक चतुर तथा बुद्धिमान पुरूष भी होंगे एवं चतुराई तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। जल क्रीड़ा के प्रति भी आप की हार्दिक इच्छा रहेगी एवं इससे आप अत्यन्त ही आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

आप आजीविकार्जन संबंधी कार्यों में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे तथा यदा कदा लाभ स्त्रोतों में व्यवधान उत्पन्न होने के कारण आर्थिक संकट से भी व्याकुलता का अहसास करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय होगी एवं इसके द्वारा आपके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व में निखार आएगा। साथ ही पिता के द्वारा भी आपको धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जिससा आप जीवन में उपभोग करेंगे। आप में साहस का भाव भी पूर्ण मात्रा में रहेगा तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आपमें सन्तोष के भाव की भी प्रबलता रहेगी तथा जो कुछ भी आपके पास उपलब्ध हो उसमें सन्तुष्टि प्राप्त करके उसी में प्रसन्न रहेंगे इससे आप मानसिक चिन्ता से सुरक्षित रहेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आपका स्वभाव गम्भीर होगा तथा शौर्य गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक मान सम्मान करेंगे। आप में कृपणता की प्रवृति भी रहेगी जिससे यदा कदा अन्य लोगों को परेशानी होगी अतः वे आपसे असन्तुष्ट होंगे। आप अपने परिवार या अन्य कुल में सर्वप्रिय रहेंगे तथा सभी जनों से स्नेह तथा आदर प्राप्त करेंगे। सेवा कार्यों में आप की प्रवृति रहेगी अतः इन कार्यों को आप नित्य करते रहेंगे एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप तीव्रगति से चलने वाले रहेंगे। शनैः शनैः चलना आपको अच्छा नही लगेगा। इसके अतिरिक्त आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे जो अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणनीय रहेगा। साथ ही बन्धुवर्ग के आप प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।

नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप एक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा उत्तम गुणों से भी सुशोभित रहेंगे। इसके साथ ही समाज में अन्य लोगों से आपके मित्रतापूर्ण मधुर संबंध भी रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी देवता तथा ब्राहमणों के प्रति श्रद्धा की भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप में अभिमान का भाव भी रहेगा एवं इसका आप अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन भी करेंगे। आप दया एवं करूणा के भाव से भी सर्वदा युक्त रहेंगे एवं दीन दुःखियों के प्रति अपनी इस भावना का पालन करते रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण बलवान होंगे तथा विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में भी दक्षता प्राप्त करेंगे इससे आपको समाज में मान प्रतिष्ठा भी अर्जित होगी। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य कई लोगों को भी आपके द्वारा सुख की अनुभूति होगी।

समाज में आप सदैव माननीय रहेंगे तथा विपुल धनैश्वर्य से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आखें भी बड़ी बड़ी होंगी तथा निशाने बाजी की कला में आप निपुण तथा प्रख्यात रहेंगे। इसके अतिरिक्त नगर के सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे तथा आपकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में पैदा होने के कारण आप स्त्रीवर्ग के मध्य अत्यन्त ही लोकप्रिय रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त करेंगे। आप एक उत्साही पुरूष होंगे एवं अपने समस्त कार्यों को उत्साह से सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। आप में वाक्चातुर्य की प्रधानता रहेगी तथा अपनी तार्किक बातों से सभी जनों को आप आनन्दित करेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को भी सम्पन्न करेंगे।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद

सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा माता की आराधना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार उपवास भी रखने चाहिए। इसके साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत चन्दन, पीत वस्त्र, पीत वस्त्र, हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में ग्यारहवें खाने में सूर्य पड़ा है। इसकी वजह से आपकी इच्छाएं बहुत ऊंची होंगी और पूर्ण भी होंगी। आप पूर्ण धार्मिक विचारों के होंगे। सत्तापक्ष से लाभ होगा। आपको ऐशो-आराम मिलेगा और जीवन उत्तम रहेगा। आपको तीन पुत्रों का सुख मिलेगा। आप बाहर से सुंदर दिखने वाला मकान बनाएंगे। आप अमीरी जीवन व्यतीत करेंगे। सुस्ती और लापरवाही से जीवन में आए शुभ अवसरों को आप खो सकते हैं। आपके जीवन की आखिरी अवस्था अच्छी बीतेगी। आपकी उन्नति होती रहेगी। आप आस्तिक होंगे। आपके अपने सरकल में अच्छे ताल्लुकात बनेंगे। बुराई के कामों से आप हमेशा दूर रहेंगे। आप शाकाहारी होंगे और आज्ञाकारी स्त्री व संतान का सुख मिलेगा। जीवन में सभी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। आपके पूरे परिवार का धार्मिक होना शुभ होगा।

यदि आपने पब्लिक को लाभ देने की बजाय उल्टे उनका काम बिगाड़ा, भेड़-बकरी मारी या भेड़-बकरी का मांस खाया, पिता के बहन-भाई से झगड़ा किया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से पिता के बहन भाई अशुभ फल देंगे। शराब पीने, मांस खाने और झूठ बोलने से चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा नजर आएगा। आपको सपने में सांप दिखें तो, इसका अशुभ फल होगा। दूसरे को गाली देना, लड़ाई-झगड़ा करना, झूठी गवाही देने पर किसी की अमानत में खयानत करने से आपका जीवन बर्बाद हो सकता है। पुत्र जन्म में बाधा या पुत्र सुख नहीं मिलेगा। झूठ बोलने से आपकी शक्ति कम होगी। यात्रा में चोट-हानि का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. झूठ-झूठ से परहेज रखें।
2. शराब-मांस-मछली का प्रयोग न करें।

उपाय :
1. मूली का दान करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

संतान सुख और संतान की लंबी आयु के लिए -
1. 45 वर्ष की आयु में कसाई से बकरा छुड़ा कर जंगल में खुला छोड़ दें।
2. 43 दिन तक रेत पर बिस्तर लगा कर सोयें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा आठवें घर में पड़ा है। इसकी वजह से आपकी औलाद

पर अच्छा असर पड़ेगा। आपको पुत्र सुख निश्चय प्राप्त होगा। कृषि कार्य तथा आपकी पत्नी से विशेष मदद की आशा है। बहुत सी मुश्किलों को आप आसान कर सकते हैं, आपके जीवन के 34 साल तक समय साधारण रहेगा। विवाह के बाद आपका भाग्य चमक सकता है या 34 वर्ष के बाद भाग्य चमकेगा। आप ईर्ष्यालु, रोगी, पिता या माता दोनों में से किसी एक के सुख से वंचित रहेंगे। धन कमाने में माहिर होंगे। ननिहाल-ससुराल का सुख मिलेगा। आप माता-पिता की सेवा करेंगे। आपको बुजुर्गों की संपत्ति मिलेगी।

यदि आपने दिल में छल-कपट रखा, सट्टा-जुआ आदि खेला, बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध बन्द किया, ननिहाल/ससुराल में झगड़ा किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी सोच निराशाजनक या निराशात्मक भी हो सकती है। मन की शक्ति कमजोर या क्षीण होगी। आपके जन्म समय में माता को बहुत कष्ट हुआ होगा या माता का आप्रेशन हो, ऐसी संभावना है। आप कर्म-धर्म हीन हो जाएंगे, बाधाएं बढ़ेंगी। घर से बेघर होना पड़ सकता है। चरित्रहीन औरतों की संगति से आप बर्बाद हो सकते हैं। परिवार में दमे या मिरगी की बीमारी होने का भय है, पितृदोष से पुत्र का सुख नहीं मिल पाएगा। आप यदि जौहरी का काम करेंगे तो बुरा असर होगा। अकारण लोगों से शत्रुता हो सकती है। झूठ-जूठ आपकी आयु को कम कर सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. रात्रि के समय दूध न पीयें।
2. छल कपट न करें।

उपाय :

1. मीठा भोजन या केसर-दाल चना या गुड़-गेहूं धर्मस्थान में देवें।
2. स्वर्गवासी बुजुर्गों के नाम पर श्राद्ध करें या अमावस्या के दिन दूध-खीर दान करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप न्यायप्रिय, साहसी, पशुपालक, व्यापारी होंगे। आपका स्वास्थ्य उम्दा रहेगा। अपनी किस्मत स्वयं बनाने वाले होंगे। आप अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। आपके जीवन में आपकी 28वें वर्ष से लगातार 42वें वर्ष तक की आयु तक खूब धनागम होगा। आर्थिक दशा में राजा के समान होंगे। आपके भाग्य के कारण छोटी उम्र में ही पिता के घर धन का भंडार लग जायेगा। आपका व्यवसाय या नौकरी ऊंचे दरजे की होगी। आपको पुत्र-पौत्र का सुख मिलेगा। आपके जीवन में बुरा असर कम पड़ेगा। कई प्रकार से आमदनी का स्रोत होगा। अपनी कमाई से भूमि-भवन प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं को दबा कर रखना पड़ेगा। आपको सुख-सुविधाओं की कमी नहीं रहेगी। फकीरी वेश-भूषा में रह कर भी आपकी आध्यात्मिक शक्ति अच्छी होगी।

यदि आपने माता-पिता, संबंधियों से झगड़ा किया, भाई-बन्धुओं से जमीन जायदाद

के लिये मुकद्दमा किया, किसी से काम करवा कर उसका मेहनताना नहीं दिया तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से भाई-बंधुओं से जमीन-जायदाद, धन संबंधी झगड़े का भय रहेगा। अगर आपका चाल-चलन ठीक न रहे तो आमदनी होते हुये भी कर्जदार होंगे, संपत्ति बर्बाद होगी। आपके बच्चे झगड़ालू होंगे या परिवार में बच्चा गोद भी लेना पड़ सकता है। उसके आगे के जीवन में कुछ भी बुराइयां नहीं रहेंगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. भाई-बंधुओं पर भरोसा न करें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. जीजे-साले-भांजे या दोहते की सेवा करें।
2. मिट्टी के बर्तन में शहद या सिंदूर भर कर घर में रखें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से अच्छी स्थिति बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। आपकी बहन-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी रहकर बसेगी। मगर अपने पिता के घर में दुःखी रहेगी। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदा असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल करेगा। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगे। सट्टे-लाटरी का काम या दलाली के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता के लिए अशुभ होगा। आपकी पत्नी का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :
1. स्टैनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में छठे खाने में वृहस्पति पड़ा है। इसकी वजह से गृहस्थ जीवन में भी आप साधू स्वभाव के होंगे। आपको कोई काम करने की अधिक जरूरत नहीं पड़ेगी। यदि पिता दीर्घायु हुए तो आप धनवान बन जाएंगे। आपके पिता स्वभाव से दानी होंगे। नगद धन की कमी महसूस नहीं होगी। आपके जीवन में कई चीज बिना मांगे या बिना मेहनत किए ही मिल जाएंगी। आपके ननिहाल खानदान के लोगों की आर्थिक हालत अच्छी होगी। आपके मामा खुशहाल होंगें। आपके जीवन में सुख-शांति तो रहेगी। परंतु बहुत ठाठ-बाट नहीं रहेंगे। बुढ़ापे में आपको शुभ फल प्राप्त होंगे। पूजा-पाठ पर ज्यादा ध्यान देंगे। आपको पत्नी का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको अधिक समय तक नौकरी करनी पड़े, ऐसी आशंका है। आपके गुप्त दुश्मन नहीं होंगे। दुश्मन अगर हुए तो नष्ट हो जाएंगे अर्थात् आपको दुश्मनों पर जीत हासिल होगी। शरीर से निरोग रहेंगे।

यदि आपने कर्ज, दान-भिक्षा मांगना शुरु किया, हर समय व्यर्थ घूमते रहे, मामा, ताया-चाचा से झगड़ा किया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से पिता का सुख कम मिलेगा या 16 वर्ष की उम्र में ही परिवार का भार आप पर पड़ सकता है। पत्नी की बेकद्री करने से अशुभ फल होगा। आपका जीवन अय्याशी या ऐशो इशरत के कारण बर्बाद हो सकता है। आपके पिता, पुत्र और पुत्री के लिए ग्रह फल बहुत अच्छा नही है। आप साधू स्वभाव के मुफ्तखोर, रोगी और अय्याश होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. भीख न मांगें।
2. आवारा न घूमें।

उपाय :
1. धर्म मंदिर के पुजारी को वस्त्र दान देवें।
2. पीली चीजें धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के दसवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आप लोभी, शक्की दस्तकारी के कामों में रुचि लेंगे। आप शक्ति संपन्न होंगे। आप कामुक होंगे। आप

कामवासना के अधीन रहेंगे। आपकी सेहत अच्छी रहेगी। आप बाग-बगीचों के मालिक होंगे। आप अपने जीवन में दुर्घटना के शिकार नहीं होंगे। आपको अच्छा धन प्राप्त होगा। बुढ़ापा आराम से बीतेगा। आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आपकी जवानी प्रेम संबंधों में उलझी रहेगी। आपकी चालाकी, शैतानी और होशियारी की अधिकता से अधिक लाभ, आंशिक क्षति भी हो सकती है। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य लगभग ठीक रहेगा। पत्नी के साथ रहते आपके साथ कभी भी कोई हादसा नहीं होगा।

यदि आपने शराब, बीयर आदि पीना और मांस खाना शुरु किया, मछली का शिकार किया, स्त्री पर अधिक विश्वास किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपको पत्नी से दब कर रहना होगा। पराई स्त्री से संबंध रहने से संतान को दुःख पहुंचेगा। संतान सुख के लिए जीवन में बाधा आ सकती है। विवाह के 13 वर्ष बाद पत्नी बीमार हो सकती है या पत्नी अस्वस्थ रहेगी जिसके कारण आपको दुःख भी झेलने पड़ सकते हैं। आपको पेशाब की बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें।
2. आधिक मिजाज न बनें।

उपाय :

1. कपिला गाय का दान करें।
2. पत्नी शरीर पर दूध-दही मल कर स्नान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि तीसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप स्वस्थ, विद्वान, विवेकी और खर्चीले स्वभाव के होंगे। धन की कमी नहीं रहेगी। आपके पास बहुत धन आएगा। आप पराए लोगों की मदद करेंगे। आपको चोरी और धन नाश की तरफ से सतर्क रहना चाहिए। आप सबकी मदद करेंगे मगर वह व्यक्ति दूसरों का काम बिगाड़ेगा, और खुद आराम पाएगा। आपके जीवन में अड़चने भी पैदा हो सकती हैं। आप साहसी होंगे। भाई-बहन से सामान्य सुख के आसार हैं। आप दुःसाहस करने में भी बाज नही आएंगे। लोहा/मशीनरी से संबंधित कामों से धन लाभ होगा।

यदि आपने चोरी-ठगी की, घर का मुख्य दरवाजा पूर्व या दक्षिण दिशा में हुआ, दूसरे लोगों के काम बिगाड़े तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से शराब पीना, मांस खाना अच्छा फल नहीं देगा। नगद धन का अभाव रह सकता है। नर संतान को कष्ट की आशंका है। आपकी आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। छोटे भाई से दूरी या उसका सुख न होगा। भाई-बंधु आपकी नेकी को भूल जाएंगे। चोरी-ठगी करने पर भी धन की कमी रहेगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। मकान बनाने में

बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें। मछली का शिकार न करें।
2. कीकर-बेरी का वृक्ष घर में न लगावें।

उपाय :

1. तीन कुत्तों को भोजन का हिस्सा देवें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी बनावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के नौंवे खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धर्म-कर्म पर कम विश्वास करेंगे। यदा-कदा नास्तिक जैसा व्यवहार करेंगे। आपकी मान-प्रतिष्ठा को धक्का लग सकता है। भाई-बहन के साथ अच्छा संबंध रखना शुभ और लाभकारी है। धर्म-कर्महीन होने से भाग्य संतान का अभाव रह सकता है। शनि की चीजों के व्यवसाय से लाभ होगा। संतान से अच्छा संबंध बनाए रखने से आपको लाभ होगा। संतान और धन में बरकत होगी। जादू-मंत्र जानने में रुचि रहेगी। पागलों के डाक्टर या सरसाम रोग की महारथ आपको हासिल होगी।

यदि आपने धर्म विरुद्ध कार्य किये, डाक्टर होकर लालच किया, परिवार से अलग रहना शुरु किया, आपके मकान के पास जोहड़ हुआ या मकान का गंदा पानी मुख्य द्वार की दहलीज के नीचे से निकलता रहा तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से अदालती झगड़े और संतान कष्ट की आशंका है। बुजुर्गों की सेहत पर गलत असर पड़ सकता है। आपकी पत्नी का गर्भपात भी हो सकता है। आपके ससुर, पिता और दादा आपकी वजह से तबाह हो सकते हैं। भाई-बंधु तंग करते रहेंगे। आप पागलों का इलाज कर सकते हैं। आप साधू-फकीर के साथ रह कर फिजूल खर्ची करेंगे। आप यदि बड़े लोगों से झगड़ा करें तो स्वास्थ्य और संतान पर अशुभ प्रभाव पड़ सकता है। आपका ससुराल में साथ रहना या ज्यादा संबंध रखना हानिकारक है। आपको तीर्थ यात्रा करने में बाधा उत्पन्न होगी। कैद या बंधन में नहीं रह सकते फरार हो सकते हैं। आप दान करना भी पसंद नही करेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. साधू-फकीर का साथ न रखें।
2. परस्त्री से संबंध कायम न करें।

उपाय :
1. शरीर पर शुद्ध सोना पहनें।
2. धर्म स्थान में सिर झुकावें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप दूसरों का हिस्सा मांगने वाले होंगे, आपको यात्रा से लाभ होगा। नेकी को याद रखना और बदी को भूल जाना आपकी आदत होगी। आपके भाग्य में तबदीली आएगी। आपको पुत्र संतान का सुख होगा। आपका पुत्र भाग्यशाली हो सकता है। आपकी संतान अच्छी और आज्ञाकारी होगी। आप आस्तिक होंगे, दूसरों की सहायता करते रहेंगे। आपके जीवन का 24वां वर्ष उत्तम फलदायी होगा। आपको दूसरे की सलाह लेने से बुरा असर हो सकता है।

यदि आपने ताया-चाचा से झगड़ा किया, साले के साथ कारोबार किया, भाई के साथ झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से पेशाब या गुप्तांग में रोग होगा। संतान नालायक होगी या संतान से दुःखी रहेंगे। आवारा घूमेंगे, भाइयों से दूर प्रदेश में जीवन व्यतीत करेंगे। भाई आपके शत्रु न बन जाएं, इस चिंता से दुःखी रहेंगे। आपके सगे संबंधी आपके दुःख के कारण हो सकते हैं। आप मरते दम तक चिंतित रहेंगे। आपका धन दीवानी मुकद्दमों में खर्च हो सकता है। साली से विवाद और पत्नी से मनमुटाव के कारण जुदाई हो सकती है। रीढ़ की हड्डी में रोग पैदा हो सकता है। जिस्म या हड्डी में दर्द या चोट की आशंका है। 24वां वर्ष संतान के लिए कष्ट कारक एवं भाग्य के लिए सुस्त रहेगा। आपको रक्तदोष या शरीर में फोड़े-फुंसी की शिकायत रह सकती है। ससुराल और भाई का हाल अच्छा नहीं रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. आवारा न घूमें।
2. भाई से दूरी हानिकारक है।

उपाय :
1. कानों में ननतियां पहनें।
2. शरीर पर सोना पहनें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में षष्ठ भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु एकादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें द्वादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यरहेगा। शनि एवं राहु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपको कार्यक्षेत्र में सफलता नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु व बिरोधी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे। व्यापार को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी। इस समय के अंतराल मेंजल्द ही किसी पर भी विश्वास न करें और न हीजल्दबाजी में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लें।

02जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके साथ धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। सोच को सकारात्मक बनाए रखें, क्योंकि वर्षान्त में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में लाभ मिलना शुरु हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धसामान्य रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम बना रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 02 जून के बाद समय का काफी प्रतिकूल हो रहा है।जीवनसाथी की बीमारी में आपका धन व्यय होगा। साथ ही कुछ ऐसे खर्च आजाएंगे जिससे आपका बजटबिगड़ सकता है।

किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो जाएगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि सेयह वर्षसामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगेपरन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावारण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी बड़े व्यक्ति के साथ आप का वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं और उचित निर्णय लें। सप्तमस्थ राहु जीवनसाथी का

स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह केदृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उनकी शिक्षा में भी सुधार होगा। नवविवाहित व्यक्तियों के गर्भाधान के लिए बहुत सुन्दर समय चल रहा है। आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगेपरन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं चल रहा है।

06 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिससे कारण उसकीशिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकता है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी अच्छे हो जाएंगे।

02 जून के बाद छोटी मोटी बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। आर्थिक मुद्दे या किसी और मुद्दे को ले कर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इन सबका नकारात्मक प्रभाव आपके सेहत पर पड़ेगा। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसमजनित बीमारियां हो सकती हैं। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योग करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु के दृष्टि प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों का अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशहो जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता पारीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 24 नवम्बर के बाद छठे स्थान में राहु ग्रह का गोचर हो रहा है। उस समय आपको अपने करियर में सफलता प्राप्त होगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। साथ ही 02 जून के बाद द्वादश स्थान केगुरु आपको विदेश यात्रा करा भी सकते

है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले जातकों की अपनी जन्म भुमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। 02 जून के बाद गुरु का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रुषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत रखें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु अथवा काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे।साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे।साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्ति समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे।अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते है जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे।

साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते है। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे।साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस

समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा।साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप

लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र जनों से मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्ठान्न के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे।स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यों से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग

प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है। साथ ही रूधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यापारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ नहीं होगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती है। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

26 जून के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरू हो जाएगी। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपके कार्यों में सफलता मिल सकती है। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। धनागम के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए, नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है। लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपका रुका हुआ धन मिल सकता है, जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी पैसा खर्च कर सकते हैं। भौतिक सुख सुबिधा पर भी आपका अधिक खर्च होगा। 26 नवम्बर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक माहौल बढ़िया नहीं रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है जिससे पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाने में आपको मातुल पक्ष का अच्छा सहयोग मिलेगा।

26 जून बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा, उसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। कफ, मधुमेह एवं पेट संबंधित बीमारियों के कारण आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से कभी-कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभाव होता रहेगा।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी धर्म पत्नी भी आपकी सेहत का पूर्ण ध्यान रखेंगी। 03 अक्टूर के बाद आपकी सेहत फिर से प्रभावित हो सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

षष्टस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगा। आपको

करियर में स्थिरता प्राप्त होगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही नौकरी मिल सकती है।

26 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई-लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैंतो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होंगी।

26 जून के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के प्रभाव सेलम्बी यात्राओं के प्रबल योग बन रहे है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी यात्राएं कराती रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए सामान्य रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे परन्तु द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों, भिखारियों को खाना खिलाना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा। निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रूचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे एवं उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप विविध प्रकार से द्रव्य अर्जित करेंगे। साथ ही पुत्र संतति से आपको इस मास में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफल भी रहेंगे।आपके प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे तथा आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। इस समय आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग भी प्राप्त होगा साथ ही समाज में भी आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से आवश्यक सहयोग अर्जित करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुखार्जन में सफल रहेंगे। धर्म के प्रति भी आप श्रद्धावान रहेंगे तथा समाज में आदरणीय समझे जाएंगे।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रु भी आपसे बलवान रहेंगे एवं आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित किया जा सकता है। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट प्राप्त कर सकते है। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में भी आपके आदर में न्यूनता आएगी। बन्धु एवं मित्रों से आपका इस समय मन मुटाव रहेगा तथा मानसिक इच्छाएं अपूर्ण ही रहेंगी। अतः तनाव से बचने के लिए संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित कर सकेंगे तथा मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्त्री एवं बन्धुवर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे या इन्हें भी किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रु प क्ष भी आपसे बलवान रहेगा जिससे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप काफी असुविधा का सामना करेंगे तथा मानसिक रूप से चिन्तित भी रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह के भाव में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अनावश्यक रूप से अधिक होगा जिससे आर्थिक रूप से भी आप परेशान रहेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में लोलुपता के भाव में भी वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग प्राप्त करने में असफल रहेंगे तथा ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त परिवार तथा अन्य सामाजिक जनों से भी विवाद आदि होते रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फल भी अर्जित करेंगे। इससे आप स्त्री से सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे।साथ ही धन तथा सुख प्राप्त करने में भी आपको सफलता मिलेगी। अतः मानसिक रूप से आप अल्प मात्रा में सन्तुष्ट हो सकेंगे।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे तथा शुभ फल अल्प मात्रा में होंगे। इस समय शत्रुपक्ष के प्रबल होने से उनसे आप कष्ट प्राप्त करेंगे तथा चिन्तित भी रहेंगे।साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी भी हो सकती है अतः सतर्क रहें। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे तथा विभिन्न प्रकार से व्यवधान आते रहेंगे।साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक दृष्टि से भी परेशान रहेंगे।धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्ट हो सकते है।साथ ही आपकी कोई दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त सांसारिक कार्यो में भी आप असफल रहेंगे तथा किसी मुकद्दमे आदि में धन हानि की भी संभावना रहेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।अतः सावधानी तथा बुद्धिमता से समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में समय समय पर आप शुभ फल भी अर्जित कर सकेंगे। इसके प्रभाव से आप स्त्री का पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा जिससे आपके कई कार्य बुद्धिमता से पूर्ण होंगे तथा धनार्जन में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी श्रद्धा का भाव रखकर समाज में आदर प्राप्त करेंगे।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। आपके घर में इस मास में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी हो सकता है। सन्तति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप उनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। समाज में सर्वत्र इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा भाग्योन्नति संबधी शुभ कार्य भी सम्पन्न होंगे।आपकी बुद्धि इस समय निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी इस मास में योग बनेगा ।साथ ही सरकारी तंत्र से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा आपको अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा अन्य कारणों से रक्त विकार की भी संभावना रहेगी।अतः शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करें।

जून 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वर्ग भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आप उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।साथ ही बन्धु तथा मित्र वर्ग से मधुर तथा घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा तथा दूसरे लोगों की भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे।अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा नियम पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय सामाजिक जनों के मध्य आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को मन से स्वीकार करेंगे। आपकी कीर्ति भी दूर दूर तक फैलेगी तथा अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन गृह की प्राप्ति या स्थान परिवर्तन भी कर सकते हैं। साथ ही आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में स्त्री तथा पुत्र से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन वस्त्रों की प्राप्ति या वस्तुओं को अर्जित कर सकते है। इस प्रकार आप आनन्द पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होते रहेंगे। इस समय स्त्री पक्ष से लाभार्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके सौभाग्य

में भी आशातीत वृद्धि होगी जिससे आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध हो जाएंगे इससे मानसिक रूप से आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आपकी रूचि उत्पन्न होगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे इस मास में आप इच्छित द्रव्यों को भी प्राप्त करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगे। संतति पक्ष से भी आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा एवं समाज से पूर्ण सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपको रूके कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ समय समय पर अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप ठंड या वात से उत्पन्न रोगों द्वारा कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे बाद में आपको पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप क्षति प्राप्त कर सकते हैं। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला सिद्ध होगा इस समय आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगे जिससे आप आर्थिक दृष्टि से परेशान होंगे।साथ ही आप दुष्ट मनुष्यों की संगति में भी रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस समय आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अधिक परिश्रम के द्वारा अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति भी आपकी विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में उपेक्षा का भाव रहेगा।संबधियों तथा मित्रों से भी आपके मधुर सम्बन्ध नहीं रहेंगे तथा इनसे परस्पर मनमुटाव रहेगा। इस समय आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी फलतः मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरक्त शत्रु वर्ग से भी आप इस समय चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप शीत से उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी तथा बाद में आप पश्चाताप करेंगे। साथ ही आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः संयम तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस महीने आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आयस्त्रोतों में वृद्धि होगी तथा वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे। इससे आपकी

आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धनार्जन करेंगे। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी। इसके अलावा आपके चिर प्रतीक्षित महत्वपूर्ण कार्य भी इसी मास में सफल होंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही सांसारिक कार्यो को सफल बनाने में भी आप समर्थ होंगे। आपका उच्चाधिकारी वर्ग भी इस समय आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेगा तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा।

साथ ही इस मास में स्त्री एवं पुत्र से आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा तथा आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं आदि प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार आप सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभ फल ही प्राप्त करेंगे तथापि अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही परिवार एवं सामाजिक जनों से आपको यथोचित सम्मान प्राप्त होगा तथा उनमें आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध हो जाएंगे। मिष्ठान्न के प्रति इस समय आपके मन में तीव्र इच्छा उत्पन्न होगी।आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु आपसे इस समय निर्बल रहेंगे तथा उन्हें पराजित तथा भयभीत करने में आप समर्थ रहेंगे। स्त्री से भी आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अतिरिक्त साधनों से धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में शुभफलों के साथ साथ अशुभफल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पित रोग से शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे एवं रक्त विकार की भी संभावना हो सकती है। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस समय पूर्ण ध्यान रखना चाहिए तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को संपन्न करना चाहिए।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी सामाजिक तथा अन्य लोग आपकी श्रेष्ठता तथा प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं यथोचित सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे।साथ ही आप धन एवं सुखोपभोग की सामग्री अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करते रहेंगे। अन्य लोगों के परोपकार संबधी कार्यो को करने के लिए भी हमेशा तत्पर रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में

सफल रहेंगे। इस समय बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सम्मान तथा सहयोग मिलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी इस समय सम्पन्न होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता का भाव रहेगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन तथा सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु भी आपसे अधिक बलवान होंगे अतः उनकी ओर से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके व्यापार आदि कार्यो में मन्दी रहेगी तथा नौकरी आदि में भी अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। साथ ही आप किसी कार्य को परिवर्तन कर सकते है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में दूसरे लोगों के साथ आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता परिलक्षित होगी। इसके अतिरिक्त आपके इस मास में धन हानि के योग बनेंगे तथा शरीर किसी नवीन रोग से पीड़ित हो सकता है। अतः अपने समस्त सांसारिक कार्यो को सोच समझ कर सम्पन्न करें।

साथ ही इस मास में आप शुभ फल भी अवश्य प्राप्त करेंगे। इस समय स्त्री तथा पुत्र से आप सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी तथा आपके इन विचारों से समाज से आप वांछित सम्मान तथा सहयोग प्राप्त कर सकेंगे।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगा। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की कोशिश करेंगे परन्तु सामने नही आएंगे। फरवरी के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अंदर नवीन विचारधाराएं नयी योजनाओं को जन्म देंगी जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। अतः कम समय में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा। 24 जुलाई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। 24 जुलाई के बाद आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते है। छठे स्थान का राहु शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में भी व्यय करेंगे।

24 जुलाई के बाद मांगलिक कार्यों में व्यय करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ होगा। पंचम का राहु संतान के स्वास्थ्य पर भी धन खर्च करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में ही परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी, जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परन्तु अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

राहु ग्रह के गोचर के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचमस्थ राहु उनका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। फरवरी के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

24 मई के बाद पंचम स्थान का राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उसके स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। आपके बच्चों को अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

स्वास्थ्य

अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह होने से आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। आपके अन्दर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी।

वर्ष के उतरार्द्ध में लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसमजनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम रहेगा। आप अपने सारे शत्रुओं को परास्त करते हुए करियर में सफलता प्राप्त करेंगे। बेरोजगार जातकों को मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है।

24 मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय नही रहेगा। उनको करियर में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा हो सकती हैं।

फरवरी के बाद नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा

होगी साथ ही छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ व अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर में आपका अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने मे आप आगे रहेंगे परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आपका भाग्य साथ देगा। व्यावसायिक उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यापार में भाइयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा।

29 मार्च से सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य में सफल होंगे। गुरु के प्रभाव से आमदनी के नये स्रोत खुलने की उम्मीद है। 25 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी व कार्य स्थल पर मान सम्मान भी बढ़ेगा। अनुभवी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में सफल रहेंगे परन्तु द्वितीयस्थ मंगल के कारण आपके पारिवारिक खर्चे भी बढ़ेंगे। 29 मार्च के बाद रत्नाभूषण इत्यादि वस्तु की प्राप्ति हो सकती है। पुराने कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके पिता की अहम भूमिका होगी। पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 29 मार्च के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। पंचमस्थ राहु आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है।

25 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का

बर्ताव ठीक नहीं रहेगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है और उनकी शिक्षा में भी रुकावटें उत्पन्न कर सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा है। उनकी शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी एवं अपने परिश्रम के बल पर लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि से अचानक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी भी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी। 29 मार्च से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा।

25 अगस्त से आपको खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा। चिकनाईयुक्त व तली हुई वस्तुओं का कम से कम सेवन करना चाहिए। कुछ बेवजह की यात्राएं और काम का बोझ आपको थका सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करा सकती है।

छठे स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु के प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। तीर्थ यात्रा पर जाने की योजना भी बन सकती है। 25 अगस्त के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा भी होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है जिसके कारण आपका

मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप कोई विशेष अनुष्ठान करेंगे जैसे- अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण इत्यादि।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में वितरित करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु पंचम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत अवरोध आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है। जैसे ही यह प्रभाव खत्म होगा आपका समय फिर से अनुकूल हो जाएगा और सब कुछ आपके हित में होने लगेगा। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे।

जो व्यक्ति नवीन रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अप्रैल के बाद आपको रोजगार से सम्बन्धित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। 04 फरवरी के बाद नए निवेश करना सही नहीं होगा। भूमि, भवन एवं वाहनादि पर निवेश न करें नही तो आपका पैसा डूब सकता है। इस समय आप इस बात पर ध्यान दें कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए और एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानिया तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद चतुर्थस्थ राहु आपको घरेलू जीवन में कुछ चिंताएं दे सकता है जिससे परिजनों के बीच

सामंजस्य बिठाने में कठिनाई पैदा होंगी। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निबटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

आपके माता-पिता का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अचानक ही उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मई के बाद आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा। मान-प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय के अंतराल में समाज में आपकी एक अगल पहचान होगी।

संतान

वर्ष की शुरुआत संतान के लिए शुभ नहीं है। लग्न स्थान का राहु गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। आपके बच्चों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानी होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपकी दूसरी संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। यदि संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय श्रेष्ठ है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वह अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। 04 फरवरी के बाद आप अपने आप को तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जा की वृद्धि होगी।

मई से आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम करना या सुबह-सुबह टहलने जाना। यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया है तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजस की स्थिति बनायेगी।

यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप कोई विदेशी भाषा सीखने की तरफ आकर्षित होंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का भी अवसर प्राप्त होगा।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। 17 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान

पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। 17 अप्रैल से आप अपने कार्य-व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को चरितार्थ करेंगे

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। 18 फरवरी से अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।

9 अगस्त से व्यावसायिक स्तर पर समय आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए पुरुस्कृत भी किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। 18 फरवरी के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

9 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। यह समय आपके लिए अत्यंत लाभकारी रहेगा। यदि अनापेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिएगा मत। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। दशमस्थ शनि पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी अवसर आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भघरेलू वातावरण के लिए अनुकूल है। पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है अतः परिवार से जुड़े हर

मामलों में आपको सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ है।

9 मई से घरेलू वातावरण के लिए समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान होगा क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। 15 अक्टूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए अच्छा रहेगा किन्तु आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं रहेंगी। 18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। यह समय आपकी संतान के लिए शुभ होगा।

गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। इस समय के अंतराल में आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की लिहाज से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। पारिवारिक क्लेश के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। आपके जीवन में इस साल खुशी के पल भी आएंगे। स्वस्थ्य रहने के लिए आपको चाहिए कि आप योग और ध्यान का सहारा लें। प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे।

15 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी और आप पूर्णरूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रथम दो माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष अनुकूल बना रहेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत बढ़िया है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरु करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

15 अक्टूबर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। आपके लिए रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का योग बन रहा है। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती

रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के शुरु में आपके धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। 18 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रूचि बढेगी। 14 जूल के बाद आप पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा कर पुण्यरर्जन भी करेंगे।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन दीपक जलाएं और महालक्ष्मी के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं दशम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुपंचम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भश्रेष्ठतम रहेगा। बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। आप आपनी आंतरिक क्षमता, इच्छा शक्ति, संतुलन और दृढ़ता से अपने काम पर ध्यान देंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे।

23 अक्तूबर के बाद व्यावसायिक जीवन में उतार-चढाव का सामना करना पड़ सकता है परन्तु अपने अनुभवों से अपना विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इस संबंध में आपको सफलता भी मिलेगी। गुरु के गोचर के बाद क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहें। खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

12 अगस्त के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलने की सम्भावना है। लॉटरी, शेयर इत्यादि से भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। कर्जे से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि से घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में वैचारिक मतभेद से आप मानसिक अशान्ति महसूस सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। 5 मार्च के बाद परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफीअनुकूल हो रहा है। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। लगाव बढ़ने के कारण पारिवारिक माहौल भी अनुकूल होगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान मेंबच्चों का प्रवेश हो जाएगा।

5 मार्च से गुरु का गोचरप्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहने के कारण उनकीशिक्षा-दीक्षा में रूकावटें आ सकती हैं। बच्चोंके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपको छोटी-मोटी बीमारियां हो सकती हैं। मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को उत्तमबनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यवसायी इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे और उसमें सफलता भी होंगे।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 5 मार्च से समय आपके लिए काफीशुभ हो रहा है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ राहु के कारण वर्षारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्राओं के भी प्रबल योग बन रहे हैं। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

गुरु के गोचर के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। यात्रा के दौरान किसी से बहुत अच्छी मित्रता होगी। 12 अगस्त के बाद धार्मिकयात्रा का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक धार्मिक कार्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना, तीर्थ स्थलों की यात्रा इत्यादि करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय अति उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके अंदर काम करने का जुनून होगा। यही आपके व्यावसायिक उन्नति का कारण बनेगा। अष्टम स्थान के केतु आपके कार्यों में कुछ रुकावट उत्पन्न कर सकते हैं।

आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे तो उसमें अच्छा लाभ होगा। अपने कार्य व्यवसाय में रिश्तेदारों के साथ साझेदारी न करें। नहीं तो उनके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से चुनौतीपूर्ण रहेगा। द्वितीयस्थ राहु के कारण बीमारी दूर करने में संचित धन का व्यय हो सकता है। गुरु ग्रह का गोचर अशुभ होने से धनागम में रुकावट व आर्थिक तंगी का योग बना हुआ है। परन्तु 18 मार्च के बाद अचानक व्यापारिक उन्नति होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने ऋण इत्यादि से मुक्ति मिलेगी व तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ें या विवाद में न उलझें और अपनी वाणी पर पूर्ण नियंत्रण रखें, नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं होगी। मामा के साथ भी आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय धर्म पत्नी के

साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। प्रेम संबंध बहुत ही मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस समय के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित किसी प्रकार की लपरवाही न करें। आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत अच्छा नहीं है। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी ग्रस्त होंगे। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। रोग स्थान में गुरु ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं है। यदि पहले आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित करने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

18 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे। अपने खान-पान पर संयम रखें। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष की शुरुआत करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ रहेगी। परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको 18 मार्च के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

शिक्षार्थी इस समय योग्यता के अनुसार सफलता पाने में सफल रहेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में विशेष बड़ी कोई अड़चन नहीं आयेगी। अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि रहेगी। विदेशी भाषा सीखने की ओर आकर्षित होंगे। आपका उत्साह व साहस बना रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 18 मार्च से आप अपनी पत्नी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्राओं से आपको लाभ होगा।

वर्षान्त में नौकरी करने वाले व्यक्तियों के स्थानान्तरण के योग बन रहे हैं। परन्तु यह बदलाव आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान पर राहु एवं शनि ग्रह की दृष्टि समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 18 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, योग करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका आकर्षण और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं द्वादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहें है तो आपके लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा। कानून से जुड़े लोगो को अच्छा लाभ मिलेगा। 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

जुलाई के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में आपका किसी से मतभेद हो सकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। किसी प्रकार का जोखिम मोल न लें नहीं तो व्यापार में हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रथम भाग आर्थिक दृष्टि से अच्छा रहने वाला है। एकादशस्थ शनि के कारण आर्थिक स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है, परन्तु द्वितीयस्थ राहु के कारण अचानक कुछ व्यर्थ के खर्चे होते रहेंगे। अनावश्यक खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वर्ष का पूर्वार्द्ध सम्पन्नता से गुजरेगा।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आर्थिक उन्नति के लिए अच्छी नहीं है। आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। धोखा या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध सामान्य रहने वाला है। द्वितीय स्थान का राहु प्रतिकूल होने के कारण आपको घरेलू मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर

झगड़ा या विवाद में नही पड़ना चाहिए। मार्च के बाद अपने दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए आपको अपने जीवन साथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। एकादशस्थ शनि के कारण बड़े भाइ-बहनों के लिए समय काफी शुभ है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मदभेद होने की संभावना बन रही है। पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है परन्तु माता के लिए शुभ है। आपका एवं आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहने सेघरेलू माहौल ठीक नहीं सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण यह समय आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। दूसरे संतान के लिए भी यह वर्ष ज्यादा अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से बढ़िया रहेगा। आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 28 मार्च के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशनी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश स्थान का शनि धीरे-धीरे आपकी शारीरिक ऊर्जा कम कर सकता है, जिससे आप अपने को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफें बढ़ सकती हैं। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। अतः राहु ग्रह की शान्ति स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के पूर्वार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा और आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

यदि आप नौकरी करते हैं तो साल का उत्तरार्द्ध कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। लोग आपके विरूद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाये जा सकते हैं,

जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है और आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का पूर्वार्द्ध यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। मार्च के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

जुलाई के बाद द्वादश के शनि आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि चोट चपेट की प्रबल सम्भावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास होगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वों को हंसी खुशी के साथ मनाएंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए शनि यन्त्र अपने पूजा घर में स्थापित कर उसकी पूजा करें।
- मदिरा और नशीले पदार्थों का सेवन बिल्कुल न करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि द्वादश भाव में और सिंह राशि का राहु लग्न स्थान में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें वरना कानूनी वाद-विवाद में फंस सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएं, सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें नहीं तो उस में आपको हानि हो सकती है। पहले से चले आ रहे कार्यों को सुचारु रूप से चलाते रहें। उसमें आपको सफलता मिल सकती है। नवमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से अनुभवी लोगों का सफलता मिलेगी। जो लोग शेयर बाजार या रीयल एस्टेट से जुड़े हैं, उनको थोड़ा बहुत लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। यदि वह आपसे उधार मांग रहा हो तो बेहद ही सावधान रहें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। गृहस्थ जीवन की बात करें तो पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। अप्रैल के बाद आपके छोटे भाई बहनों के साथ संबंध अच्छा रहेगा। आपके माता पिता

जी के लिए यह समय काफी शुभ है। परन्तु आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। समाज में आपका सम्मान और बढ़ेगा। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़ी सावधानी से से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। 6 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रहेगी।

अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या में भी सुधार करना होगा। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें। आँखों में समस्या हो सकती है और चश्मा भी लग सकता है। जिन लोगों को पहले ही चश्मा लग चुका है उनके चश्मे का नम्बर बढ़ सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये भ्रम और असमंजसता की स्थिति बनी रहेगी। विदेशी भाषा सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह साल बहुत ही शुभ रहेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को कठिन परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। शत्रुओं को परास्त करने के लिये आपको अत्यधिक परिश्रक करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए वर्ष प्रारम्भ बहुत ही श्रेष्ठ है। अष्टम स्थान का गुरु प्राचीन दर्शनीय स्थलों या सामुद्रिक स्थलों की यात्रा करा सकता है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगे।

नवमस्थ गुरु के कारण आप धार्मिक यात्रा भी अधिक करेंगें। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके समस्त धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा, जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रियाएं कम ही कर पाएंगे। 6 अप्रैल के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आपके दैनिक पूजा-पाठ व दिनचर्या में सुधार होगा। गरीबों को खाना खिलाने या उनकी सहायता करने में आपको संतुष्टि मिलेगी।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपने वजन के बराबर अन्न दान करें जिसके प्रभाव से शारीरिक व्याधियां दूर होंगी।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। जिससे राहु ग्रह का दुष्प्रभाव समाप्त होगा।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु नवम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार प्रयास करना पड़ेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावट डाल सकते हैं। आपके कार्यों में अचानक हानि या कोई बड़ी समस्या आ सकती है, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु नवमस्थ गुरु के कारण आपका भाग्य साथ देगा और आप सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे।

अप्रैल के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। व्यापार में किसी पर अवश्यकता से ज्यादा विश्वास न करें नही तो हानि हो सकती है। 27 अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। यह तबादला आपके अनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु अधिक खर्च होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। रोग बीमारी इत्यादि में आपका व्यय ज्यादा होगा। द्वादश स्थान का शनि अनावश्यक खर्च भी बढ़ा सकता है। अतः अपने खर्चे पर अंकुश लगाएं।

अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभुषण इत्यादि की प्राप्ति हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके प्रतिकूल हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक अनुकूल नहीं है। व्यावसायिक व्यस्तता के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों का सामना करने के लिए आप

अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकास करें। आपके ईष्ट मित्र भी अपने वादों से मुकर सकते हैं और उनसे आपका मतभेद हो सकता है। माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

15 अप्रैल के बाद पारिवारिक रूप से समय काफी अनुकूल हो जाएगा। आपको परिवार के बड़े सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। उनके साथ आपके संबंध भी खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। उनके उन्नति के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अत्यधिक अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा योग बना रही है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश मिल सकता है।

अत्यधिक भोजन एवं आलस्य से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। 27 अगस्त के बाद शिक्षा प्राप्ति में व्यवधान आ सकता है। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के कारण लम्बी यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। इस यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रही है। नौकरी वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह परिवर्तन आपके घर के पास हो सकता है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ेगी, जिससे परमात्मा के प्रति आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढाएं व हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- दुर्गा बीसा व आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बना रहा है। यदि किसी के साथ मिलकर व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने भागीदार से असंतुष्ट रहेंगे। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ेगा। व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अप्रैल के बाद गुरु का गोचर किंचित शुभ हो रहा है। अतः व्यापार व नौकरी में कुछ सुधार होगा। शेयर बजार से जुड़े जोगो को लाभ मिलेगा। क्रय विक्रय, व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियो को सावधान रहना चाहिए नही तो हानि हो सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला जुला रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन एवं रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। अप्रैल के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे।

16 सितम्बर से आप का समय प्रभावित हो रहा है। मुख्यतः ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बन रहा है। इस समय आपको खर्चो पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। अप्रैल के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। सप्तम स्थान पर

शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे, जिससे आपकी ख्याति समाज में और बढ़ेगी।

16 सितम्बर से आपका पारिवारिक माहौल प्रभावित हो सकता है। अचानक आपकी धर्म पत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। कुछ लोगों का व्यवहार आपको अच्छा नहीं लगेगा। फिर भी आपको उन लोगों के साथ स्नेह व प्रेम बनाए रखना पड़ेगा। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहारों में संयम बरतें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। उसको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उसके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय काफी शुभ हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु सितम्बर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। शनि की सप्तम भाव पर दृष्टि के फलस्वरूप व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव हो सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आपको अपने अन्दर कमजोरी जैसा अनुभव होगा।

अप्रैल के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए सामान्यतः मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय के सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभ प्रद रहेगा।

26 अप्रैल के बाद समय विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु उत्तम है। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं उन्हें मनोनुकूल अच्छे कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। सितम्बर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए, क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

लग्न में शनि की स्थिति यात्रा में विलंब या किसी प्रकार की कठिनाई का कारण बनेगी। छोटी-मोटी यात्राएं प्रभावित होंगी। परन्तु द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अप्रैल के बाद जन्म भूमि की यात्रा होगी।

26 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि व्यवसाय संबंधित यात्रा भी करा सकती है। इस वर्ष आपकी पूर्व निर्धारित कोई यात्रा नहीं होगी। मुख्यतः सारी यात्राएं अचानक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान का शनि धार्मिक कार्यों में अरुचि उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। तन्त्र, यन्त्र व सिद्धि के प्रति आपका रुचि बढ़ेगी। 26 अप्रैल के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य भी अधिक करेंगे।

- राहु मन्त्र का पाठ करें व शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं लग्न स्थान मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः श्रेष्ठ रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान का गुरु व्यापार में उन्नति का योग बना रहा है। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। यदि आप साझेदारी में व्यावसाय कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी लोगों व वरिष्ठ अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। मई के बाद समय कुछ प्रभावित होगा। अतः इस समय के अंतराल में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कोई गुप्त शत्रु आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकता है। इन समस्याओं के बीच आप अपने को पूर्ण रूप से फंसा हुआ महसूस करेंगे। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे और अक्टूबर के बाद काफी हद तक सफल भी रहेंगे। उस समय आपके कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। धनार्जन करने में आपको भाई व धर्मपत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। परन्तु मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें व धन के लेन देन में सावधान रहें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है।

गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोगों की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। अक्टूबर के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय रिश्तेदारों व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 11 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका पारिवारिक माहौल ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आप बड़े ही विवेक से काम लें और सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आएं।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। आप मानसिक रूप से परेशान भी रह सकते हैं। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। अक्टूबर के बाद जीवनसाथी के साथ प्रेम सम्बन्धों में मधुरता आएगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उसके उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

11 मई के बाद उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी अनुशासनहीन हो सकती है, जिससे उनकी उन्नति में किंचित व्यवधान आ सकता है, परन्तु अक्टूबर के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। 11 मई के बाद चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी ही भोजन करें। दाल, सब्जी, फल आदि का अधिक सेवन करें। 7 अक्टूबर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए शुभ है। यदि उच्च शिक्षा हेतु अच्छे

शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

मई के बाद उन्नति में व्यवधान आता रहेगा। यदि आप अपने लक्ष्य में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं, उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह वर्ष शुभ है।

यात्रा-तबादला

तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि छोटी-मोटी यात्रा कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा। 11 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा, जिससे आप दुखी रहेंगे।

यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि मई के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह साल मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना ही आप अपना धर्म समझेंगे। अक्टूबर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे।

- वीरवार के दिन केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- सातमुखी रुद्राक्ष लाल धागे में धारण करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर नित्य उसका पूजन करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थपित करें और नित्य उसका पूजन करें।

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करने की काशिश करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। हालांकि अप्रैल से समय काफी शुभ हो रहा है। कार्य व्ययवाय में सुधार होगा। वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे।

आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधी में आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। यदि आप खनिज एवं खान विभाग व रासायनिक विभागों से संबंधित कार्य कर रहे हैं तो अच्छी सफलता मिलेगी। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जाएगी। 4 नवम्बर के बाद समय नौकरी करने वालों के लिए शुभ नहीं है। आपके वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेत उत्पन्न हो सकते हैं तथा कार्य स्थल का वातावरण खराब हो सकता है।

धन संपत्ति

द्वितीय स्थान के शनि कुछ अनावश्यक खर्चे ला सकते हैं जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। घर परिवार में रोग व्याधि की अधिकता होने से भी आपके अपव्यय होंगे। पैसे के लेन देन के समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। आपको अपने अनावश्यक खर्चो पर अंकुश लगाने की जरूरत है तथा जोखिम भरे कार्यो में धन निवेश करने से बचें।

5 अप्रैल से शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होते ही धनागम के बन्द सारे मार्ग खुलेंगे तथा आपका चौमुखी विकास होगा। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में आप अत्यधिक व्यय करेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च होगा। मित्र या भाइयों के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के शनि आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। अतः आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। परन्तु आपकी पत्नी के साथ समन्वय मधूर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

आपके भाइयों की उन्नति होगी। पिता जी के लिए भी यह समय शुभ है। 2 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी, जिससे पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। आप उच्च मान संमान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके सामाजिक प्रभाव व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सरकारी क्षेत्र में आपको काफी सम्मान मिलेगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। परन्तु 4 नवम्बर से समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं। पंचमस्थ केतु पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। अतः आपके बच्चे का चौमुखी विकास होगा। उनकी उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

3 मार्च के बाद समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु 2 जून के बाद समय फिर से अच्छा हो जाएगा तथा उसके बाद पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। उस समय के अंतराल में बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे जिससे आप उनसे प्रसन्न रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परन्तु 3 मार्च के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से भी परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी भुगत रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है, नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हालांकि 2 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना प्रारम्भ हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन की ग्रहण करेंगे। अर्थात् सादा खाना उच्च विचार वाली युक्ति आप पर पुर्ण रूप से चरितार्थ होगी। 4 नवम्बर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है उसके बाद आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को ज्यादा सफलता नहीं मिलेगा।

यात्रा-तबादला

3 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होंगी। 4 नवम्बर से सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होने का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। मार्च के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गौशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान करेंगे। 2 जून के बाद आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

- सोमवार के दिन शिव जी पर दूध में काले तिल डाल कर चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- वीरवार के दिन केला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं प्रथम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कई कार्यों में सफल होंगे। व्यापार में बड़े बड़े निर्णय लेने या विकास की योजनाओं पर ध्यान देने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही कदम बढ़ाएं। कानूनी मामलों से बचें क्योंकि वर्षारम्भ में शनि एवं गुरु की युति अच्छी नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। अधिक आत्मविश्वास आपको मुश्किल में डाल सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। आप अपने मनपसंद क्षेत्र में अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

अप्रैल से जून तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें नहीं तो कार्य व्यवसाय में नुकसान हो सकता है। परन्तु जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके मान-सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आप प्रसन्न रहेंगे व अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे और प्रतिद्वंदियों को मुहतोड़ जबाब देंगे। 11 दिसम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने से बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा कार्यस्थल पर आपकी एक अलग पहचान होगी।

धन संपत्ति

आमदनी में बढ़ोत्तरी होने के कारण आप बचत करने में भी सफल रहेंगे। किसी वसीयत के माध्यम से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप धन को धार्मिक कार्य में खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद धन हानि के योग हैं अतः कोई जोखिम भरा निवेश करने से बचें साथ ही पैसों की सुरक्षा को लेकर चिंतन करें। जून के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करेंगे। वर्षान्त निवेश के लिए बहुत ही शुभ है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य

आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद अचानक आपकी माताजी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, जिसके नकारात्मक प्रभाव से पूरा परिवार प्रभावित हो सकता है। चतुर्थ स्थान का केतु वैचारिक मतभेद भी करा सकता है। आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधो में तनाव की अनुभूति हो सकती है। परन्तु 28 जून से समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध पारिवारिक शान्ति एवं सामाजिक उन्नति के लिए उत्तम है। पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका एक अलग प्रकार का प्रभाव होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। सामाजिक उन्नति के लिए आप कोई विशेष कार्य करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में और अधिक वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। आज्ञापालन में वे हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति का यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में सफल भी होंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। वर्षान्त आपकी दूसरी संतान के लिए बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी तथा आप मानसिक रूप से प्रसन्न व सन्तुष्ट बने रहेंगे। आप पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के होंगे। आप रोग व्याधियों से दूर होंगे, परन्तु 6 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा।

खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा। अधिक खान-पान व बाहर का खाना खाने से फूड पॉइजनिंग की सम्भावना है। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें। व्यवहारिक बने रहें। व्यर्थ के कार्यों में समय खराब न करें, इसके फलस्वरूप आप परेशान रह सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें एवं अधिक आत्मविश्वासी न बनें वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनियर, वकील व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह साल मिला जुला रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है। विदेश में वांछित उन्नति के लिए वर्षान्त श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं, परन्तु 6 अप्रैल के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय से संबंधित यात्राओं की अधिकता होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थानान्तरण होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी। ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। साल के मध्य में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल सामान्यतः अच्छा नहीं रहेगा। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। कुछ गलत फहमियों से भी आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि 6 मई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेगा।

इस वर्ष आप कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारू रूप से चलाते रहें। यदि साझेदारी में कार्य कर करे हैं तो 26 सितम्बर के बाद आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। लाभ के साथ-साथ चुनौतियां भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करें नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेन-देन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरे निवेश करने से बचें। राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को आर्थिक हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर परिवार के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अधिक भागदौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालाँकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके छोटे

भाई बहनों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

6 मई के बाद पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। लेकिन आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीय स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में कुछ कमी आ सकती है।

संतान

यह साल संतान के लिए अच्छा रहने वाला है। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन्नति करेंगे। दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। 6 मई से जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। उसके बाद पूरा वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

पहले से चली आ रही बीमारी उग्र रूप ले सकती है इसलिए सावधानी बरतें। 26 सितम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। अतः शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन व महामृत्यंजय का जाप कराएं जो आपकी मनोकामनाओं को पूरा करने में सहयोग करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वालों के लिए यह समय अच्छा रहेगा। 6 मई के बाद आपको वांछित सफलता मिलेगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा रहने वाला है। 26 सितम्बर के बाद नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी।

सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराते रहेंगे। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है। यात्रा व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि 26 सितम्बर के बाद दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। कोई भी शुभ कार्य योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा पूजादि कार्यों में व्यवधान आने की आशा है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है, इस उद्देश्य पर रहेंगे। 26 सितम्बर के बाद सभी धार्मिक कार्यों में व्यवधान आएंगे।

- प्रत्येक सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाएं तथा ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं तृतीर्य भाव मे गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। वरिष्ठ लोग व उच्च अधिकारी आपके कार्यों से प्रसन्न रहेंगे तथा सभी प्रकार से आपकी सहायता करने में तत्पर्य रहेंगे। कार्य स्थल पर आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। यह सब आपकी सकारात्मक विचारधारा के कारण होगा। व्यावसायिक व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करेंगे। 10 जून से अगस्त तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आजीविका के क्षेत्र में कुछ कमी आ सकती है, जिससे आय के स्रोत प्रभावित होंगे। प्रतिद्वंदी आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे, परन्तु आप अपने बौद्धिक बल द्वारा सभी प्रतिद्वंदियो को पीछे छोड़कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। व्यावसायिक उन्नति करने में आपको कर्ज भी लेने पड़ सकता है। भूमि, वाहन व कॉस्मेटिक से जुड़े लोगों को लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ लाभप्रद रहेगा। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। 22 जून के बाद पैसे के मामले में आप ज्यादा सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। किसी के बहकावे में आकर अपने धन को निवेश न करें नहीं तो हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेशी धन व वसीयत की प्राप्ति होगी। गुप्त रूप से भी आपको धन लाभ होगा। यदि आप निवेश करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए श्रेष्ठ है। वर्षान्त में आपके कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ेंगे। अतः उस समय अपने खर्चों पर अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक सुख, शान्ति एवं समृद्धि के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे, जिससे परिवार में शान्ति तथा सद्भावना का वातावरण रहेगा। आपकी माता के लिए यह समय शुभ है। जून के बाद सुख एवं सहयोग में न्यूनता आयेगी परन्तु संबंधो में मधुरता बनी रहेगी। मित्र वर्ग आप से नाराज हो सकता है। राहु के कारण आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी दे सकती है। उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। आपके प्रति बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में कमी आएगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके बच्चों को किसी नौकरी या रिसर्च के कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि वे किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेते हैं तो सफलता सम्भव है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह बहुत शुभ समय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि के कारण आप कुछ चिन्ता का अनुभव करेंगे। अकारण चिंता करने से कुछ हासिल नहीं होगा। आप चिंताओं से उबरने की कोशिश करें वरना आपको किसी मानसिक रोग अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी विकार का सामना करना पड़ सकता है। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियां हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शिक्षा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला फल देने वाला है। विद्यार्थियों की उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय काफी श्रेष्ठ है। आपका नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान रहेगा।

राहु के कारण याद करके भूलने की प्रवृति बनेगी। अष्टम स्थान का राहु मानसिक तनाव का कारण बन सकता है। आपका रुझाान राजनैतिक, तंत्र-मंत्र, विद्या सिद्धि रोमांचकारी रिसर्च से जुड़े विषयों में अधिक रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे है। 10 जून के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये सभी यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थान की यात्रा होगी। आप पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राएं करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का आरम्भ अनुकूल नहीं है। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेगा। आप चाह कर भी पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। मानसिक अशान्ति के कारण ध्यान योग व मन्त्रोच्चारण में आपका मन नहीं लगेगा। परन्तु काला जादू, तन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

उत्तरार्द्ध में गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। अच्छे मुनाफे मिलने के आसार हैं। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे। कारोबार का विस्तार होगा तथा सरकारी ठेके भी मिल सकते हैं। व्यापार में पूंजी लगाने वाले नए लोग भी मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण कुछ विरोधी व गुप्त शत्रु आपको नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा आप उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सेवारत लोगों को अच्छे परिणाम मिलेंगे। कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। नौकरी से संबंधित आपकी सभी इच्छाएं पूरी होंगी।

धन संपत्ति

एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के बाधित मार्ग खुलेंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन लगातार होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी। आर्थिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके लिए बेहतर साबित होगा।

30 जुलाई के बाद किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है। अतः पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें, नहीं तो अष्टम स्थान का राहु अचानक धन हानि करा सकता है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपने खर्चों पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर

सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान सुख की प्राप्ति होगी। आपको भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। परिवार में धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य होते रहेंगे जिसमें परिवार के सभी लोग सम्मिलित होंगे।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा इस वर्ष आप अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। समाज में आपका दबदबा बना रहेगा। कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर पाएगा तथा आपको वांछित सम्मान प्रदान करेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही शुभ है। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वे विवाह के योग्य हैं, तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

30 जुलाई से 11 सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद फिर से उत्तम हो जाएगा। आपके बच्चे धर्म कार्य व अच्छे कार्यों में समय ज्यादा व्यतीत करेंगे। आपकी आज्ञा के पालन में सदैव तत्पर्य रहेंगे। सितम्बर के बाद नवविवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी जो आपको शारीरिक रूप से आरोग्य रखने में सहायता करेगी तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव करेंगे। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। अष्टम स्थान का राहु जल तत्व राशि होने के कारण कफ, सर्दी तथा जुखाम इत्यादि बीमारियों से पीड़ित कर सकता है। मोटापा तथा पेट संबंधित बीमारी भी हो सकती हैं। अतः उस समय घी या तला हुई वस्तु का सेवन कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहने वाला है। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आध्यात्मिक शिक्षा, योग शिक्षा तथा शोध कार्य करने वाले के लिए बहुत ही शुभ है। इन लोगों को वांछित उन्नति मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने

लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी छोटी बड़ी यात्राएं खूब होंगी। धार्मिक यात्रा का अधिक आनन्द लेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राएं प्रभावित होंगी।

नौकरी करने वालों के लिए मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग बने हुए हैं। आप अपने जन्मस्थल की यात्रा करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अनुकूल है। विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें तथा नीली वस्तु का दान करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- अपने पूजा घर में बुधवार के दिन श्वेतार्क गणपति स्थापित करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें, क्योंकि शनि ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ नहीं है। गैरकानूनी क्रिया-कलापों में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि होने की संभावना हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा।

नौकरी करने वाले जातकों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बना कर रखने चाहिए। फरवरी के बाद व्यवसाय करने वालों को अपनी व्यावसायिक प्रगति में अवरोधों का सामना करना पड़ सकता है। बिजनेस में धीमी चाल से प्रगति होगी। शेयर बाजार एवं सट्टेबाजी आधारित गतिविधियों में किस्मत अजमाने का प्रयास न करें अन्यथा आपका धन लंबे समय के लिए फँस सकता है। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय आपको आर्थिक हानि पहुँचा सकते हैं। किसी भी बिजनेस के लिए सोच समझकर ही साझेदार शामिल करें।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक स्थिति के लिए उत्तम रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

आर्थिक मोर्चे पर आपको विशेष सावधानी रखनी होगी क्योंकि आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। वैसे आमदनी का स्रोत बना रहेगा तथा दैनिक आमदनी में कोई रुकावट नहीं आएगी। अगर किसी को धन उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापिस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें। मंहगी व सुख सुविधा वाली वस्तुओं में धन लगा सकते हैं जो आपके लिए धन का अपव्यय ही होगा इसके परिणामस्वरूप आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है, जिससे आपके पत्नी के साथ संबंध खराब हो सकते हैं। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के

लिए अच्छा नहीं होता, अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड़वाहट आने की संभावना है।

माता व बड़े-बुजुर्गों का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है। किसी करीबी व्यक्ति के साथ आपकी कहा-सुनी हो सकती है। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। आपके साथ विश्वासघात हो सकता है यानी आप जिन लोगों पर भरोसा करते हैं वे धोखा दे सकते हैं।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है, परन्तु 16 फरवरी के बार समय सामान्य हो जाएगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का पूरा फल मिलेगा।

आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां आ सकती हैं तथा उनकी उन्नति में व्यावधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखो का विशेष ध्यान रखें। यदि पहले से चश्मा लगा हुआ है तो उसके नंबर की जांच करा लें। आपके आत्मवश्वास में कमी आ सकती है।

लंबे समय से चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा। उसके उपचार में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। आक्स्मिक चोट लगने की संभावनाएं भी बनी हुई हैं। अनिद्रा की शिकायत आपको परेशान कर सकती है। अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें नहीं तो मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से सम्बन्धित कार्य करते समय सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएँ। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो के लिए यह साल सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी भी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। दी गई परीक्षाओं का परिणाम

हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में धार्मिक यात्राएं करने का अवसर प्राप्त होगा। 16 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ेगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एंव सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। आपको काफी मेहनत करनी होगी, क्योंकि शनि के चतुर्थ भाव में गोचर करने से आपके सारे कार्य धीमी गति से आगे बढ़ेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मानसिक तौर पर मजबूत तथा धैर्यवान बनना होगा। बड़े स्तर की योजनाओं में सोच समझकर ही निवेश करें।

लगातार प्रयास और दृढ़ निश्चय के साथ डटे रहने से ही आप सफलता को प्राप्त कर सकेंगे। व्यापार का विस्तार करने से पहले जोखिम होने की संभावनाओं को ध्यान में अवश्य रखें। धैर्य से काम लें और जो कुछ हो रहा है उसे होने दें। 15 जुलाई के बाद आप अपने विरोधियों से मुकाबला करने में सक्षम रहेंगे। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखना श्रेष्ठ रहेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ खर्चों में बढ़ोत्तरी दर्शा रहा है। इस अवधि के दौरान धनार्जन करने के लिए आपको सतत प्रयास करने पड़ सकते हैं तथा व्यवसाय में धन की आवाजाही लगी रहेगी। आप अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। अपनी विलासिता पर लगाम लगाएँ अन्यथा कुछ आर्थिक समस्याएँ हो सकती हैं। अगर किसी को उधार दिया है तो फिलहाल उसके वापस मिलने की संभावना कम है। आप आक्स्मिक धन लाभ की उम्मीद न रखें।

15 जून के बाद आपके बिगड़े हुए कार्यों में सुधार होगा। धन कमाने के काफी अच्छे अवसर मिलने की संभावनाएँ हैं। आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी व अनेक स्रोतों के माध्यम से धन मिल सकता है। आप अपने खुद के परिश्रम से अधिक धन अर्जित कर पाएंगे। पत्नी व मित्रों से भी धन लाभ होने की संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। माता के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड गा। अतः आपको अपने व्यवहार पर विशेष ध्यान देने की जरुरत है, वरना संबंधों में कुछ कड वाहट आने की संभावना है। पारिवारिक जीवन के लिए यह समय थोड़ा तनावपूर्ण रह सकता है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तम स्थान का राहु आपके दाम्पत्य जीवन में कुछ खटास उत्पन्न कर सकता है। माता या किसी बड़े-बुजुर्ग का स्वास्थ्य आपकी चिंता का प्रमुख कारण बन सकता है।

सामाजिक स्तर पर कुछ अपमानजनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं, हालांकि राहु ग्रह के गोचर के साथ समय कुछ अनुकूल होगा। वर्ष के दूसरे भाग से आप अपने जीवनसाथी के साथ ढेर सारी खुशियाँ मना सकेंगे। यह समय आनंद से भरपूर रहेगा। आपके व्यवहार में प्रेम और भावुकता की वृद्धि होगी। जीवनसाथी आपके प्रति अधिक समर्पित रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी दूसरी संतान के लिए अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा उनके उन्नति में भी व्यावधान आने की संभावना बन रही है। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए यह समय श्रेष्ठ नहीं है।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। 15 जून के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है तथा उस समय उनको वांछित सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि तथा सप्तम स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियां, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। सिर में चोट चपेट लगने की पूर्ण सभावना बन रही है। किसी लंबी चली आ रही बीमारी का सरलता से निदान नहीं होगा, जिसके कारण आपको उपचार कराने में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें वरना आपका मानसिक तनाव बढ़ सकता है। वाहन चलते समय व मशीनरी से काम करते हुए सतर्कता बरतें। तरोताजा रहने के लिए सैर-सपाटे पर जाएं। सुबह सुबह पार्क में घूमना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा। हालांकि 15 जून के बाद सयम काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस लिए दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। नौकरी करने वाले लोगों का प्रतिकूल स्थान पर तबदला होगा जिससे आप प्रसन्न नही रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी तथा इन यात्राओं से आपको खूब लाभ मिलेगा। इस वर्ष आप ज्यादातर अपने घर से दूर ही रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए अनुकूल नहीं है। मानसिक अशान्ति व आलस्यता का भाव बना रहेगा, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 15 जून के बाद आपके मन में ईश्वर के प्रति आस्था व विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी धर्म पत्नी के साथ मिल कर कोई विशेष पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(04/04/2014 - 04/04/2034)

शुक्र की महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 04/04/2014 को आरंभ और 04/04/2034 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है और अच्छे स्वाद, संगीत, नाटक, ऐंद्रिय सुखों का द्योतक है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में नीच का तथा मीन में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर उसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् दशम् भाव सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम और यश, सफलता और प्रतिष्ठा, ख्याति, लक्ष्य अधिकार, कर्त्तव्य, पदोन्नति, आधुनिकता, उच्च पद तथा राजकी सम्मान एवं जाँघों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र दशम् भाव में स्थित है जहां से यह आपकी जन्मकुण्डली के चतुर्थ भाव, जो परिवार का भाव और सुख स्थान है, को, एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र तक देखता है। इसके फलस्वरूप आपकी इस दशा काल में कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप सभी तरह का पारिवारिक आनन्द उठाएँगे।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र जीवनचर्या तथा व्यवसाय के दशम भाव में स्थित है, जो आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने के अनेक अवसर प्रदान करेगा। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी स्थिति के कारण सम्मान प्राप्त करेंगे तथा शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको नया घर तथा वाहन प्राप्त होने की संभावना है।

व्यवसाय :

आप जो कोई भी व्यवसाय अपनाएंगे उसमें सफल होंगे। आपको आदर और प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सुखी और तेज होंगे और आपको व्यवसाय के सिलसिले में यात्रा से लाभ होगा। आपके भाई-बहन आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

अपने व्यवसाय तथा नौकरी के प्रति समर्पित होने के कारण आप अपने जीवन साथी का अनजाने में तिरस्कार करेंगे जिससे आपके परिवार में दरार पैदा हो सकती है और घरेलू जीवन बरवाद हो सकता है।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(04/06/2024 - 03/02/2027)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/04/2014 को आरंभ हुई थी और 04/04/2034 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 04/06/2024 को प्रारंभ होकर 03/02/2027 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है। छठा भाव अशुभ समझा जाता है। शुभ ग्रह बृहस्पति की वहां पर स्थिति अशुभ होती है।

इस अवधि में अधिसंख्य लोग आपको अविश्वास की नज़र से देखेंगे; जीवन में तनाव और कष्ट रहेंगे। आलस्य की भावना रहेगी, शत्रुओं से त्रस्त हो सकते हैं, भाग्य साथ नहीं देगा। सम्मान में कमी आ सकती है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(03/02/2027 - 04/04/2030)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 04/04/2014 को प्रारंभ हुई थी और वद 04/04/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 03/02/2027 को प्रारंभ होकर 04/04/2030 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप निर्दयी मगर साहसी हो सकते हैं। धनी बनेंगे, सरकार से सम्मान मिलेगा। बहुत सारे लोगों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता मिलेगी, मगर बाधाओं को पार करने के बाद। मन उदास या चिंतित रहेगा। वक्त गुज़रने पर सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी की अंगूठी में पूजा के उपरांत शनिवार के

दिन रात्रिभोजन के बाद मध्यमा अंगुली में नीलम धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - बुध
(04/04/2030 - 02/02/2033)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/04/2014 को प्रारंभ हुई थी और वद 04/04/2034 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 04/04/2030 जो आपके लिए 02/02/2033 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

द्वादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका मन व्यथित या भ्रमित रह सकता है। दार्शनिक स्वभाव हो सकता है। कार्य में दक्षता हासिल करने के बावजूद भ्रष्ट बुद्धि के कारण अप्रसन्न रह सकते हैं। विषय-वासनाओं में रुचि बढ़ सकती है; जीवनसाथी के अतिरिक्त व्यक्ति से आपके संबंध हो सकते हैं। सावधानी और मन पर नियंत्रण आवश्यक हैं। गलत मार्ग पर चलने से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - केतु
(02/02/2033 - 04/04/2034)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 04/04/2014 को प्रारंभ हुई थी और 04/04/2034 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 02/02/2033 को प्रारंभ होकर 04/04/2034 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

इस अवधि में यद्यपि आप बली और साहसी होंगे और आपके शत्रुओं की संख्या में कमी आएगी, मगर आप कुछ विचलित रहेंगे। मतिभ्रम संभव है। संगीत और कलाओं में रुचि होगी। समय भाग्यशाली रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

महादशा :- सूर्य
(04/04/2034 - 04/04/2040)

सूर्य की महादशा 04/04/2034 को आरंभ और 04/04/2040 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 6 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य एकादश भाव में अवस्थित है। सूर्य सम्पत्ति, स्वास्थ्य, प्रभाव तथा प्रतिष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है जबकि एकादश भाव सभी प्रकार के लाभ, मनोकामनाओं की पूर्ति, शिक्षा तथा भौतिक सुखों का सूचक है। अतः इस दशा-काल में आपको धन, प्रभावशाली मित्रों, पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में रोगों की प्रतिरोध शक्ति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रखने के लिए आपको सात्विक और सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आप सरदर्द और हृदयगति की पीड़ा से ग्रसित हो सकते हैं। आपको अतिशयता का परित्याग करना चाहिए और जीवन के प्रति आपकी सोच सकारात्मक होनी चाहिए ताकि इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रह सके।

अर्थ :

आप भाग्यशाली होंगे और आपको पर्याप्त आर्थिक संसाधन प्राप्त होंगे। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ मिलेगा। पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है। आपको पिता से लाभ की प्राप्ति हो सकती है। आप अधिक प्रयास किये बगैर आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। दशा ज्यों-ज्यों प्रगति करेगी त्यों-ज्यों आपकी आर्थिक स्थिति सुधरती जाएगी। किन्तु, आपको फिजूलखर्ची के प्रति सावधान रहना चाहिए क्योंकि आप स्वभाव से उदार हैं।

व्यवसाय :

आपको आपके सभी कार्यों में सफलता और लाभ मिलेंगे। आपको अधिक परिश्रम किये बगैर सफलता मिलेगी। आप सरकारी सेवा में अच्छा करेंगे। आप बड़ी संस्थाओं, निगमों और संस्थानों में प्रबंधक के पद के लिये सर्वाधिक योग्य है। संगठन से सम्बद्ध कोई भी कार्य आपके अनुकूल होगा। रत्नों का व्यवसाय अथवा सम्पत्ति की परिरक्षा का कार्य लाभदायक होगा। नौकरी पेशा लोगों के कार्य-स्थान में वातावरण सौहार्द्रपूर्ण रहेगा, उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग तथा उच्चधिकारियों के अनुग्रह की प्राप्ति होगी। व्यवसायियों को स्व-प्रयास से धन तथा लाभ की प्राप्ति होगी। रत्न-आभूषण, धातु तथा बिजली के सामानों आदि के व्यापारियों के लिये यह दशा लाभदायक होगी।

परिवार :

आपका बच्चों से गहरा लगाव है। आपको उनसे अत्यधिक सुख मिलेगा। इस दशा-काल में आप उनके ऊपर बड़ी सीमा तक निर्भर करेंगे। आपके जीवन साथी के साथ आपके सम्बन्ध बहुत मधुर होंगे। आपके जीवन साथी को सभी प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और उनका भाग्योदय होगा। आपकी माता को किसी अप्रत्याशित धन की प्राप्ति और धर्मशास्त्रों में उनकी रूचि हो सकती है। आपके पिता स्वयं धनोपार्जन करेंगे, प्रसन्न रहेंगे और छोटी यात्राओं पर जाएंगे। आपके भाई-बहनों के लिये यह समय समृद्धिशाली रहेगा और आपके साथ उनके

संबंध मधुर रहेंगे।

शिक्षा :

आपका अध्ययन उत्तम होगा और आप भौतिकी, ललित कला आदि में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। प्रशासकीय पाठ्यक्रमों और राजनीतिक इतिहास में आपकी रूचि होगी।

अंर्तदशा :- सूर्य - सूर्य
(04/04/2034 - 23/07/2034)

आपके लिए सूर्य की महादशा 04/04/2034 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 23/07/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपको मान-सम्मान प्राप्त होगा। सरकार और सम्मानीय नागरिकों से मान्यता और प्रशंसा की उपलब्धि होगी। आपके मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। वे आपकी सहायता के लिए तत्पर रहेंगे और संभ्रांत वर्ग के विद्वान व्यक्ति होंगे। जो भी काम आप करेंगे, सफलता मिलेगी। सट्टेबाजी से या संतान के कारण धन प्राप्त होगा। मंत्रों और सिद्धियों में आपकी रुचि बढ़ेगी। जीवनसाथी की संपदा में वृद्धि होगी। व्यापार में साझेदार के साथ संबंध मधुर रहेंगे। विद्यार्थियों के लिए समय आकांक्षाओं की पूर्ति ओर परीक्षा में कीर्तिमान स्थापित करने का है। विरोधी परास्त होंगे। जीवनसाथी को मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है।

मसालेदार भोजन से परहेज करें क्योंकि पेट खराब हो सकता है। कैल्शियम की कमी से शरीर के नीचे के अंगों में कोई समस्या हो सकती है। इसके लिए दुग्ध, शहद का सेवन अधिक करें और अग्नि को दूध अर्पित करें। आटे, गुड़ और तांबे का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - चन्द्र
(23/07/2034 - 21/01/2035)

आपकी सूर्य की महादशा 04/04/2034 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 21/01/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अवधि में आपको अचानक बिना परिश्रम के धन प्राप्त हो सकता है। बीमे, ग्रेच्युटी, सेवानिवृति लाभ आदि से धन मिल सकता है। आप परिवारजनों के प्रिय रहेंगे और उत्तम भोजन, सुख-सुविधाओं का आनंद उठाएंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा। अध्यात्म में रुचि ले सकते हैं। वैराग्य की भावना उदित हो सकती है। अप्रत्याशित प्रोन्नति हो सकती है।

बड़े भाई-बहनों के व्यवसाय/कार्य में उन्नति हो सकती है। छोटे भाई-बहनों से मनमुनाव से बचें। पिता का समय कठिन हो सकता है। माता भाग्यशाली रहेंगी।

जीवनसाथी या व्यापार में भागीदार के धन से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी का कार्य सफल रहेगा। बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का आप ठीक से ध्यान रखेंगे।

मामा पक्ष के लोगों को अधिक परिश्रम करना होगा। शत्रु आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। मामूली शिकायतों जैसे नेत्ररोग, सर्दी, ज्वर आदि से परेशानी संभव है। इन सब से बचने के लिए सोमवार का व्रत करें और श्वेत वस्त्रों का दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - मंगल
(21/01/2035 - 29/05/2035)

आपकी सूर्य की महादशा 04/04/2034 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 29/05/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ प्राप्त होगा। साहस, प्रसन्नता और धन की वृद्धि होगी। व्यवसाय/कार्य, सरकार, मातहतों और शुभेच्छुओं से लाभ प्राप्त होगा। मुकदमें में विजय प्राप्त होगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धन सरलता से आएगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार की मेहनत की कमाई में वृद्धि होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती हैं। छोटे भाई-बहनों की लंबी यात्राएं हो सकती हैं। बड़े भाई-बहनों को सफलता मिलेगी। सेवारत जातक विरोधियों को परास्त कर देंगे। परामर्शदाता मेहनत से धन कमाएंगे। व्यापारीगण व्यस्त रहेंगे। आपके बच्चे सक्रिय और स्फूर्तिवान रहेंगे और पढ़ाई में प्रगति करेंगे। अगर वे सेवाकार्य में हैं तो प्रगति करेंगे।

मामूली व्याधियां जैसे बायां कान या बायें ऊपरी अंग के रोग, ज्वर, घाव आदि आपको परेशान कर सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
(29/05/2035 - 22/04/2036)

आपके लिए सूर्य की महादशा 04/04/2034 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 29/05/2035 को प्रारंभ होकर 22/04/2036 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आप नाम, प्रसिद्धि, धन और समृद्धि के भागी बनेंगे। आप तीव्रबुद्धी वाले हैं। आपको शैक्षणिक, कानूनी और धार्मिक कार्यों में सफलता मिलेगी। विदेशियों से संपर्क हो सकता है। आप स्वभाव से स्वतंत्र और अपरंपरावादी हैं। रिश्तेदारों की मदद करेंगे। अंतर्चेतना में वृद्धि होगी। लंबी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे आपको दूरदर्शन, प्रकाशन, लेखन आदि में सफलता मिल सकती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में मन लगेगा।

जीवनसाथी परिश्रम करेंगे। उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे। माता को सब सुख-सुविधाएं रहेंगी। भाई-बहनों का भाग्य चमकेगा, उनका विवाह हो सकता है, अनुबंध पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी, विभिन्न गतिविधियों में भाग लेंगे, निवेश से लाभ होगा और जीवन आनंदमय रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सरकार या उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं की यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

कूल्हे आदि की अस्थियों में तकलीफ से बचें। कष्ट से बचने के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
(22/04/2036 - 08/02/2037)

आपके लिए सूर्य की महादशा 04/04/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 22/04/2036 को प्रारंभ होकर 08/02/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी। सब सुख उपलब्ध रहेंगे। मामापक्ष से लाभ होगा। आप सबकी सहायता करेंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी। ऋण प्राप्त हो सकता है। आप धनी, जायदाद से युक्त होंगे ; उच्च पद प्राप्त होगा।

जीवनसाथी की यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे, अचल संपत्ति होगी, जीवन सुखमय होगा। आपके पिता को उच्चपद मिलेगा। माता की यात्राएं होंगी, पत्र व्यवहार आदि बढ़ेंगे। भाई-बहनों की अचल संपत्ति में बढ़ोत्तरी, लाभकारी परिवर्तन, प्रसिद्धि की संभावना है। आपकी संतान की कार्यप्रणाली उत्तम रहेगी, लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहतों का समर्थन मिलेगा। नयी नौकरी या अधिक वेतन की संभावना है। परामर्शदाताओं का समय सौभाग्यशाली रहेगा। व्यापारीगण प्रगति करेंगे और धनवान बनेंगे।

जिगर, तिल्ली, श्वासतंत्र के रोगों और मोटापे से बचाव करें। बुरे वक्त से बचने के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें और पीली वस्तुओं का दान करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
(08/02/2037 - 21/01/2038)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 08/02/2037 को प्रारंभ होगी और 21/01/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी धर्म और सेवा कार्य में रुचि होगी। छोटे भाई-बहनों का विवाह हो सकता है। पिता के साथ मधुरता बनाये रखने के लिए प्रयास करना होगा। संतान के

साथ भी संबंध बिगड़ सकते हैं। इस अवधि में किये निवेश की समीक्षा सावधानीपूर्वक करनी होगी। आपकी संन्यास और योग में रुचि होगी। खर्चे अधिक होंगे, मगर आय भी बनी रहेगी।

जीवनसाथी भाग्यशाली होंगे, धन प्रचुर होगा। आपके पिता को साझेदारों से लाभ होगा, उच्च पद प्राप्त करेंगे। माता को धन मिलेगा, लंबी यात्राएं होंगी। भाई-बहनों के विवाह हो सकते हैं या शिशु का जन्म संभव है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। परामर्शदाता स्पर्धा में विजयी रहेंगे। व्यापारियों को ठोस लाभ होगा।

कान और श्वसन तंत्र के रोगों से सावधान रहें। कष्ट से छुटकारे के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
(21/01/2038 - 28/11/2038)

आपकी सूर्य की महादशा 04/04/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 21/01/2038 को प्रारंभ होकर 28/11/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आप आयात-निर्यात का काम कर सकते हैं। विदेश की यात्रा हो सकती है। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। व्यापार-उद्योग में विस्तार के लिए धन व्यय हो सकता है। मानसिक शांति, धन का लाभ संभावित हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लोकप्रियता और सम्मान अर्जित करेंगे।

मामा पक्ष के लोगों से लाभ और सुख प्राप्त होंगे। व्यापार के साझेदार को कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा, उनका स्वास्थ्य उत्तम होगा और शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति प्राप्त होगी, वे मकान बना सकते हैं या निवास में परिवर्तन कर सकते हैं। माता के लिए समृद्ध समय का संकेत है। उन्हें आप से सुख मिलेगा। भाई-बहनों को धन मिलेगा, व्यस्तता बढ़ेगी, कार्यस्थल में परिवर्तन हो सकता है।

सेवारत जातक किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को विनिमय से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना आवश्यक है। स्नायुतंत्र, आंख और पैरों की समस्याओं से सावधान रहें। बुध मंत्र का जाप और हरी वस्तुओं का दान लाभकारी रहेगा।

ऊँ बुं बुधाय नमः

अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
(28/11/2038 - 04/04/2039)

आपके लिए सूर्य की महादशा 04/04/2034 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/11/2038 को आरंभ होकर 04/04/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी और भाग्यशाली होंगे। विवादों में फंसने से मन उत्तेजित हो सकता है मगर अंत में विरोधी परास्त होंगे। धन और सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। संन्यास और अध्यात्म की ओर झुकाव हो सकता है। विदेशियों से प्रेम और धन की प्राप्ति हो सकती है। उच्चाधिकारियों से विवाद हो सकता है। कोई आदमी धोखा दे सकता है।

आपके जीवनसाथी को मिश्रित परिणाम मिलेंगे; वे दान धर्म में भाग लेंगे और सब सुखों से युक्त होंगे। पिता की आय बढ़ेगी मगर खर्चे भी अधिक होंगे। माता के निवास में परिवर्तन हो सकता है। उनकी यात्राएं होंगी और अध्यात्म में रुचि रहेगी। भाई-बहनों का भाग्य मिश्रित रहेगा।

आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी। उन्हें सफलता, उच्चाधिकारियों से सहयोग, भूमि प्राप्ति का योग है। अगर वे नौकरी कर रहे हैं तो यात्राएं होंगी। विद्यार्थियों को तकनीकी विषयों में सफलता मिलेगी।

हाथ, पांव; कान, गले के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की आराधना करें; उड़द की दाल, कंबल सतनजा, तेल दान करें।

अंर्तदशा :- सूर्य - शुक्र
(04/04/2039 - 04/04/2040)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आप लोकप्रिय और सफल होंगे। धनार्जन उत्तम होगा। व्यापार में लाभ और प्रगति का संकेत है। माता से बहुत लाभ होगा। तीर्थयात्रा कर सकते हैं। आपको अचल संपत्ति, वाहन और मूल्यवान वस्तुएं प्राप्त होंगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी को भूमि, जायदाद, वाहन, आभूषण आदि प्राप्त होंगे। आपके पिता का प्रभाव बढ़ेगा, उत्तम भोजन-वस्त्र नसीब होंगे। माता को घरेलू सुख और साझेदार से लाभ होगा। भाई-बहनों के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी, कार्य में परिवर्तन हो सकते हैं। आपकी संतान का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धा में सफलता मिलेगी, विरोधियों पर विजय होगी, मामाओं से लाभ मिलेगा, उन्हें नौकरी मिल सकती है या बेहतर नौकरी में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को सफलता और लाभ प्राप्त होंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे; प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

महादशा :– चन्द्र
(04/04/2040 - 04/04/2050)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 04/04/2040 को आरम्भ और 04/04/2050 को समाप्त होगी।

चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है और अष्टम भाव लम्बी आयु या आयु-विस्तार, विरासत, इच्छाओं, बीमा, पेंशन, डूबने से मृत्यु, दुर्भाग्य, दुःख, अपमान, विषाद, असंतोष बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आश्चर्य और उथल-पुथल की घटनाओं से भरी होगी और आपके जीवन में अनेक आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी।

स्वास्थ्य :

अष्टम महादशा का स्वामी चन्द्र अष्टम भाव में अवस्थित है। अष्टम भाव लंबी आयु का प्रतिनिधित्व करता है। फलस्वरूप आपकी आयु लम्बी होगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। वैसे किसी बड़ी स्वास्थ्य समस्या अथवा दुर्घटना की संभावना नहीं है किन्तु इस अवधि में आपकी कुछ झड़पें हो सकती हैं।

अर्थ तथा संपत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा उत्तम है और आपको भूमि, वाहन, शक्ति या पूर्व में अर्जित शिक्षा के कारण पद की प्राप्ति हो सकती है। कुछ नुकसान भी हो सकता है। फिर भी आपको कुछ पैतृक सम्पत्तियों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

एक व्यवसायी के रूप में आप संतुष्ट रहेंगे। यदि सेवारत हों तो आपकी पदोन्नति हो सकती है, यद्यपि आप कुछ मानसिक कष्ट और मनोवैज्ञानिक कुण्ठाओं के शिकार हो सकते हैं। आपका हृदय विशाल होगा और यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो कुछ उतार-चढ़ाव की संभावनाएं हैं जिनके फलस्वरूप आप का भाग्य उत्तम होगा और आप उन्नति करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहायक व सहयोगी होंगे और पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे और सम्भव है कि आपके माता-पिता आपके जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं जिससे आपका जीवन सुखमय व सौहार्द्रपूर्ण हो।

अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
(04/04/2040 - 02/02/2041)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 04/04/2040 को प्रारंभ होकर 04/04/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 04/04/2040 को प्रारंभ होकर 02/02/2041 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव को अशुभ समझा जाता है। अष्टम में चंद्र की स्थिति बहुत अशुभ मानी जाती है, परंतु चंद्र के बल के कम-अधिक होने का भी प्रभाव होता है।

आपको इस अवधि में समाज में सफलता मिलेगी। विवाह द्वारा आर्थिक स्थिति में सुधार संभव है। जल से संबंधित व्याधिओं से सावधान रहें। नदी, तालाब आदि के निकट सावधान रहें ओर डूबने से बचें। गंभीर बीमारियों से बचाव भी आवश्यक है। अगर कोई रोग होता है तो प्रारंभिक अवस्था में ही उसका निदान करा लें।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के यंत्र को धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
(02/02/2041 - 03/09/2041)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 04/04/2040 को प्रारंभ होकर 04/04/2050 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 02/02/2041 को प्रारंभ होकर 03/09/2041 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। इसे लाभ भाव भी कहते हैं। मंगल ऊर्जा और अचल संपत्ति का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 2,5,6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा के दौरान आपके भाषणों में ओज रहेगा, मगर आप क्रोधी हो सकते हैं। आप धनवान बनेंगे और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। आप साहसी होंगे और उच्चवर्ग में धाक होगी। धन प्राप्ति की आपकी लिप्सा संतृप्त नहीं होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र का जाप 108 बार करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - राहु
(03/09/2041 - 05/03/2043)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 04/04/2040 को प्रारंभ हुई और 04/04/2050 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18

मास रहेगी। आपके लिए यह 03/09/2041 को प्रारंभ होकर 05/03/2043 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है जो अस्तित्वहीन है मगर ग्रहों के समान प्रभावशाली है। इसका शुभत्व इसके निवास और युत ग्रह के अनुसार होता है।

इस अवधि में आप कंजूस और कटुभाषी हो सकते हैं। पिता के प्रति अपने कर्तव्यों को त्याग सकते हैं। ईश्वर और धर्म में आस्था खत्म हो सकती है। प्रत्येक कदम पर सावधानी आवश्यक है। धन खूब कमाएंगे और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - गुरु
(05/03/2043 - 04/07/2044)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 04/04/2040 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 05/03/2043 को प्रारंभ होकर 04/07/2044 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। बृहस्पति शुभग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 10, 12 और 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप सुस्त, भाग्यहीन और भीरु हो सकते हैं। स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा मगर आप उत्साहहीन हो सकते हैं; शत्रुओं से भयभीत रहेंगे। प्रत्येक कदम बढ़ाने में सावधानी आवश्यक है क्योंकि लोगों के आपके प्रति विश्वास में कमी आ सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में गुरुवार के दिन प्रातःकाल दायें हाथ की तर्जनी में कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, बृहस्पति के मंत्र के जाप करने के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शनि
(04/07/2044 - 02/02/2046)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 04/04/2040 को प्रारंभ हुई और 04/04/2050 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 04/07/2044 को प्रारंभ होकर 02/02/2046 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। तृतीय भाव में स्थित में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर

दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप साहसी और धनी होंगे, मगर कुछ एकांतप्रिय हो सकते हैं। उच्चाधिकारी आपको सम्मानित करेंगे। स्थानीय संस्थाओं के अध्यक्ष आदि बन सकते हैं। बहुत से व्यक्तियों को संरक्षण प्रदान करेंगे। सफलता बाधाओं को पार करने के बाद मिलेगी। मन उदास रह सकता है, पर कुछ समय बाद सुधार आएगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा नीलम शनिवार के दिन पूजा के बाद दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में अंगूठी को कच्चे दूध या गंगाजल से धोने के बाद शनि का वैदिक मंत्र पढ़ते हुए धारण करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

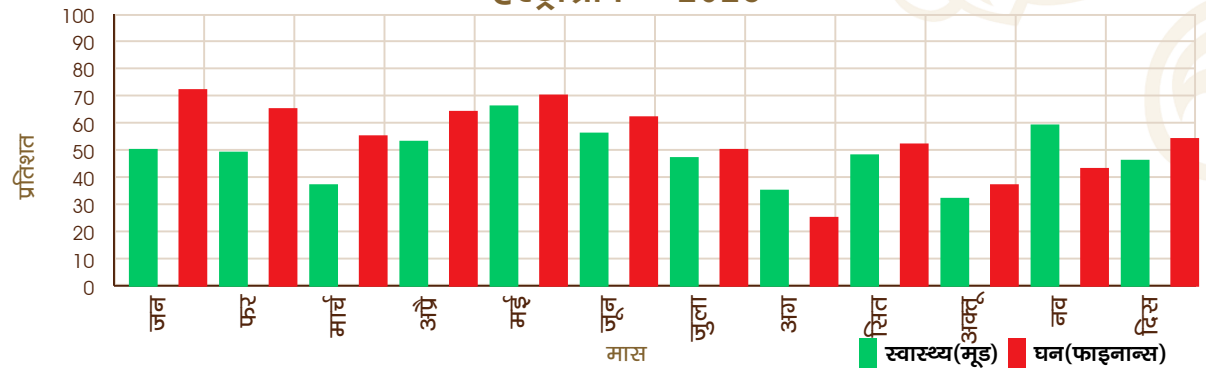

एस्ट्रोग्राफ - 2027

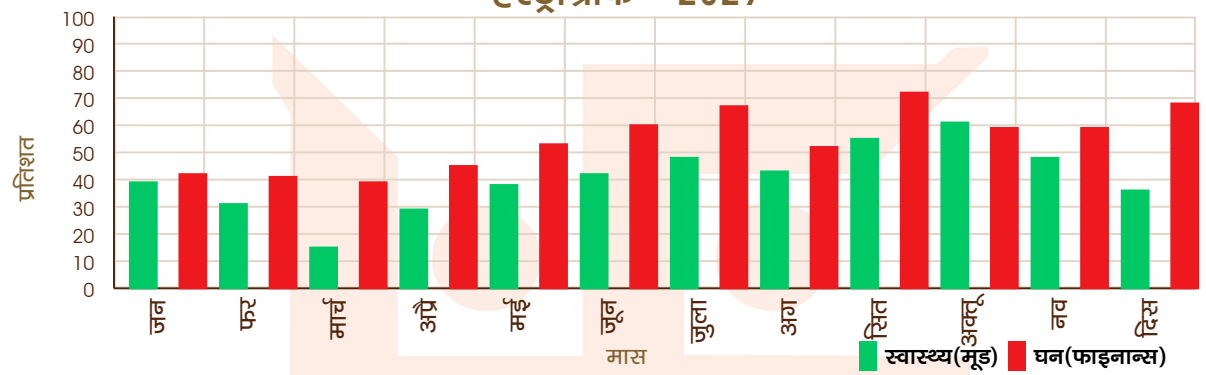

एस्ट्रोग्राफ - 2028

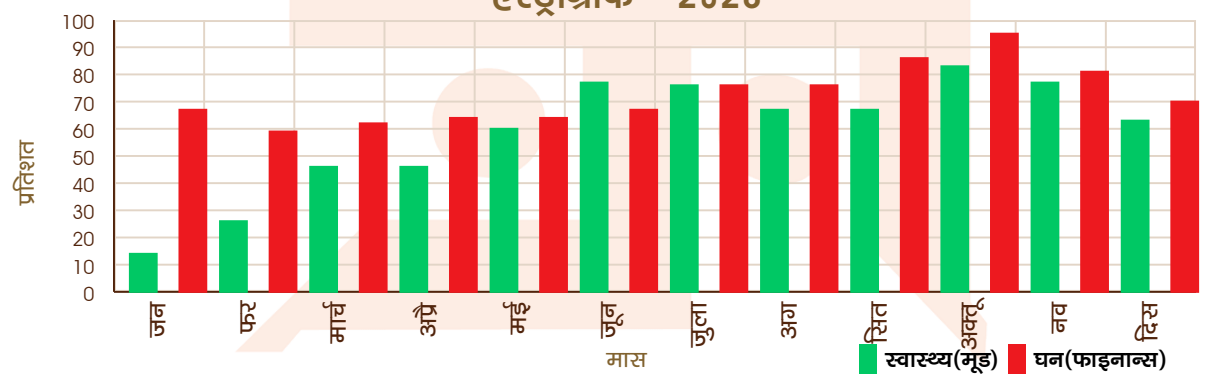

एस्ट्रोग्राफ - 2029

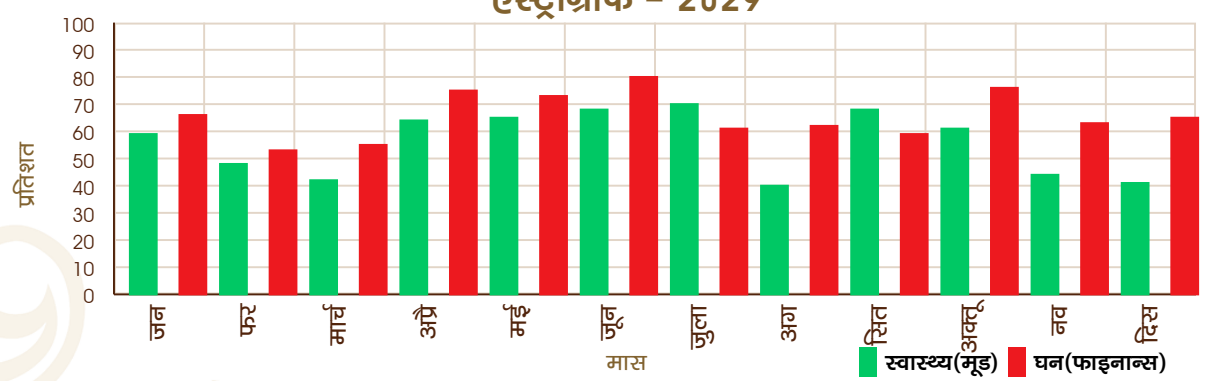

एस्ट्रोग्राफ - 2030

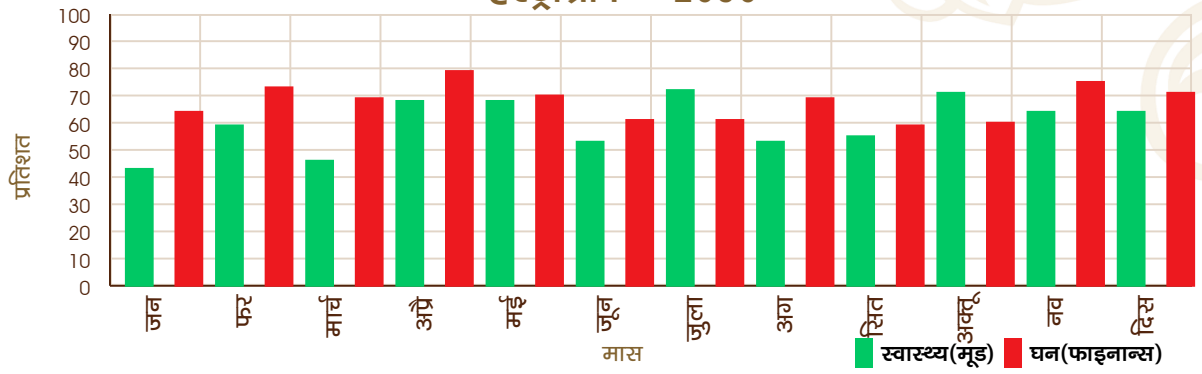

एस्ट्रोग्राफ - 2031

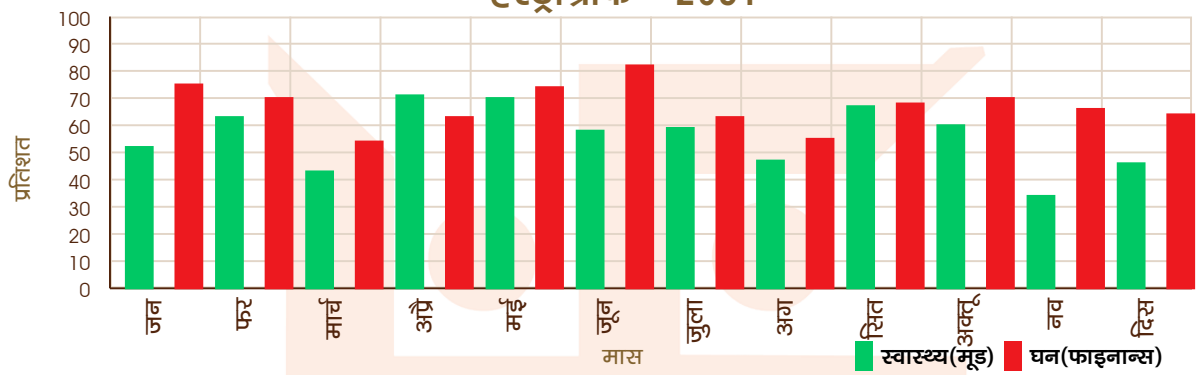

एस्ट्रोग्राफ - 2032

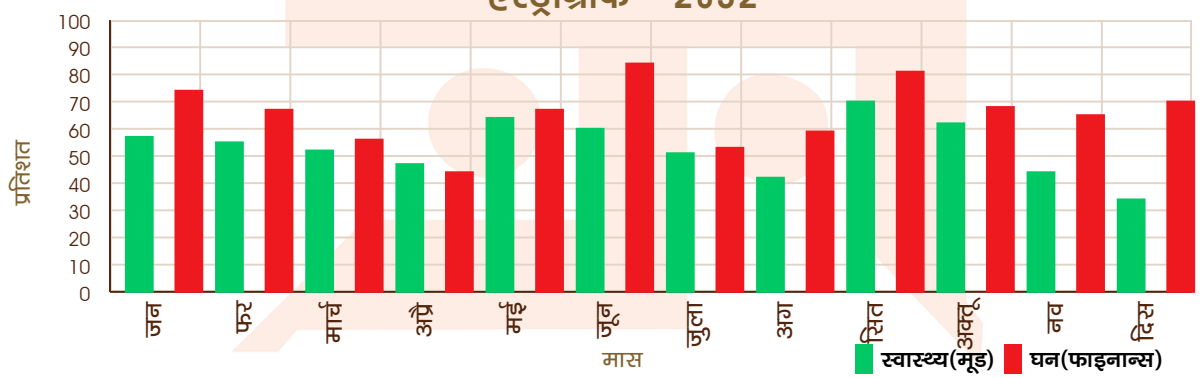

एस्ट्रोग्राफ - 2033

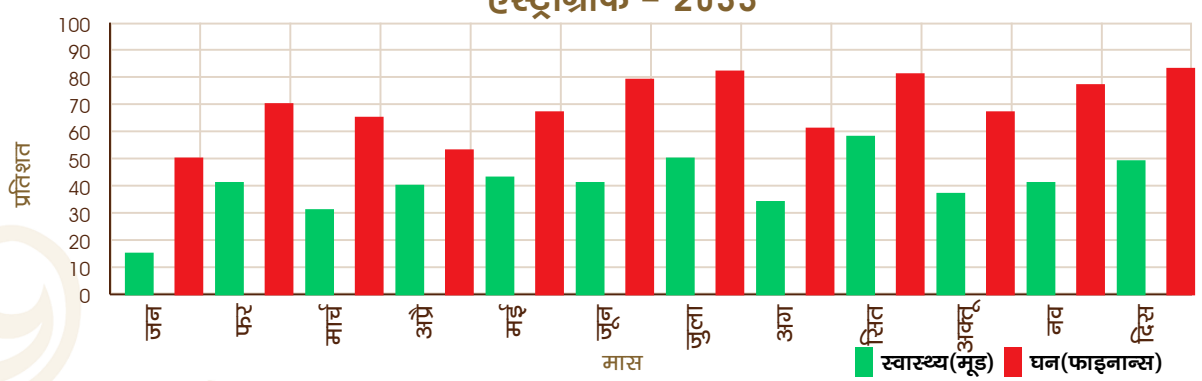

एस्ट्रोग्राफ - 2034

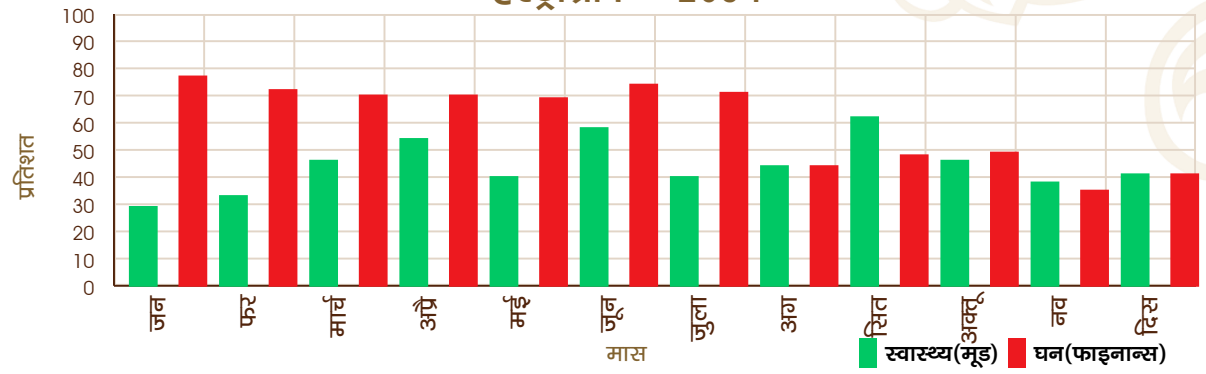

एस्ट्रोग्राफ - 2035

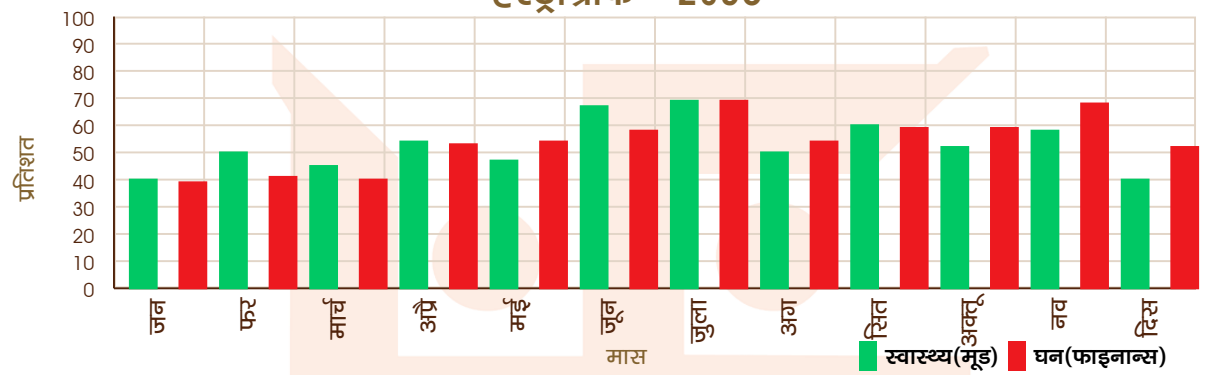

एस्ट्रोग्राफ - 2036

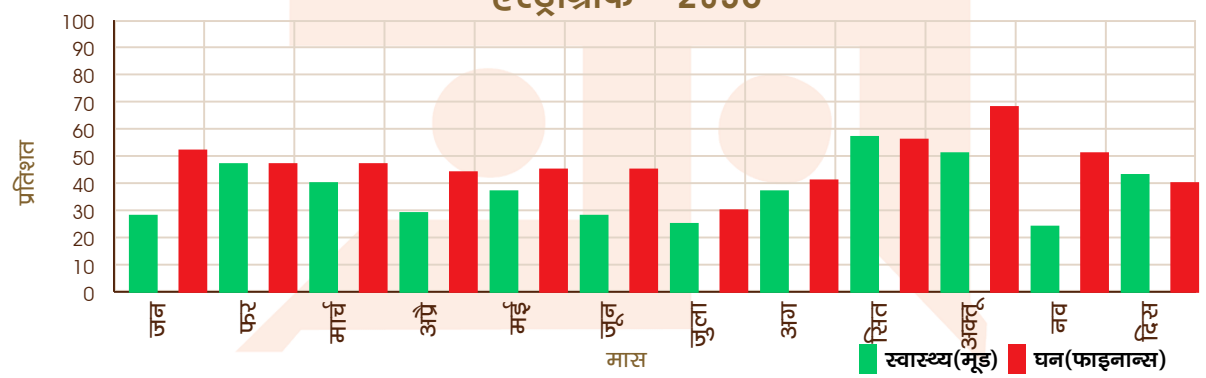

एस्ट्रोग्राफ - 2037

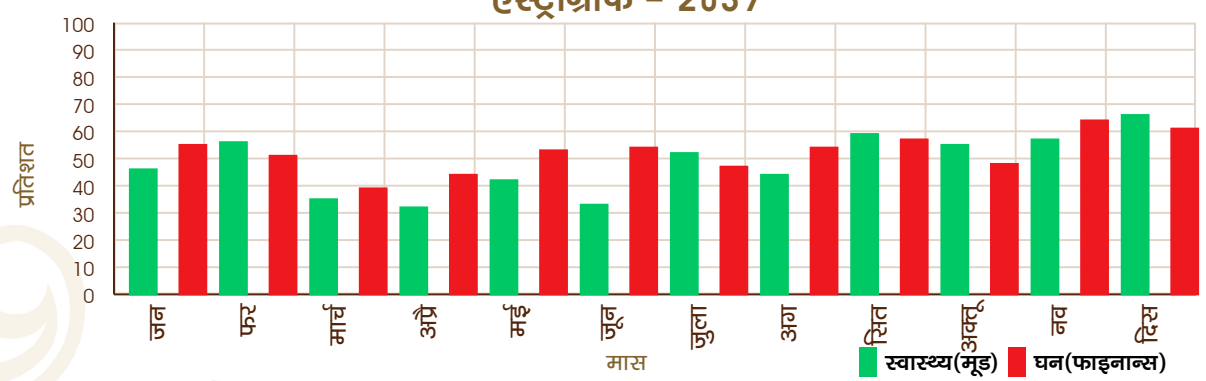

एस्ट्रोग्राफ - 2038

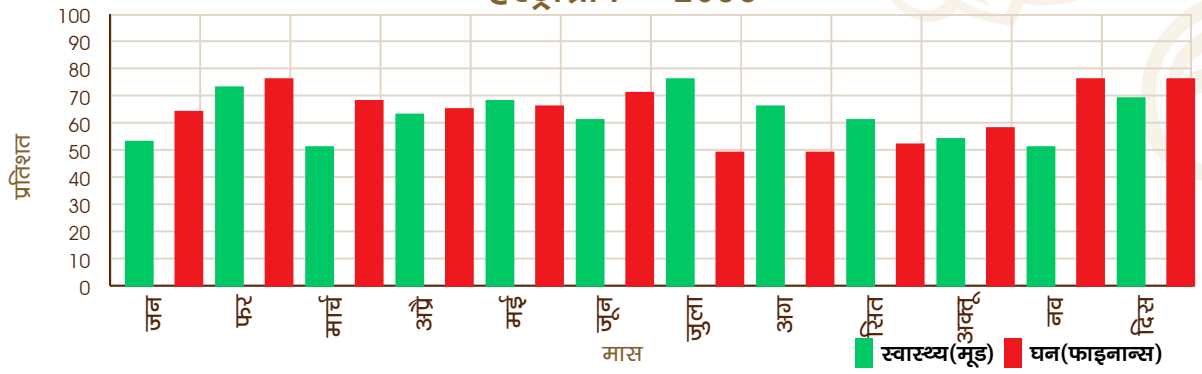

एस्ट्रोग्राफ - 2039

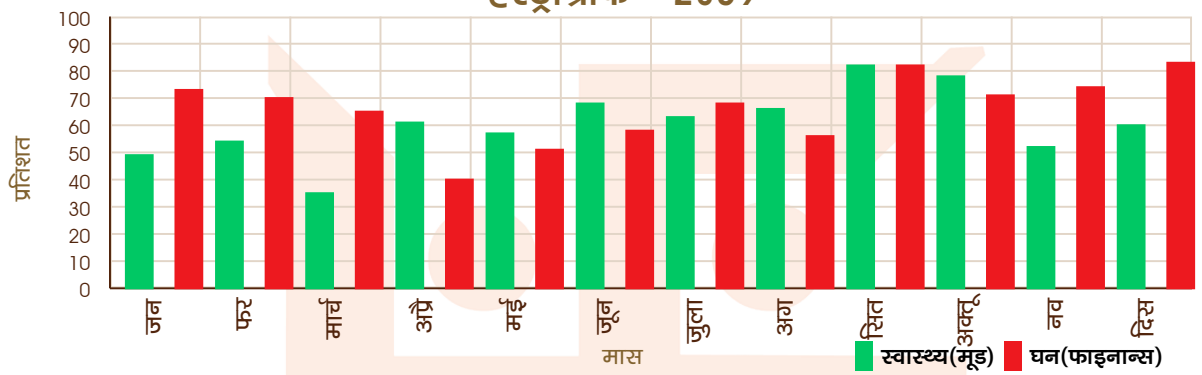

एस्ट्रोग्राफ - 2040

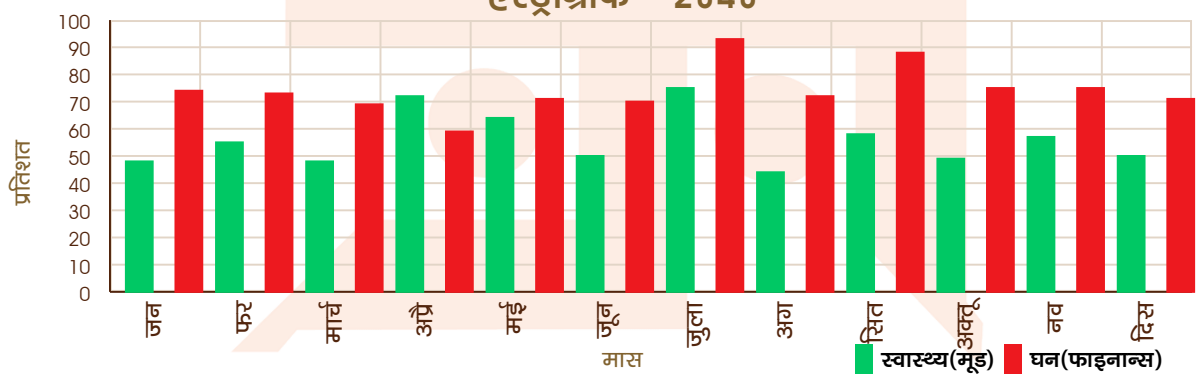

एस्ट्रोग्राफ - 2041

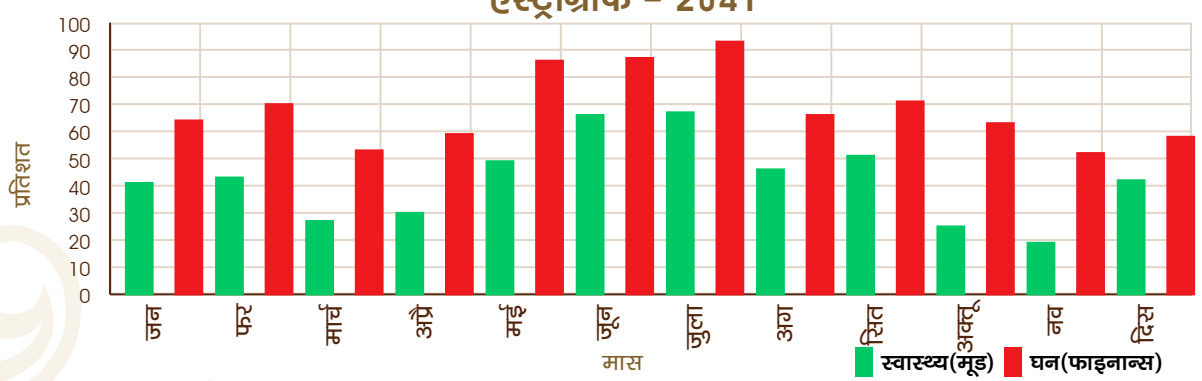

एस्ट्रोग्राफ - 2042

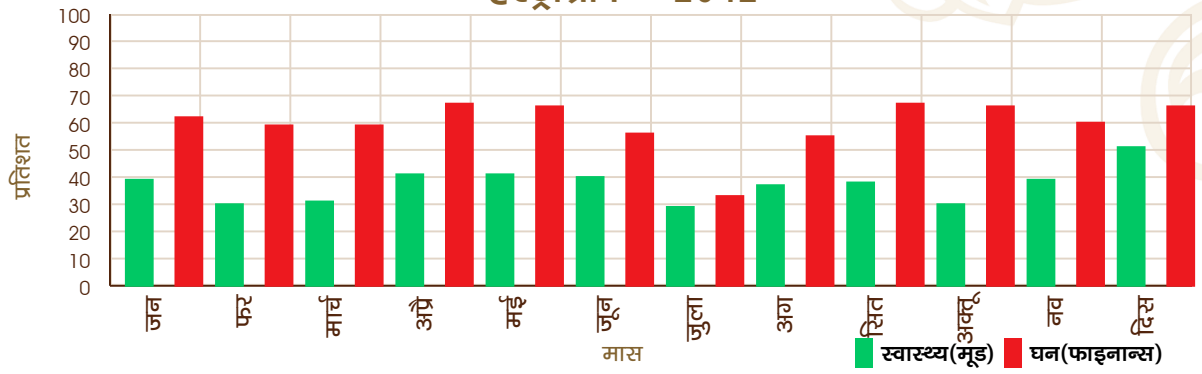

एस्ट्रोग्राफ - 2043

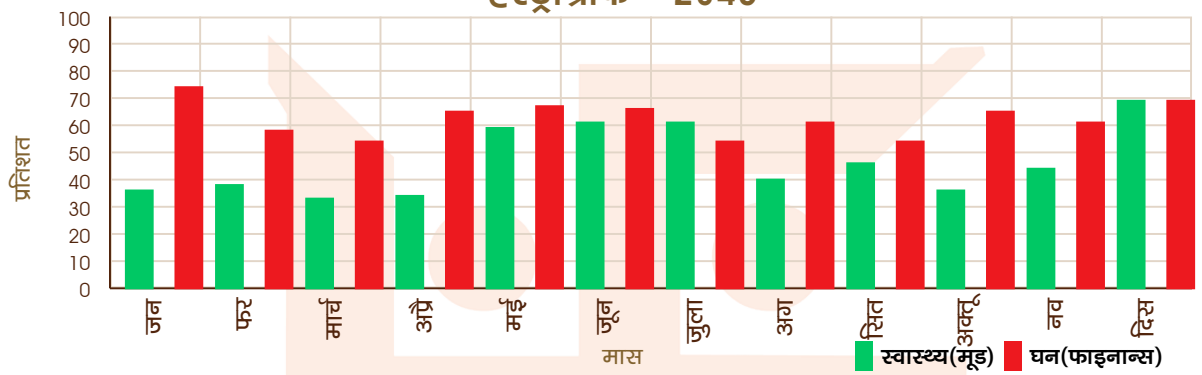

एस्ट्रोग्राफ - 2044

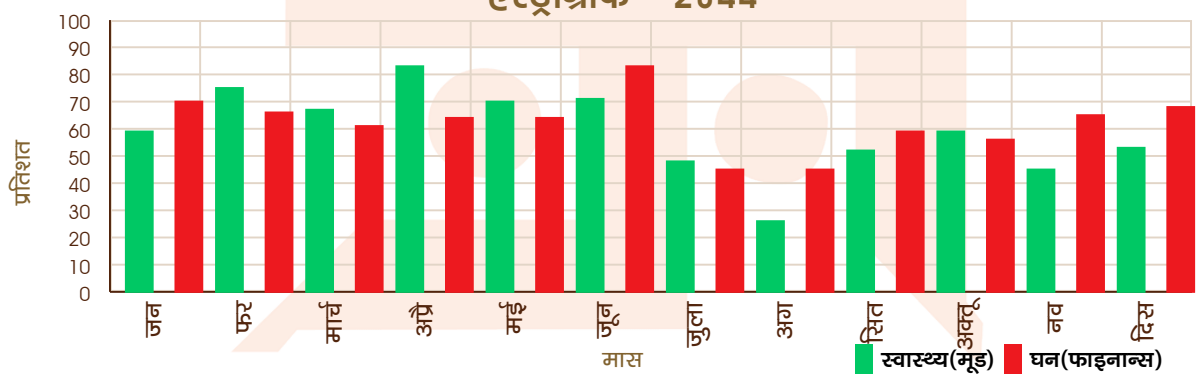

एस्ट्रोग्राफ - 2045

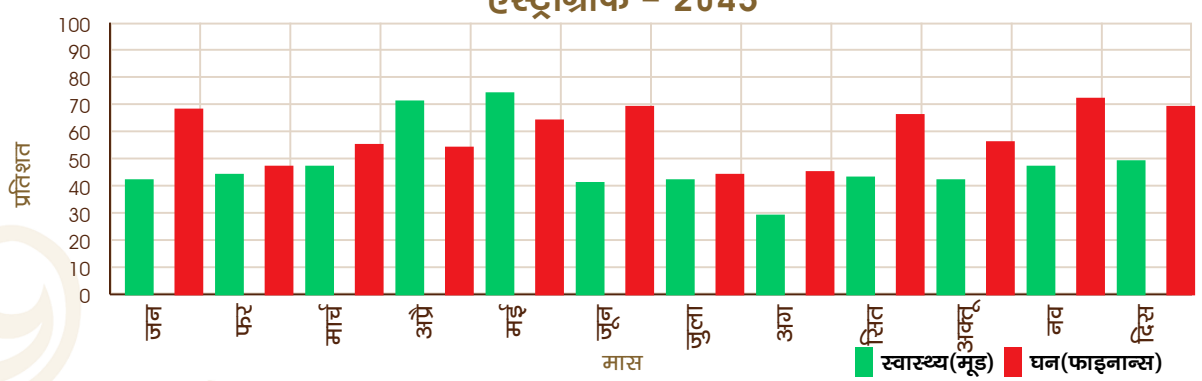

योग

मालव्य योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
अस्थूलोष्ठोऽप्यविषमवपुर्नैव रक्ताङ्गसन्धि-
र्मध्ये क्षामः शशिधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः।
सद्दीप्ताक्षः समितिविदितो जानुदेशाप्रपाणि-
र्मालव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ।।
वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं
तिर्यग्दशाङ्गुलमितं श्रवणान्तरालम्।
मालव्यसंज्ञनृपतिः ससुतो भुनक्ति
लाटांश्च मालवससिन्धुसुपारियात्रान्।।

।। मानसागरी ।। अ.4/श्लोक 2, 9 1-2।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि या उच्चहोकर शुक्र केन्द्र में हो तो मालव्य योग बनता है।

मालव्यनामक योग में समुत्पन्न जातक सर्वावयव सम्पन्न शरीरवाला, चन्द्रवत कान्तिवाला, युद्ध में मान रखने वाला, आजान बाहु (घुटनापर्यन्त बांह वाला) और दीर्घायु राजा होता है। मुख की लम्बाई 13 अङ्गुल एवं 10 अङ्गुल दोनों कानों के मध्य वाला होता है। लाट, मालवा, सिन्धु और परियात्र पर्वतीय देशों का प्रधान शासन अपने पुत्रों के साथ करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उच्चकोटि के कानून विशेषज्ञ, राजनेता, इलेक्ट्रोनिक्स विशेषज्ञ, संगीतज्ञ, अभिनेता, कलाकार, सिनेमा क्षेत्र में प्रसिद्ध, मीडिया में श्रेष्ठ, ज्योतिष के प्रति श्रद्धालु, एक्सपोर्ट अर्थात् निर्यात के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने वाले व्यक्ति होंगे।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।

।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाद्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

सरल योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वा क्रमाद्भावैः सरलयोगः।
दीर्घायुष्मान् दृढमतिरभयः श्रीमान्विद्यासुतधनसहितः।
सिद्धारम्भो जितरिपुरमलो विख्याताख्यः प्रभवति सरले।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 57, 65।।

यदि जन्मपत्रिका में अष्टमेश या अष्टम भाव अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो और अष्टम भाव का स्वामी 6ठे, 8वें, 12वें भाव में स्थित हों तो सरलयोग बनता है। अष्टमस्थ पाप ग्रह (शनि के अतिरिक्त) अच्छा फल नहीं देगा।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु, दृढ़ निश्चयी, निडर, धनवान, विद्या, पुत्र से युत अपने उद्योग में सफलता प्राप्त करने वाला, शत्रुजीत एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

अस्त्र योग

भावैः सौम्ययुतेक्षिततैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
शत्रून् बलिष्ठान् बलवन्निगृह्य क्रूरप्रवृत्या सहितोऽभिमानी।
व्रणाङ्किताङ्गश्च विवादकारी स्यादस्त्रयोगे दृढगात्रयुक्तः।।
।। फलदीपिका।। अ. 6 /श्लोक 44, 50।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ भाव का स्वामी अस्त न होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित हो तथा श्रेष्ठ (उत्तम) स्थान में बैठा हो और षष्ठ भाव शुभ ग्रह से युक्त या निरीक्षित हो तो अस्त्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपनी शक्ति से बलवान्, शत्रुओं को परास्त करने वाले, क्रूर प्रवृति वाले और अभिमानी होंगे। आप के शरीर के अवयव दृढ़ होंगे किन्तु शरीर में घाव के चिन्ह से युक्त और झगड़ालू प्रवृत्ति के होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्रप्राप्ति योग

दत्तात्मजः स्यादुदयास्तनाथसम्बन्धहीनो विबलः सुतेशः ।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश निर्बल हो और लग्नेश तथा सप्तमेश में से कोई संबंध स्थापित न हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दत्तक पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।

।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे क्षयभे क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में सौम्य ग्रह स्थित हो और द्वादश भाव का स्वामी भी सौम्य ग्रह हो तो मृत्यु काल में विशेष पीड़ा नहीं होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको मृत्युकाल में अधिक पीड़ा नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध　　योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु　　योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : केतु,शनि　　योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुस्त्री योग

लाभदारेश्वरौ युक्तौ परस्परनिरीक्षितौ ।
बलाढ्यौ वा त्रिकोणस्थौ बहुस्त्रीसहितो भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-31।।

यदि जन्मकुण्डली में लाभेश सप्तमेश से युक्त हों अथवा परस्पर देखते हों और बलिष्ठ हो या त्रिकोणस्थ हो तो बहुस्त्री योग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 172 में 1

आपकी कुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका संबन्ध कई से होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

विवाहोपरान्त भाग्योदय योग

भाग्यं विवाहत्परतो वदन्ति शुक्रेस्तगे चोपचयान्विते वा ।
कुटुम्बमेतादृशभावयुक्ते लग्नेश्वरे वा शुभदृष्टियोगे ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-62 ।।

जन्मपत्रिका में यदि शुक्र सप्तम में हो अथवा उपचय 3/6/11/10 स्थानों में हो अथवा द्वितीयस्थ हो अथवा लग्नेश इन भावों में से किसी भी स्थान में हो एवं शुभ ग्रह द्वारा निरीक्षित हो तो विवाहोपरांत भाग्योदय होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शुक्र,गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका भाग्योदय विवाहोपरांत होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

अतिकामी योग

पापव्योमचरान्वितौ तनुरिपुस्थानाधिपौ कामुकः।
।। जातकपारिजात ।। अ.-14/श्लो.-3।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठेश पाप ग्रह से युक्त हो तथा लग्नेश भी पापग्रह से युक्त हो

तो अति कामी योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 16 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अतिकामी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

देवतुल्य अति दीर्घायु योग

न च केन्द्रगताः पापा न त्रिकोणे न नैधने।
तस्यायुरमरप्रख्यं निश्चयेन च कीर्त्यते।।
।। सारावली ।। अ.10/श्लो.-97।।

यदि जन्मपत्रिका में केन्द्र त्रिकोण या अष्टम भाव में पाप ग्रह न हों तो जातक की देवतुल्य आयु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप दीर्घायु होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,बुध,शनि,राहु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''
।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शुक्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।